कलिमों से शुरू न फ़रमाते हों, यानी हर दुआ के शुरू में आप ﷺ ये कलिमे फ़रमाते 'सुब्-हा-न रब्बियल अलीयल आललवह्हाब' 'मेरा रब सब ऐबों से पाक है, सबसे बुलन्द, सबसे ज़्यादा देने वाला है।' (मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾269﴿ عَنْ بُرَيْدَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ سَمِعَ رَجُلًا يَقُوْلُ: اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ أَنِّيْ أَشْهَدُ أَنَّكَ أَنْتَ اللهُ لَآ إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ الْأَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِيْ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ فَقَالَ: لَقَدْ سَأَلْتَ اللهَ بِالْإِسْمِ الَّذِيْ إِذَا سُئِلَ بِهِ أَعْطٰى وَإِذَا دُعِيَ بِهِ أَجَابَ۔ رواه ابوداؤد، باب الدعاء، رقم: ١٤٩٣

269. हज़रत बुरैदा رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने एक शख़्स को यह दुआ करते सुना तो रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुमने अल्लाह तआला से इस नाम के ज़रिए से सवाल किया है जिसके वास्ते से कुछ भी मांगा जाता है वह अता फ़रमाते हैं और जो दुआ भी की जाती है वह उसे क़ुबूल फ़रमाते हैं।

तर्जुमा : या अल्लाह! मैं आप से इस बात का वास्ता देकर सवाल करता हूं कि मैं गवाही देता हूं कि बेशक आप ही अल्लाह हैं, आपके सिवा कोई माबूद नहीं है,आप अकेले हैं, बेनियाज़ हैं, सब आप की ज़ात के मुहताज हैं जिस ज़ात से न कोई पैदा हुआ और न वह किसी से पैदा हुआ और न ही कोई उनके बराबर का है। (अबूदाऊद)

﴾270﴿ عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ يَزِيْدَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: اِسْمُ اللهِ الْأَعْظَمُ فِيْ هَاتَيْنِ الْآيَتَيْنِ ﴿وَإِلٰهُكُمْ إِلٰهٌ وَّاحِدٌ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ﴾ [البقرة: ١٦٣] وَفَاتِحَةُ آلِ عِمْرَانَ ﴿الٓمٓ اللهُ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ﴾ [آل عمران: ١-٢] رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب في ايجاب الدعاء بتقديم الحمد والثناء، رقم: ٣٤٧٨

270. हज़रत अस्मा बिन्त यज़ीद रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इस्मे आज़म इन दो आयतों में है : सूरः बक़रः की आयत और सूरः आले इमरान की पहली आयत। (तिर्मिज़ी)

﴾271﴿ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِيْ حَلْقَةٍ وَرَجُلٌ قَائِمٌ يُصَلِّيْ فَلَمَّا رَكَعَ وَسَجَدَ تَشَهَّدَ وَدَعَا فَقَالَ فِيْ دُعَائِهِ: اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ بِأَنَّ لَكَ الْحَمْدَ لَآ إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ، يَاذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ، يَاحَيُّ يَا قَيُّوْمُ

فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: لَقَدْ دَعَا بِاسْمِ اللهِ الْأَعْظَمِ الَّذِيْ إِذَا دُعِيَ بِهِ أَجَابَ وَإِذَا سُئِلَ بِهِ أَعْطَى.

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح على شرط مسلم ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ١/٥٠٣

271. हज़रत अनस बिन मालिक ؓ रिवायत करते हैं कि हम लोग नबी करीम ﷺ के साथ एक हल्क़ा में बैठे हुए थे और एक साहब नमाज़ पढ़ रहे थे। जब वह रुकूअ्-सज्दा और तशह्हुद से फ़ारिग़ हुए तो उन्होंने दुआ में यूं कहा : तर्जुमा : "ऐ अल्लाह! मैं आप से आपकी तमाम तारीफ़ों के वास्ते से सवाल करता हूं, आपके सिवा कोई माबूद नहीं है, आप ज़मीन व आसमान को नमूने के बग़ैर बनाने वाले हैं, ऐ अज़्मत व जलाल और इनाम व एहसान के मालिक, ऐ हमेशा ज़िन्दा रहने वाले और सबको क़ायम रखने वाले।' नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उसने अल्लाह तआला के ऐसे इस्मे आज़म के साथ दुआ की है कि जिसके वास्ते से जब भी दुआ की जाती है अल्लाह तआला क़ुबूल फ़रमाते हैं और जब भी सवाल किया जाता है अल्लाह तआला उसको पूरा फ़रमाते हैं। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿272﴾ عَنْ سَعْدِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَى اِسْمِ اللهِ الْأَعْظَمِ الَّذِيْ إِذَا دُعِيَ بِهِ أَجَابَ وَإِذَا سُئِلَ بِهِ أَعْطَى، الدَّعْوَةُ الَّتِيْ دَعَا بِهَا يُوْنُسُ حَيْثُ نَادَاهُ فِي الظُّلُمَاتِ الثَّلَاثِ، لَآ إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ، فَقَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! هَلْ كَانَتْ لِيُوْنُسَ خَاصَّةً أَمْ لِلْمُؤْمِنِيْنَ عَامَّةً؟ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَلَا تَسْمَعُ قَوْلَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ "وَنَجَّيْنَاهُ مِنَ الْغَمِّ وَكَذٰلِكَ نُنْجِي الْمُؤْمِنِيْنَ" وَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَيُّمَا مُسْلِمٍ دَعَا بِهَا فِيْ مَرَضِهِ أَرْبَعِيْنَ مَرَّةً فَمَاتَ فِيْ مَرَضِهِ ذٰلِكَ، أُعْطِيَ أَجْرَ شَهِيْدٍ وَإِنْ بَرَأَ بَرَأَ وَقَدْ غُفِرَ لَهُ جَمِيْعُ ذُنُوْبِهِ. رواه الحاكم ووافقه الذهبي ١/٥٠٦

272. हज़रत सअ्द बिन मालिक ؓ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : क्या मैं तुमको अल्लाह तआला का इस्मे आज़म न बता दूं कि जिसके ज़रिए से दुआ की जाए तो क़ुबूल फ़रमाते हैं और सवाल किया जाए तो पूरा फ़रमाते हैं ? यह वह दुआ है जिसके ज़रिए हज़रत यूनुस ؑ ने अल्लाह तआला को तीन अंधेरियों में पुकारा था, "आपके सिवा कोई माबूद नहीं, आप तमाम ऐबों से पाक हैं बेशक मैं ही क़ुसूरवार हूं" (तीन अंधेरियों से मुराद रात, समुंदर और मछली के पेट के अंधेरे हैं)। एक आदमी ने रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा : या रसूलुल्लाह! क्या यह दुआ हज़रत यूनुस ؑ के साथ ख़ास है या तमाम ईमान वालों के लिए

आम है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुमने अल्लाह तआला का मुबारक इर्शाद नहीं सुना कि हमने यूनुस عليه السلام को मुसीबतों से नजात दी और हम उसी तरह ईमान वालों को नजात दिया करते हैं। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो मुसलमान इस दुआ को अपनी बीमारी में चालीस मर्तबा पढ़े, अगर वह उस मर्ज़ में फ़ौत हो जाए तो उसको शहीद का सवाब दिया जाएगा और अगर उस बीमारी से उसे शिफ़ा मिल गई, तो उस शिफ़ा के साथ उसके तमाम गुनाह माफ़ किए जा चुके होंगे। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿273﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: خَمْسُ دَعَوَاتٍ يُسْتَجَابُ لَهُنَّ: دَعْوَةُ الْمَظْلُومِ حَتّٰى يَنْتَصِرَ، وَدَعْوَةُ الْحَاجِّ حَتّٰى يَصْدُرَ، وَ دَعْوَةُ الْمُجَاهِدِ حَتّٰى يَقْفُلَ، وَدَعْوَةُ الْمَرِيْضِ حَتّٰى يَبْرَءَ، وَدَعْوَةُ الْأَخِ لِأَخِيْهِ بِظَهْرِ الْغَيْبِ. ثُمَّ قَالَ: وَأَسْرَعُ هٰذِهِ الدَّعَوَاتِ إِجَابَةً دَعْوَةُ الْأَخِ لِأَخِيْهِ بِظَهْرِ الْغَيْبِ.

رواه البيهقي في الدعوات الكبير، مشكاة المصابيح رقم: ٢٢٦٠

273. हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : पांच क़िस्म की दुआएं ख़ास तौर पर क़ुबूल की जाती हैं। मज़्लूम की दुआ जब तक वह बदला न ले ले, हज करने वाले की दुआ जब तक वह लौट न आए, मुजाहिद की दुआ जब तक वह वापस न आए, बीमार की दुआ, जब तक वह सेहतयाब न हो और एक भाई की दूसरे भाई के लिए पीठ पीछे दुआ। फिर नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : और उन दुआओं में सबसे जल्दी क़ुबूल होने वाली वह दुआ है, जो अपने किसी भाई के लिए उसकी पीठ पीछे की जाए। (बैहक़ी)

﴿274﴾ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ثَلَاثُ دَعَوَاتٍ مُسْتَجَابَاتٌ لَا شَكَّ فِيْهِنَّ: دَعْوَةُ الْوَالِدِ، وَدَعْوَةُ الْمُسَافِرِ، وَدَعْوَةُ الْمَظْلُوْمِ.

رواه أبو داؤد، باب الدعاء بظهر الغيب، رقم: ١٥٣٦

274. हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तीन दुआएं ख़ास तौर पर क़ुबूल की जाती हैं, जिनके क़ुबूल होने में कोई शक नहीं। (औलाद के हक़ में) बाप की दुआ, मुसाफ़िर की दुआ और मज़्लूम की दुआ। (अबूदाऊद)

﴿275﴾ عَنْ أَبِيْ أُمَامَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: لَأَنْ أَقْعُدَ أَذْكُرُ اللّٰهَ، وَأُكَبِّرُهُ وَأَحْمَدُهُ، وَأُسَبِّحُهُ، وَأُهَلِّلُهُ حَتّٰى تَطْلُعَ الشَّمْسُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ أُعْتِقَ رَقَبَتَيْنِ

أَوْ أَكْثَرَ مِنْ وُلْدِ إِسْمَاعِيْلَ، وَمِنْ بَعْدِ الْعَصْرِ حَتّٰى تَغْرُبَ الشَّمْسُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ أُعْتِقَ أَرْبَعَ رِقَابٍ مِنْ وُلْدِ إِسْمَاعِيْلَ. رواه احمد ٥/٢٥٥

275. हज़रत अबू उमामा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं फ़ज्र की नमाज़ से सूरज के निकलने तक अल्लाह तआला के ज़िक्र, उसकी बड़ाई, उसकी तारीफ़, उसकी पाकी ब्यान करने और ला इला-ह इल्लल्लाह कहने में मशग़ूल रहूं, यह मुझे हज़रत इस्माईल ﷺ की औलाद में से दो या उससे ज़्यादा ग़ुलाम आज़ाद करने से ज़्यादा पसन्दीदा है। इसी तरह अस्र की नमाज़ के बाद से सूरज ग़ुरूब होने तक उन आमाल में मशग़ूल रहूं, यह मुझे हज़रत इस्माईल की औलाद में से चार ग़ुलाम आज़ाद करने से ज़्यादा पसन्दीदा है। (मुस्नद अहमद)

﴿276﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ بَاتَ طَاهِرًا، بَاتَ فِيْ شِعَارِهِ مَلَكٌ، فَلَمْ يَسْتَيْقِظْ إِلَّا قَالَ الْمَلَكُ: اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِعَبْدِكَ فُلَانٍ، فَإِنَّهُ بَاتَ طَاهِرًا. رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده حسن ٣/٣٢٨

276. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स बावुज़ू रात को सोता है तो फ़रिश्ता उसके जिस्म के साथ लगकर रात गुज़ारता है। जब भी वह नींद से बेदार होता है, फ़रिश्ता उसे दुआ देता है। या अल्लाह! अपने इस बन्दे की मग्फ़िरत फ़रमा दीजिए, इसलिए कि यह बावुज़ू सोया है। (इब्ने हब्बान)

﴿277﴾ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَا مِنْ مُسْلِمٍ يَبِيْتُ عَلٰى ذِكْرٍ طَاهِرًا فَيَتَعَارُّ مِنَ اللَّيْلِ فَيَسْأَلُ اللّٰهَ خَيْرًا مِنَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ إِلَّا أَعْطَاهُ إِيَّاهُ.

رواه ابوداؤد، باب في النوم على طهارة، رقم: ٥٠٤٢

277. हज़रत मुआज़ बिन जबल ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो मुसलमान भी रात बावुज़ू ज़िक्र करते हुए सोता है, फिर जब किसी वक़्त रात में उसकी आंख खुलती है और वह अल्लाह तआला से दुनिया व आख़िरत की किसी भी ख़ैर का सवाल करता है अल्लाह तआला उसे वह चीज़ ज़रूर अता फ़रमाते हैं। (अबूदाऊद)

﴿278﴾ عَنْ عَمْرِو بْنِ عَبَسَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ لِيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: إِنَّ أَقْرَبَ مَا يَكُوْنُ الرَّبُّ مِنَ الْعَبْدِ جَوْفُ اللَّيْلِ الْآخِرُ فَإِنِ اسْتَطَعْتَ أَنْ تَكُوْنَ مِمَّنْ يَذْكُرُ اللّٰهَ فِيْ تِلْكَ

السَّاعَةِ فَكُنْ. رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح على شرط مسلم ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ١/٣٠٩

278. हज़रत अम्र बिन अ़बसा ﷺ फ़रमाते हैं कि मुझसे रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला रात के आख़िरी हिस्से में बन्दे से बहुत ज़्यादा क़रीब होते हैं, अगर तुम से हो सके तो उस वक़्त अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र किया करो। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿279﴾ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ نَامَ عَنْ حِزْبِهِ، أَوْ عَنْ شَيْءٍ مِنْهُ، فَقَرَأَهُ فِيْمَا بَيْنَ صَلَاةِ الْفَجْرِ وَصَلَاةِ الظُّهْرِ، كُتِبَ لَهُ كَأَنَّمَا قَرَأَهُ مِنَ اللَّيْلِ. رواه مسلم، باب جامع صلوة الليل .... رقم: ١٧٤٥

279. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स रात को सोता रह जाए और अपने मामूल या उसका कुछ हिस्सा पूरा न कर सके, फिर उसे (अगले दिन) फ़ज्र और ज़ुह्र के दर्मियान पूरा कर ले, तो उसके आमालनामे में वह अ़मल रात ही का लिखा जाएगा। (मुस्लिम)

﴿280﴾ عَنْ أَبِيْ أَيُّوْبَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ قَالَ إِذَا أَصْبَحَ: لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ، وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ عَشْرَ مَرَّاتٍ كُتِبَ لَهُ بِهِنَّ عَشْرُ حَسَنَاتٍ، وَمُحِيَ بِهِنَّ عَنْهُ عَشْرُ سَيِّئَاتٍ، وَرُفِعَ لَهُ بِهِنَّ عَشْرُ دَرَجَاتٍ، وَكُنَّ لَهُ عَدْلَ عِتَاقَةِ أَرْبَعِ رِقَابٍ، وَكُنَّ لَهُ حَرَسًا مِنَ الشَّيْطَانِ حَتَّى يُمْسِيَ، وَمَنْ قَالَهُنَّ إِذَا صَلَّى الْمَغْرِبَ دُبُرَ صَلَاتِهِ فَمِثْلُ ذٰلِكَ حَتَّى يُصْبِحَ.

رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده حسن ٥/٣٦٩

280. हज़रत अबू ऐय्यूब ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स सुबह दस मर्तबा 'ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर०' पढ़े, तो उसके लिए दस नेकियां लिख दी जाएंगी, उसकी दस बुराइयां मिटा दी जाएंगी, उसके लिए दस दर्जे बुलन्द कर दिए जाएंगे, उसको चार गुलाम आज़ाद करने के बराबर सवाब होगा, और शाम होने तक शैतान से उसकी हिफ़ाज़त होगी और जो शख़्स मग़रिब की नमाज़ के बाद ये कलिमे पढ़े, तो सुबह तक यही सब इनामात मिलेंगे। (इब्ने हिब्बान)

﴿281﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ قَالَ حِيْنَ يُصْبِحُ وَحِيْنَ يُمْسِىْ: سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهٖ، مِائَةَ مَرَّةٍ، لَمْ يَاْتِ اَحَدٌ، يَوْمَ الْقِيَامَةِ، بِاَفْضَلَ مِمَّا جَاءَ بِهٖ، اِلَّا اَحَدٌ قَالَ مِثْلَ مَا قَالَ اَوْ زَادَ عَلَيْهِ. رواه مسلم، باب فضل التهليل والتسبيح والدعاء، رقم: ٦٨٤٢ وعند ابى داؤد: سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ

باب ما يقول إذا أصبح، رقم: ٥٠٩١

281. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने सुबह और शाम 'सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही' सौ सौ-सौ मर्तबा पढ़ा तो कोई शख़्स क़ियामत के दिन उससे अफ़ज़ल अमल लेकर नहीं आएगा, सिवाए उस शख़्स के जो उसके बराबर या उससे ज़्यादा पढ़े। एक रिवायत में यह फ़ज़ीलत सुब्हानल्लाहिल अज़ीमि व बिहम्दिही के बारे में आई है। (मुस्लिम, अबूदाऊद)

﴿282﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ اَنَّهُ سَمِعَ النَّبِیَّ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ قَالَ اِذَا اَصْبَحَ مِائَةَ مَرَّةٍ، وَاِذَا اَمْسٰى مِائَةَ مَرَّةٍ: سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهٖ غُفِرَتْ ذُنُوْبُهٗ، وَاِنْ كَانَتْ اَكْثَرَ مِنْ زَبَدِ الْبَحْرِ.

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح على شرط مسلم ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ١/٥١٨

282. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि उन्होंने नबी करीम ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स सुबह शाम सौ-सौ मर्तबा सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही पढ़े, उसके गुनाह माफ़ हो जाएंगे, अगरचे समुंदर के झाग से भी ज़्यादा हों। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿283﴾ عَنْ رَجُلٍ مِنْ اَصْحَابِ النَّبِیِّ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ قَالَ اِذَا اَصْبَحَ وَاِذَا اَمْسٰى: رَضِيْنَا بِاللهِ رَبًّا وَبِالْاِسْلَامِ دِيْنًا وَبِمُحَمَّدٍ رَسُوْلًا، اِلَّا كَانَ حَقًّا عَلَى اللهِ اَنْ يُرْضِيَهٗ. رواه ابو داؤد، باب ما يقول إذا أصبح، رقم: ٥٠٧٢ وعند احمد: اَنَّهٗ يَقُوْلُ ذٰلِكَ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ حِيْنَ يُمْسِىْ وَحِيْنَ يُصْبِحُ ٤/٣٣٧

283. एक सहाबी ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स सुबह शाम 'रज़ीना बिल्लाहि रब्बौं व बिल इस्लामि दीनौं व बिमुहम्मदिन रसूला' पढ़े, अल्लाह तआला पर हक़ है कि वह उस शख़्स को (क़ियामत के दिन) राज़ी करें। तर्जुमा : हम अल्लाह तआला को रब और इस्लाम को दीन और मुहम्मद ﷺ को रसूल मानने पर राज़ी हैं।

दूसरी रिवायत में इस दुआ को सुबह शाम तीन मर्तबा पढ़ने का ज़िक्र है।

(अबूदाऊद, मुस्नद अहमद)

﴿284﴾ عَنْ اَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ صَلّٰى عَلَيَّ حِيْنَ يُصْبِحُ عَشْرًا، وَحِيْنَ يُمْسِيْ عَشْرًا اَدْرَكَتْهُ شَفَاعَتِيْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

رواه الطبراني باسنا دين واسناد احدهما جيد، ورجاله وثقوا، مجمع الزوائد ١٠/١٦٣

284. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स सुबह और शाम मुझ पर दस-दस मर्तबा दरूद शरीफ़ पढ़े, उसको क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त पहुंचेगी। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿285﴾ عَنِ الْحَسَنِ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: قَالَ سَمُرَةُ بْنُ جُنْدَبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: اَلاَ اُحَدِّثُكَ حَدِيْثًا سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ مِرَارًا وَمِنْ اَبِيْ بَكْرٍ مِرَارًا وَمِنْ عُمَرَ مِرَارًا، قُلْتُ: بَلٰى، قَالَ: مَنْ قَالَ اِذَا اَصْبَحَ وَاِذَا اَمْسٰى: اَللّٰهُمَّ اَنْتَ خَلَقْتَنِيْ، وَاَنْتَ تَهْدِيْنِيْ، وَاَنْتَ تُطْعِمُنِيْ، وَاَنْتَ تَسْقِيْنِيْ، وَاَنْتَ تُمِيْتُنِيْ، وَاَنْتَ تُحْيِيْنِيْ لَمْ يَسْاَلِ اللهَ شَيْئًا اِلَّا اَعْطَاهُ اِيَّاهُ قَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ سَلَامٍ: كَانَ مُوْسٰى عَلَيْهِ السَّلَامُ يَدْعُوْ بِهِنَّ فِيْ كُلِّ يَوْمٍ سَبْعَ مِرَارٍ، فَلاَ يَسْاَلُ اللهَ شَيْئًا اِلَّا اَعْطَاهُ اِيَّاهُ.

رواه الطبراني في الاوسط باسناد حسن، مجمع الزوائد ١٠/١٦٠

285. हज़रत हसन रह० फ़रमाते हैं कि हज़रत समुरा बिन जुन्दुब रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया, मैं तुम्हें एक ऐसी हदीस न सुनाऊं जो मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से कई मर्तबा सुनी और हज़रत अबू बक्र ﷺ और हज़रत उमर ﷺ से भी कई मर्तबा सुनी है। मैंने अ़र्ज़ किया : ज़रूर सुनाएं। हज़रत समुरा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया : जो शख़्स सुबह और शाम "ऐ अल्लाह आप ही ने मुझे पैदा किया और आप ही मुझे हिदायत देने वाले हैं, आप ही मुझे खिलाते हैं, आप ही मुझे पिलाते हैं, आप ही मुझे मारेंगे और आप ही मुझे जिन्दा करेंगे" पढ़े, तो जो अल्लाह तआ़ला से मांगेगा अल्लाह तआ़ला ज़रूर उसको अ़ता फ़रमाएंगे।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम ﷺ फ़रमाते हैं कि हज़रत मूसा ﷺ रोज़ाना सात मर्तबा इन कलिमों के साथ दुआ़ किया करते थे और जो भी चीज़ वह अल्लाह तआ़ला से मांगते थे अल्लाह तआ़ला उनको अ़ता फ़रमा देते थे।

(तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿286﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ غَنَّامٍ الْبَيَاضِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ قَالَ حِيْنَ يُصْبِحُ: اَللّٰهُمَّ! مَا اَصْبَحَ بِيْ مِنْ نِعْمَةٍ فَمِنْكَ وَحْدَكَ، لَا شَرِيْكَ لَكَ، فَلَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ، فَقَدْ اَدّٰى شُكْرَ يَوْمِهٖ، وَمَنْ قَالَ مِثْلَ ذٰلِكَ حِيْنَ يُمْسِيْ فَقَدْ اَدّٰى شُكْرَ لَيْلَتِهٖ.

رواه ابوداؤد، باب مايقول اذا اصبح، رقم: ٥٠٧٣ وفي رواية للنسائي بزيادة: أَوْ بِأَحَدٍ مِنْ خَلْقِكَ بدون ذكر المساء في عمل اليوم والليلة، رقم:٧

286. हज़रत अब्दुल्लाह बिन ग़न्नाम ब्याज़ी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स सुबह यह दुआ पढ़े : "ऐ अल्लाह! जो भी कोई नेमत मुझे या आपकी किसी मख़्लूक़ को आज सुबह मिली है वह तन्हा आप ही की तरफ़ से दी हुई है, आपका कोई शरीक नहीं, आप ही के लिए तमाम तारीफ़ें हैं और आप ही के लिए सारा शुक्र है" तो उसने उस दिन की सारी नेमतों का शुक्र अदा कर दिया और जिसने शाम होने पर यह दुआ पढ़ी, तो उसने उस रात की सारी नेमतों का शुक्र अदा कर दिया। (अबूदाऊद, नसाई)

﴿287﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ قَالَ حِيْنَ يُصْبِحُ اَوْيُمْسِيْ: اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَصْبَحْتُ اُشْهِدُكَ، وَاُشْهِدُ حَمَلَةَ عَرْشِكَ وَمَلَائِكَتَكَ، وَجَمِيْعَ خَلْقِكَ اَنَّكَ اَنْتَ اللهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ، وَ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ اَعْتَقَ اللهُ رُبُعَهُ مِنَ النَّارِ، فَمَنْ قَالَهَا مَرَّتَيْنِ اَعْتَقَ اللهُ نِصْفَهُ، وَمَنْ قَالَهَا ثَلَاثًا، اَعْتَقَ اللهُ ثَلَاثَةَ اَرْبَاعِهٖ، فَاِنْ قَالَهَا اَرْبَعًا اَعْتَقَهُ اللهُ مِنَ النَّارِ.

رواه ابوداؤد، باب مايقول إذااصبح، رقم: ٥٠٦٩

287. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स सुबह या शाम एक मर्तबा ये कलिमे पढ़ ले : "ऐ अल्लाह! मैंने इस हाल में सुबह की कि मैं आपको गवाह बनता हूं, और आपके अ़र्श के उठाने वालों को, आपके फ़रिश्तों को और आपकी सारी मख़्लूक़ को गवाह बनाता हूं इस बात पर कि आप ही अल्लाह हैं, आपके सिवा कोई माबूद नहीं और इस पर कि मुहम्मद ﷺ आपके बन्दे और आपके रसूल हैं" तो अल्लाह तआ़ला उसके चौथाई हिस्से को दोज़ख़ से आज़ाद फ़रमा देते हैं, जो दो मर्तबा पढ़े तो अल्लाह तआ़ला उसके आधे हिस्से को जहन्नम की आग से आज़ाद फ़रमा देते हैं; जो तीन मर्तबा पढ़े तो अल्लाह तआ़ला उसके तीन चौथाई को दोज़ख़ की आग से आज़ाद फ़रमा देते हैं और जो शख़्स चार मर्तबा पढ़े तो अल्लाह तआ़ला उसको पूरा दोज़ख़ की आग से आज़ाद फ़रमा देते हैं। (अबूदाऊद)

﴿288﴾ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ لِفَاطِمَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا: مَا يَمْنَعُكِ أَنْ تَسْمَعِيْ مَا أُوْصِيْكِ بِهِ أَنْ تَقُوْلِيْ إِذَا أَصْبَحْتِ وَإِذَا أَمْسَيْتِ: يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيْثُ أَصْلِحْ لِيْ شَأْنِيْ كُلَّهُ وَلَا تَكِلْنِيْ إِلٰى نَفْسِيْ طَرْفَةَ عَيْنٍ.

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح على شرط الشيخين ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ١/٥٤٥

288. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया : मेरी नसीहत ग़ौर से सुनो। तुम सुबह व शाम "ऐ हमेशा-हमेशा ज़िन्दा रहने वाले, ऐ ज़मीन व आसमान और तमाम मख़्लूक़ को क़ायम रखने वाले! मैं आपकी रहमत का वास्ता देकर फ़रियाद करता हूं कि मेरे सारे काम दुरुस्त फ़रमा दीजिए और मुझे एक लम्हा के लिए भी मेरे नफ़्स के हवाला न फ़रमाइए" कहा करो। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿289﴾ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! مَا لَقِيْتُ مِنْ عَقْرَبٍ لَدَغَتْنِي الْبَارِحَةَ! قَالَ: أَمَا لَوْ قُلْتَ حِيْنَ أَمْسَيْتَ: أَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ، لَمْ تَضُرَّكَ.

رواه مسلم، باب في التعوذ من سوء القضاء......رقم: ٦٨٨٠

289. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया : अल्लाह के रसूल! मुझे रात बिच्छू के काटने से बहुत तकलीफ़ पहुंची। नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर तुम शाम के वक़्त ये कलिमे कह लेते : "मैं अल्लाह तआला के सारे (नफ़ा देने वाले, शिफ़ा देने वाले) कलिमे के ज़रिए उसकी तमाम मख़्लूक़ के शर से पनाह चाहता हूं" तो तुम्हें बिच्छू कभी नुक़सान न पहुंचा सकता। (मुस्लिम)

फ़ायदा : कुछ उलमा ने फ़रमाया है कि अल्लाह तआला के कलिमे से मुराद क़ुरआन करीम है। (मिरक़ात)

﴿290﴾ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ قَالَ حِيْنَ يُمْسِيْ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ: أَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ لَمْ يَضُرَّهُ حُمَةٌ تِلْكَ اللَّيْلَةَ قَالَ سُهَيْلٌ رَحِمَهُ اللّٰهُ: فَكَانَ أَهْلُنَا تَعَلَّمُوْهَا فَكَانُوْا يَقُوْلُوْنَهَا كُلَّ لَيْلَةٍ فَلُدِغَتْ جَارِيَةٌ مِنْهُمْ فَلَمْ تَجِدْ لَهَا وَجَعًا. رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن، باب دعاء أعوذ بكلمات الله التامات ..... رقم: ٣٦٠٤

290. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने शाम के वक़्त तीन मर्तबा ये कलिमे कहे : 'अऊज़ु बि कलिमातिल्लाहित्ताम्माति मिनशर्रि मा ख़लक़०' तो उस रात उसको किसी क़िस्म का ज़हर नुक़्सान न पहुंचा सकेगा। हज़रत सुहैल रह० फ़रमाते हैं कि हमारे घर वालों ने इस दुआ को याद कर रखा था और वे रोज़ाना रात को पढ़ लिया करते थे। एक रात एक बच्ची को किसी ज़हरीले जानवर ने डस लिया, तो उसे उसकी तकलीफ़ बिल्कुल महसूस नहीं हुई। (तिर्मिज़ी)

﴿291﴾ عَنْ مَعْقِلِ بْنِ يَسَارٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ حِينَ يُصْبِحُ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ: اَعُوْذُ بِاللهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ وَقَرَأَ ثَلَاثَ آيَاتٍ مِنْ آخِرِ سُوْرَةِ الْحَشْرِ وَكَّلَ اللهُ بِهٖ سَبْعِيْنَ اَلْفَ مَلَكٍ يُصَلُّوْنَ عَلَيْهِ حَتّٰى يُمْسِيَ وَاِنْ مَاتَ فِيْ ذٰلِكَ الْيَوْمِ مَاتَ شَهِيْدًا، وَمَنْ قَالَهَا حِيْنَ يُمْسِيْ كَانَ بِتِلْكَ الْمَنْزِلَةِ۔

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب في فضل قراءة آخر سورة الحشر، رقم: ٢٩٢٢

291. हज़रत माक़िल बिन यसार ﷺ नबी करीम ﷺ का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं, जो शख़्स सुबह तीन मर्तबा 'अऊज़ु बिल्लाहिस्समीइल अ़लीम मिनश्शैतानिर्रजीम०' पढ़कर सूरः हश्र की आख़िरी तीन आयतें पढ़ ले, तो उसके लिए अल्लाह तआ़ला सत्तर हज़ार फ़रिश्ते मुक़र्रर फ़रमा देते हैं जो शाम तक उस पर रहमत भेजते रहते हैं और अगर उस दिन मर जाए तो शहीद मरेगा। (तिर्मिज़ी)

﴿292﴾ عَنْ عُثْمَانَ يَعْنِيْ ابْنَ عَفَّانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ قَالَ بِسْمِ اللهِ الَّذِيْ لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَيْءٌ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، لَمْ تُصِبْهُ فَجْاَةُ بَلَاءٍ حَتّٰى يُصْبِحَ، وَمَنْ قَالَهَا حِيْنَ يُصْبِحُ، ثَلَاثَ مَرَّاتٍ لَمْ تُصِبْهُ فَجْاَةُ بَلَاءٍ حَتّٰى يُمْسِيَ۔ رواه ابو داؤد، باب مايقول اذا اصبح، رقم: ٥٠٨٨

292. हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स शाम को तीन मर्तबा ये कलिमे पढ़े, तो सुबह होने तक और सुबह को तीन मर्तबा पढ़े तो शाम होने तक उसे कोई अचानक मुसीबत नहीं पहुंचेगी। (वे कलिमे ये हैं) 'उस अल्लाह के नाम के साथ (हमने सुबह या शाम की) जिसके नाम के साथ ज़मीन या आसमान में कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचाती और वह (सब कुछ) सुनने और जानने वाला है।' (अबूदाऊद)

﴿293﴾ عَنْ اَبِى الدَّرْدَاءِ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: مَنْ قَالَ إِذَا اَصْبَحَ وَإِذَا اَمْسٰى: حَسْبِيَ اللهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ، عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ، وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ سَبْعَ مَرَّاتٍ، كَفَاهُ اللهُ مَا اَهَمَّهُ، صَادِقًا كَانَ بِهَا اَوْ كَاذِبًا۔ رواه ابوداؤد، باب مايقول إذا اصبح، رقم: ٥٠٨١

293. हज़रत अबूद्दर्दा ﷺ फ़रमाते हैं कि जो शख़्स सुबह व शाम सात मर्तबा सच्चे दिल से कहे, यानी फ़ज़ीलत के यक़ीन के साथ कहे या यूं ही फ़ज़ीलत के यक़ीन के बग़ैर कहे, तो अल्लाह तआ़ला उसकी (दुनिया और आख़िरत के) तमाम ग़मों से हिफ़ाज़त फ़रमाएंगे।

तर्जुमा : मुझे अल्लाह तआ़ला ही काफ़ी हैं, उनके सिवा कोई माबूद नहीं, उन ही पर मैंने भरोसा किया और वही अ़र्शे अज़ीम के मालिक हैं। (अबूदाऊद)

﴿294﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَمْ يَكُنْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَدَعُ هٰؤُلَاءِ الدَّعَوَاتِ حِيْنَ يُمْسِيْ وَحِيْنَ يُصْبِحُ: اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْاَلُكَ الْعَافِيَةَ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ، اَللّٰهُمَّ! اِنِّىْ اَسْاَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِىْ دِيْنِىْ وَدُنْيَاىَ وَاَهْلِىْ وَمَالِىْ، اَللّٰهُمَّ! اسْتُرْ عَوْرَاتِىْ وَآمِنْ رَوْعَاتِىْ، اَللّٰهُمَّ! احْفَظْنِىْ مِنْ بَيْنِ يَدَىَّ وَمِنْ خَلْفِىْ، وَعَنْ يَمِيْنِىْ وَعَنْ شِمَالِىْ وَمِنْ فَوْقِىْ، وَاَعُوْذُ بِعَظَمَتِكَ اَنْ اُغْتَالَ مِنْ تَحْتِىْ۔ رواه ابوداؤد، باب مايقول اذا اصبح، رقم: ٥٠٧٤

294. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ सुबह व शाम कभी भी इन दुआ़ओं को पढ़ना नहीं छोड़ते थे :

तर्जुमा : या अल्लाह! मैं आपसे दुनिया व आख़िरत में आ़फ़ियत का सवाल करता हूं। या अल्लाह! मैं आपसे माफ़ी चाहता हूं और अपने दीन, दुनिया, अह्ल व अ़याल और माल में आ़फ़ियत और सलामती चाहता हूं। या अल्लाह! आप मेरे उयूब की पर्दापोशी फ़रमाइए और मुझको ख़ौफ़ की चीज़ों से अमन नसीब फ़रमाइए। या अल्लाह! आप मेरी आगे, पीछे, दाएं, बाएं, और ऊपर से हिफ़ाज़त फ़रमाइए और मैं आपकी अ़ज़मत की पनाह लेता हूं, इससे कि मैं नीचे की जानिब से अचानक हलाक कर दिया जाऊं। (अबूदाऊद)

﴿295﴾ عَنْ شَدَّادِ بْنِ اَوْسٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: سَيِّدُ الْاِسْتِغْفَارِ اَنْ يَقُوْلَ: اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّىْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنِىْ وَاَنَا عَبْدُكَ، وَاَنَا عَلٰى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ، اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ، اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَىَّ، وَاَبُوْءُ بِذَنْبِىْ فَاغْفِرْلِىْ اِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ قَالَ: وَمَنْ قَالَهَا مِنَ النَّهَارِ مُوْقِنًا بِهَا فَمَاتَ مِنْ يَوْمِهٖ قَبْلَ اَنْ يُمْسِىَ،

فَهُوَ مِنْ اَهْلِ الْجَنَّةِ، وَمَنْ قَالَهَا مِنَ اللَّيْلِ، وَهُوَ مُوْقِنٌ بِهَا ، فَمَاتَ قَبْلَ اَنْ يُصْبِحَ،فَهُوَ مِنْ اَهْلِ الْجَنَّةِ۔ رواه البخاری، باب افضل الاستغفار، رقم: ٦٣٠٦

295. हज़रत शद्दाद बिन औस ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सैय्यिदुल इस्तिग़्फ़ार (मग़फ़िरत मांगने का सबसे बेहतर तरीक़ा) यह है कि यूं कहे :

तर्जुमा : ऐ अल्लाह! आप ही मेरे रब हैं आपके सिवा कोई माबूद नहीं, आप ही ने मुझे पैदा फ़रमाया है। मैं आपका बन्दा हूं, और बक़द्रे इस्तिताअ़त आपसे किए हुए अ़हद और वादे पर क़ायम हूं, मैं अपने किए हुए बुरे अ़मल से आपकी पनाह लेता हूं और मुझ पर जो आप की नेमतें हैं उनका मैं इक़रार करता हूं और अपने गुनाहों का भी एतराफ़ करता हूं, लिहाज़ा मुझे बख़्श दीजिए, क्योंकि गुनाहों को आप के अलावा कोई नहीं बख़्श सकता।

रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने दिल के यक़ीन के साथ दिन के किसी हिस्से में इन कलिमों को पढ़ा और उसी दिन शाम होने से पहले उसको मौत आ गई, तो वह जन्नतियों में से होगा और इसी तरह अगर किसी ने दिल के यक़ीन के साथ शाम के किसी हिस्से में इन कलिमों को पढ़ा और सुबह होने से पहले उसको मौत आ गई, तो वह जन्नतियों में से होगा। (बुख़ारी)

﴿296﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: مَنْ قَالَ حِيْنَ يُصْبِحُ: "فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ" اِلٰى "وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ"، (الروم: ١٧-١٩) ، اَدْرَكَ مَا فَاتَهُ فِيْ يَوْمِهٖ ذٰلِكَ، وَمَنْ قَالَهُنَّ حِيْنَ يُمْسِيْ، اَدْرَكَ مَافَاتَهُ فِيْ لَيْلَتِهٖ۔

رواه ابوداؤد، باب مايقول اذا اصبح، رقم: ٥٠٧٦

296. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स सुबह (सूरः रूम पारः 21 की) ये तीन आयतें पढ़ ले, तो उस दिन के जो (मामूलात वग़ैरह) उससे छूट जाएं उसका सवाब मिल जाएगा और जो शख़्स शाम को ये आयतें पढ़ ले, तो उस रात को जो (मामूलात) उससे छूट जाएं उसका सवाब उसे मिल जाएगा।

तर्जुमा : तुम लोग जब शाम करो और जब सुबह करो, तो अल्लाह तआला की पाकी ब्यान करो और तमाम आसमान और ज़मीन में उन्हीं की तारीफ़ होती है, और तुम तीसरे पहर के वक़्त और ज़ुह के वक़्त (भी अल्लाह तआला की पाकी ब्यान किया करो) वह ज़िन्दा को मुर्दे से निकालते हैं और मुर्दा को ज़िन्दा से निकलते हैं और ज़मीन को उसके मुर्दे यानी खुश्क होने के बाद ज़िन्दा यानी सरसब्ज़ व शादाब करते हैं और इसी तरह तुम लोग (क़ियामत के रोज़ क़ब्रों से) निकाले जाओगे। (अबूदाऊद)

﴿297﴾ عَنْ اَبِيْ مَالِكٍ الْاَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِذَا وَلَجَ الرَّجُلُ بَيْتَهُ فَلْيَقُلْ: اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْاَلُكَ خَيْرَ الْمَوْلِجِ وَخَيْرَ الْمَخْرَجِ، بِسْمِ اللّٰهِ وَلَجْنَا، وَبِسْمِ اللّٰهِ خَرَجْنَا، وَعَلَى اللّٰهِ رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا، ثُمَّ لِيُسَلِّمْ عَلٰى اَهْلِهِ.

رواه ابو داؤد، باب مايقول الرجل اذا دخل بيته رقم: ٥٠٩٦

297. हज़रत अबू मालिक अशअरी ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब आदमी अपने घरों में दाख़िल हो, तो यह दुआ पढ़े : "ऐ अल्लाह! मैं आपसे घर में दाख़िल होने और घर से निकलने की ख़ैर मांगता हूं यानी मेरा घर में दाख़िल होना और बाहर निकलना मेरे लिए ख़ैर का ज़रिया बने। अल्लाह तआला ही के नाम के साथ हम घर में दाख़िल हुए और अल्लाह तआला ही के नाम के साथ हम घर से निकले और अल्लाह तआला ही पर जो हमारे रब हैं हमने भरोसा किया"। फिर अपने घर वालों को सलाम करे। (अबूदाऊद)

﴿298﴾ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا اَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: اِذَا دَخَلَ الرَّجُلُ بَيْتَهُ، فَذَكَرَ اللّٰهَ عَزَّوَجَلَّ عِنْدَ دُخُوْلِهِ وَعِنْدَ طَعَامِهِ قَالَ الشَّيْطَانُ: لَا مَبِيْتَ لَكُمْ وَلَا عَشَاءَ وَاِذَا دَخَلَ فَلَمْ يَذْكُرِ اللّٰهَ عِنْدَ دُخُوْلِهِ قَالَ الشَّيْطَانُ: اَدْرَكْتُمُ الْمَبِيْتَ، وَاِذَا لَمْ يَذْكُرِ اللّٰهَ عِنْدَ طَعَامِهِ، قَالَ: اَدْرَكْتُمُ الْمَبِيْتَ وَالْعَشَاءَ.

رواه مسلم، باب آداب الطعام والشراب واحكامهما، رقم: ٥٢٦٢

298. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ से रिवायत है कि उन्होंने नबी करीम ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जब आदमी अपने घर में दाख़िल होता है और दाख़िल होने और खाने के वक़्त अल्लाह तआला का ज़िक्र करता है, तो शैतान (अपने साथियों से) कहता है, यहां तुम्हारे लिए न रात ठहरने की जगह है और न रात का

खाना है और जब घर में दाख़िल हो जाता है और दाख़िल होते वक़्त अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र नहीं करता, तो शैतान (अपने साथियों से) कहता है कि यहां तुम्हें रात रहने की जगह मिल गई और जब खाने के वक़्त भी अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र नहीं करता तो शैतान (अपने साथियों से) कहता है कि यहां तुम्हें रात रहने की जगह और खाना भी मिल गया। (मुस्लिम)

﴿299﴾ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: مَا خَرَجَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ مِنْ بَيْتِي قَطُّ إِلَّا رَفَعَ طَرْفَهُ إِلَى السَّمَاءِ فَقَالَ: اَللّٰهُمَّ! إِنِّي أَعُوْذُ بِكَ أَنْ أَضِلَّ أَوْ أُضَلَّ أَوْ أَزِلَّ أَوْ أُزَلَّ أَوْ أَظْلِمَ أَوْ أُظْلَمَ أَوْ أَجْهَلَ أَوْ يُجْهَلَ عَلَيَّ. رواه ابوداؤد، باب مايقول إذا خرج من بيته، رقم: ٥٠٩٤

299. हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ जब भी मेरे घर से निकलते तो आसमान की तरफ़ निगाह उठाकर यह दुआ़ पढ़ते :

तर्जुमा : ऐ अल्लाह, मैं आपसे पनाह मांगता हूं कि मैं गुमराह हो जाऊं या गुमराह किया जाऊं या मैं जिहालत में बुरा बरताव करूं या मेरे साथ जिहालत में बुरा बरताव किया जाए। (अबूदाऊद)

﴿300﴾ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ قَالَ يَعْنِي إِذَا خَرَجَ مِنْ بَيْتِهِ: بِسْمِ اللهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللهِ، لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ يُقَالُ لَهُ: كُفِيْتَ وَوُقِيْتَ وَتَنَحَّى عَنْهُ الشَّيْطَانُ. باب ماجاء ما يقول الرجل اذا خرج من بيته، رقم: ٣٤٢٦ وابوداؤد، وفيه: يُقَالُ حِيْنَئِذٍ: هُدِيْتَ وَكُفِيْتَ وَوُقِيْتَ فَتَتَنَحَّى لَهُ الشَّيَاطِيْنُ، فَيَقُوْلُ شَيْطَانٌ آخَرُ: كَيْفَ لَكَ بِرَجُلٍ قَدْ هُدِيَ وَكُفِيَ وَوُقِيَ.

باب مايقول اذا خرج من بيته، رقم: ٥٠٩٥

300. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब कोई शख़्स अपने घर से निकलते वक़्त यह दुआ़ पढ़े : "मैं अल्लाह का नाम लेकर निकल रहा हूं, अल्लाह ही पर मेरा भरोसा है, किसी ख़ैर के हासिल करने या किसी शर से बचने में कामयाबी अल्लाह ही के हुक्म से हो सकती है" उस वक़्त उससे कहा जाता है यानी फ़रिश्ते कहते हैं : तुम्हारे काम बना दिए गए और तुम्हारी हर शर से हिफ़ाज़त की गई। शैतान (नामुराद होकर) उससे दूर हो जाता है। (तिर्मिज़ी)

एक रिवायत में यह है कि उस वक़्त (इस दुआ के पढ़ने के बाद) उससे कहा जाता है : तुम्हें पूरी रहनुमाई मिल गई, तुम्हारे काम बना दिए गए और तुम्हारी हिफ़ाज़त की गई। चुनांचे शयातीन उससे दूर हो जाते हैं। दूसरा शैतान पहले शैतान से कहता है तू इस शख़्स पर कैसे क़ाबू पा सकता है जिसे रहनुमाई मिल गई हो, जिसके काम बना दिए गए हों और जिसकी हिफ़ाज़त की गई हो। (अबूदाऊद)

﴿301﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ كَانَ يَقُوْلُ عِنْدَ الْكَرْبِ: لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ الْعَظِيْمُ الْحَلِيْمُ، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَرَبُّ الْاَرْضِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ. رواه البخاري، باب الدعاء عند الكرب، رقم:٦٣٤٦

301. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ बेचैनी के वक़्त यह दुआ पढ़ते थे :

तर्जुमा : अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं है जो बहुत बड़े और बुर्दबार हैं (गुनाह पर फ़ौरन पकड़ नहीं फ़रमाते) अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं है जो अर्शे अज़ीम के रब हैं, अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं है जो आसमानों और ज़मीनों और मुअज़्ज़ज़ अर्श के रब हैं। (बुख़ारी)

﴿302﴾ عَنْ اَبِىْ بَكْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: دَعَوَاتُ الْمَكْرُوْبِ: اَللّٰهُمَّ رَحْمَتَكَ اَرْجُوْ، فَلَا تَكِلْنِىْ اِلٰى نَفْسِىْ طَرْفَةَ عَيْنٍ، وَاَصْلِحْ لِىْ شَاْنِىْ كُلَّهُ، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ. رواه ابوداؤد، باب مايقول اذا اصبح، رقم: ٥٠٩٠

302. हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स मुसीबत में मुब्तला हो वह यह दुआ पढ़े : "ऐ अल्लाह! मैं आपकी रहमत की उम्मीद करता हूं, मुझे पलक झपकने के बराबर भी मेरे नफ़्स के हवाले न फ़रमाइए। मेरे तमाम हालात को दुरुस्त फ़रमा दीजिए आपके सिवा कोई माबूद नहीं है।" (बुख़ारी)

﴿303﴾ عَنْ اُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ تَقُوْلُ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَا مِنْ عَبْدٍ تُصِيْبُهُ مُصِيْبَةٌ فَيَقُوْلُ: اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ، اَللّٰهُمَّ اْجُرْنِىْ فِىْ مُصِيْبَتِىْ وَاَخْلِفْ لِىْ خَيْرًا مِنْهَا اِلَّا اَجَرَهُ اللهُ فِىْ مُصِيْبَتِهٖ، وَاَخْلَفَ لَهٗ خَيْرًا مِنْهَا قَالَتْ:

فَلَمَّا تُوُفِّيَ أَبُوْ سَلَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قُلْتُ كَمَا أَمَرَنِيْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ، فَأَخْلَفَ اللهُ لِيْ خَيْرًا مِنْهُ، رَسُوْلَ اللهِ ﷺ رواه مسلم، باب مايقال عند المصيبة، رقم: ٢١٢٧

303. हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा जो रसूलुल्लाह ﷺ की अह्लिया मुहतर्मा हैंए फ़रमाती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिस बन्दे को कोई मुसीबत पहुंचे और वह यह दुआ पढ़ ले : इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। अल्लाहुम-म अजिरनी मुसीबती वख़्लिफ़ ली ख़ैरम मिनहा 'बेशक हम अल्लाह तआला ही के लिए हैं और अल्लाह तआला ही की तरफ़ लौटने वाले हैं। ऐ अल्लाह! मुझे मेरी मुसीबत में सवाब अ़ता फ़रमाइए और जो चीज़ आपने मुझसे ले ली है उससे बेहतर चीज़ अ़ता फ़रमाइए'' तो अल्लाह तआला उसको उस मुसीबत में सवाब अ़ता फ़रमाते हैं और उसको उस फ़ौत शुदा चीज़ के बदले में उससे अच्छी चीज़ इनायत फ़रमा देते हैं। हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि जब हज़रत अबू सलमा ﷺ फ़ौत हो गए तो मैंने उसी तरह दुआ की जिस तरह रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे इस दुआ का हुक्म दिया था तो अल्लाह तआला ने मुझे अबू सलमा से बेहतर बदल अ़ता फ़रमा दिया यानी रसूलुल्लाह ﷺ को मेरा शौहर बना दिया। (मुस्लिम)

﴿304﴾ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ صُرَدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ (فِيْ رَجُلٍ غَضِبَ عَلَى الْآخَرِ) لَوْ قَالَ: أَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ، ذَهَبَ عَنْهُ مَا يَجِدُ.

(وَهُوَ بعض الحديث) رواه البخاري، باب قصة ابليس و جنوده، رقم: ٣٢٨٢

304. हज़रत सुलैमान बिन सुरद ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने (एक शख़्स के बारे में जो दूसरे पर नाराज़ हो रहा था) इर्शाद फ़रमाया : अगर यह शख़्स अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम० पढ़ ले तो उसका गुस्सा जाता रहे। (बुख़ारी)

﴿305﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ نَزَلَتْ بِهِ فَاقَةٌ فَأَنْزَلَهَا بِالنَّاسِ لَمْ تُسَدَّ فَاقَتُهُ وَمَنْ نَزَلَتْ بِهِ فَاقَةٌ فَأَنْزَلَهَا بِاللهِ فَيُوْشِكُ اللهُ لَهُ بِرِزْقٍ عَاجِلٍ أَوْ آجِلٍ. رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح غريب، باب ماجاء في الهم في الدنيا وحبها، رقم: ٢٣٢٦

305. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स को फ़ाक़ा की नौबत आ जाए और वह उसको दूर करने के लिए लोगों से सवाल करे, तो उसका फ़ाक़ा बन्द न होगा और जिस [illegible]

की नौबत आ जाए और वह उसको दूर करने के लिए अल्लाह तआ़ला से सवाल करे तो अल्लाह तआ़ला जल्द उसकी रोज़ी का इंतज़ाम फ़रमा देते हैं, फ़ौरन मिल जाए या कुछ ताख़ीर से। (तिर्मिज़ी)

﴿306﴾ عَنْ أَبِيْ وَائِلٍ رَحِمَهُ اللهُ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ مُكَاتَبًا جَاءَهُ فَقَالَ: إِنِّي قَدْ عَجِزْتُ عَنْ كِتَابَتِيْ فَأَعِنِّيْ، قَالَ: أَلَا أُعَلِّمُكَ كَلِمَاتٍ عَلَّمَنِيْهِنَّ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ؟ لَوْ كَانَ عَلَيْكَ مِثْلُ جَبَلِ صِيْرٍ دَيْنًا أَدَّاهُ اللهُ عَنْكَ قَالَ: قُلِ اللّٰهُمَّ اكْفِنِيْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ، وَأَغْنِنِيْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، احاديث شتى من ابواب الدعوات، رقم: ٣٥٦٣

306. हज़रत अबू वाइल रह० फ़रमाते हैं कि एक मुकातब (ग़ुलाम) ने हज़रत अ़ली ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया : मैं (किताबत के बदले में) तयशुदा माल अदा नहीं कर पा रहा। आप इस बारे में मेरी मदद फ़रमाइए। हज़रत अ़ली ﷺ ने फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें वह कलिमे न सिखा दूं जो मुझे रसूलुल्लाह ﷺ ने सिखाए थे? अगर तुम पर (यमन के) सीर पहाड़ के बराबर भी क़र्ज़ हो तो भी अल्लाह तआ़ला उस क़र्ज़ को अदा करा देंगे। तुम यह दुआ़ पढ़ा करो : "या अल्लाह! मुझे अपना हलाल रिज़्क़ देकर हराम से बचा लीजिए और मुझे अपने फ़ज़्ल व करम से अपने ग़ैर से बेनियाज़ कर दीजिए"। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : मुकातब उस ग़ुलाम को कहते हैं जिसे उसके आक़ा ने कहा हो कि अगर तुम इतना माल इतने अ़र्से में अदा कर दोगे तो तुम आज़ाद हो जाओगे, जो माल उस मामले में तय किया जाता है उसको किताबत का बदल कहते हैं।

﴿307﴾ عَنْ أَبِيْ سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: دَخَلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ ذَاتَ يَوْمٍ الْمَسْجِدَ فَإِذَا هُوَ بِرَجُلٍ مِنَ الْأَنْصَارِ يُقَالُ لَهُ: أَبُوْ أُمَامَةَ، فَقَالَ: يَا أَبَا أُمَامَةَ! مَالِيْ أَرَاكَ جَالِسًا فِي الْمَسْجِدِ فِيْ غَيْرِ وَقْتِ الصَّلَاةِ؟ قَالَ: هُمُوْمٌ لَزِمَتْنِيْ وَدُيُوْنٌ يَا رَسُوْلَ اللهِ! قَالَ: أَفَلَا أُعَلِّمُكَ كَلَامًا إِذَا قُلْتَهُ أَذْهَبَ اللهُ هَمَّكَ وَقَضٰى عَنْكَ دَيْنَكَ؟ قَالَ: قُلْتُ: بَلٰى، يَا رَسُوْلَ اللهِ! قَالَ: قُلْ: إِذَا أَصْبَحْتَ وَإِذَا أَمْسَيْتَ: اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحَزَنِ، وَأَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ، وَأَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْجُبْنِ وَالْبُخْلِ وَأَعُوْذُ بِكَ مِنْ غَلَبَةِ الدَّيْنِ وَقَهْرِ الرِّجَالِ، قَالَ: فَفَعَلْتُ ذٰلِكَ فَأَذْهَبَ اللهُ هَمِّيْ وَقَضٰى عَنِّيْ دَيْنِيْ.

رواه ابوداؤد، باب في الاستعاذة، رقم: ١٥٥٥

307. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ؓ रिवायत करते हैं कि एक दिन रसूलुल्लाह ﷺ मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो आप की नज़र एक अन्सारी शख़्स पर पड़ी जिनका नाम अबू उमामा था। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अबू उमामा! क्या बात है मैं तुम्हें नमाज़ के वक़्त के अलावा मस्जिद में (अलग-थलग) बैठा हुआ देख रहा हूं? हज़रत अबू उमामा ؓ ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मुझे ग़मों और क़र्ज़ों ने घेर रखा है। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें एक दुआ न सिखा दूं जब तुम उसको कहोगे तो अल्लाह तआला तुम्हारे ग़म दूर कर देंगे और तुम्हारा क़र्ज़ उतरवा देंगे? हज़रत उमामा ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! ज़रूर सिखा दें। आप ﷺ ने फ़रमाया : सुबह व शाम यह दुआ पढ़ा करो : **'अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ु बि-क मिनल हम्मि वल ह-ज़न व अऊज़ु बि-क मिनल अज्ज़ि वल कस्लि व अऊज़ु बि-क मिनल जुब्नि वल बुख़्लि व अऊज़ु बि-क मिनल ग़लबति दैनि व क़ह्रिर्रिजाल०'।**

तर्जुमा : 'या अल्लाह! मैं फ़िक्र व ग़म से आप की पनाह लेता हूं, और मैं बेबसी और सुस्ती से आपकी पनाह लेता हूं, और मैं कंजूसी और बुज़दिली से आपकी पनाह लेता हूं और मैं क़र्ज़ के बोझ में दबने से और लोगों के मेरे ऊपर दबाव से आपकी पनाह लेता हूं।' हज़रत उमामा ؓ फ़रमाते हैं, मैंने सुबह व शाम इस दुआ को पढ़ा, तो अल्लाह तआला ने मेरे ग़म दूर कर दिए और मेरा सारा क़र्ज़ा भी अदा करवा दिया। (अबूदाऊद)

﴿308﴾ عَنْ أَبِيْ مُوْسَى الْأَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِذَا مَاتَ وَلَدُ الْعَبْدِ قَالَ اللهُ لِمَلَائِكَتِهِ: قَبَضْتُمْ وَلَدَ عَبْدِيْ؟ فَيَقُوْلُوْنَ: نَعَمْ، فَيَقُوْلُ: قَبَضْتُمْ ثَمَرَةَ فُؤَادِهِ فَيَقُوْلُوْنَ: نَعَمْ، فَيَقُوْلُ: مَاذَا قَالَ عَبْدِيْ؟ فَيَقُوْلُوْنَ: حَمِدَكَ وَاسْتَرْجَعَ، فَيَقُوْلُ اللهُ: ابْنُوْا لِعَبْدِيْ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَسَمُّوْهُ بَيْتَ الْحَمْدِ

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب فضل المصيبة اذا احتسب، رقم ١٠٢١

308. हज़रत अबू मूसा अशअरी ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब किसी का बच्चा फ़ौत हो जाता है तो अल्लाह तआला फ़रिश्तों से पूछते हैं : तुम मेरे बन्दे के बच्चे को ले आए? वह अर्ज़ करते हैं : जी हां! अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : तुम मेरे बन्दे के दिल के टुकड़े को ले आए? वह अर्ज़ करते हैं : जी हां! अल्लाह तआला पूछते हैं : मेरे बन्दे ने उस पर क्या कहा? वह अर्ज़ करते हैं : आपकी तारीफ़ की और **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन०** पढ़ा। अल्लाह

तआला फ़रिश्तों को हुक्म देते हैं कि मेरे बन्दे के लिए जन्नत में एक घर बनाओ और उसका नाम बैतुल-हम्द यानी 'तारीफ़ का घर' रखो। (तिर्मिज़ी)

﴿309﴾ عَنْ بُرَيْدَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يُعَلِّمُهُمْ إِذَا خَرَجُوْا إِلَى الْمَقَابِرِ، فَكَانَ قَائِلُهُمْ يَقُوْلُ: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الدِّيَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُسْلِمِيْنَ، وَإِنَّا إِنْ شَاءَ اللهُ لَلَاحِقُوْنَ، أَسْأَلُ اللهَ لَنَا وَلَكُمُ الْعَافِيَةَ.

رواه مسلم، باب مايقال عند دخول القبور والدعا لاهلها، رقم: ٢٢٥٧

309. हज़रत बुरैदा ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ सहाबा कराम ؓ को सिखाते थे कि जब वे क़ब्रिस्तान जाएं, तो इस तरह कहें : 'अस्सलामु अलैकुम अह्लद्दियारि मिनल मोमिनीन वल मुस्लिमीन व इन्ना इनशाअल्लाहु ल-लाहिक़ून अस अलुल्ला-ह लना व लकुमुल आफ़ियः' (इस बस्ती के रहने वाले मोमिनो और मुसलमानो! तुम पर सलाम हो, बिला शुब्हा हम भी इन्शा अल्लाह तुम से अंक़रीब मिलने वाले हैं। हम अल्लाह तआला से अपने और तुम्हारे लिए आफ़ियत का सवाल करते हैं"। (मुस्लिम)

﴿310﴾ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ دَخَلَ السُّوْقَ فَقَالَ: لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لَا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، كَتَبَ اللهُ لَهُ أَلْفَ أَلْفِ حَسَنَةٍ وَمَحَا عَنْهُ أَلْفَ أَلْفِ سَيِّئَةٍ وَرَفَعَ لَهُ أَلْفَ أَلْفِ دَرَجَةٍ. رواه الترمذي وقال: هذا حديث غريب، باب مايقول اذا دخل السوق، رقم: ٣٤٢٨ وقال الترمذي في رواية له مكان "وَرَفَعَ لَهُ أَلْفَ أَلْفِ دَرَجَةٍ، "وَبَنٰى لَهُ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ" رقم: ٣٤٢٩

310. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने बाज़ार में क़दम रखते हुए ये कलिमे पढ़े : अल्लाह तआला उसके लिए दस लाख नेकियां लिख देते हैं, और उसकी दस लाख ख़ताएं मिटा देते हैं, और दस लाख दर्जे उसके बुलन्द कर देते हैं। एक रिवायत में दस लाख दर्जे बुलन्द करने के बजाए जन्नत में एक महल बना देने का ज़िक्र है। (तिर्मिज़ी)

﴿311﴾ عَنْ أَبِيْ بَرْزَةَ الْأَسْلَمِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ بِأَخَرَةٍ

إِذَا أَرَادَ أَنْ يَقُومَ مِنَ الْمَجْلِسِ: سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ، أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ، أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ، فَقَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللهِ! إِنَّكَ لَتَقُولُ قَوْلًا مَا كُنْتَ تَقُولُهُ فِيمَا مَضٰى؟ قَالَ: كَفَّارَةٌ لِمَا يَكُونُ فِي الْمَجْلِسِ.

رواه ابوداؤد، باب في كفارة المجلس، رقم: ٤٨٥٩

311. हज़रत अबू बरज़ा अस्लमी ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ का मामूल मुबारक उम्र के आख़िरी ज़माने में यह था कि जब मज्लिस से उठने का इरादा फ़रमाते तो 'सुब्हा-न-कल्लाहुम-म व बिहम्दि-क अश्हदु अल्लाइ-ला-ह इल्ला अन-त अस्तग़्फ़िरु-क व अतूबु इलैक०' पढ़ा करते। एक शख़्स ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! आजकल आपका मामूल एक दुआ पढ़ने का है जो पहले नहीं था। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि यह दुआ मज्लिस (की लग़्ज़िशों) का कफ़्फ़ारा है।

तर्जुमा : ऐ अल्लाह! आप पाक हैं, मैं आपकी तारीफ़ ब्यान करता हूं, मैं गवाही देता हूं कि आपके सिवा कोई माबूद नहीं, मैं आपसे माफ़ी चाहता हूं और आपके सामने तौबा करता हूं। (अबूदाऊद)

﴾312﴿ عَنْ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: مَنْ قَالَ سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ، أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ، أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ، فَقَالَهَا فِي مَجْلِسِ ذِكْرٍ كَانَتْ كَالطَّابِعِ يُطْبَعُ عَلَيْهِ، وَمَنْ قَالَهَا فِي مَجْلِسِ لَغْوٍ كَانَتْ كَفَّارَةً لَهُ.

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح على شرط مسلم ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ١/٥٣٧

312. हज़रत जुबैर बिन मुतइम ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने ज़िक्र की मज्लिस (के आख़िर) में यह दुआ पढ़ी : 'सुब्हानल्लाह व बिहम्दिही सुब्हा-न-कल्लाहुम-म व बिहम्दि-क अश्हदु अल्ला इला-ह इल्ला अन-त अस्तग़्फ़िरु-क व अतूबु इलैक' यह दुआ उस ज़िक्र की मज्लिस के लिए इस तरह होगी जिस तरह (अहम काग़ज़ों पर) मुहर लगा दी जाती है, यानी यह मज्लिस अल्लाह के हां क़ुबूल हो जाती है और उसका अज्र व सवाब अल्लाह के यहां महफ़ूज़ हो जाता है और अगर यह दुआ ऐसी मज्लिस में पढ़े जिसमें बेकार बातें हुई हों तो यह दुआ उस मज्लिस का कफ़्फ़ारा बन जाएगी। (मुस्तदरक हाकिम)

﴾313﴿ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: أُهْدِيَتْ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ شَاةٌ فَقَالَ: اقْسِمِيهَا

وَكَانَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا إِذَا رَجَعَتِ الْخَادِمُ تَقُوْلُ: مَاقَالُوْا؟ تَقُوْلُ الْخَادِمُ: قَالُوْا: بَارَكَ اللهُ فِيْكُمْ تَقُوْلُ عَائِشَةُ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: وَفِيْهِمْ بَارَكَ اللهُ نَرُدُّ عَلَيْهِمْ مِثْلَ مَا قَالُوْا وَيَبْقَى أَجْرُنَا لَنَا. الوابل الصيب من الكلم الطيب قال المحشي: اسناده صحيح ص١٨٢

313. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ के पास एक बकरी हदिए में आई। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आइशा! उसे तक़सीम कर दो। जब ख़ादिमा लोगों में गोश्त तक़सीम करके वापस आती तो हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा पूछतीं : लोगों ने क्या कहा? ख़ादिमा कहती, लोगों ने बारकल्लाहु फ़ीकुम कहा, यानी अल्लाह तआला तुम्हें बरकत दें। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमातीं, 'वफ़ीहिम बारकल्लाह' यानी अल्लाह तआला उन्हें बरकत दें। हमने उनको वही दुआ दी, जो दुआ उन्होंने हमें दी (दुआ देने में हम और वह बराबर हो गए) अब गोश्त की तक़सीम का सवाब हमारे लिए बाक़ी रह गया।

(अलवाबिलुस्सैयिब)

﴿314﴾ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ كَانَ يُؤْتَى بِأَوَّلِ الثَّمَرِ فَيَقُوْلُ: اَللّٰهُمَّ! بَارِكْ لَنَا فِيْ مَدِيْنَتِنَا وَفِيْ ثِمَارِنَا وَفِيْ مُدِّنَا وَفِيْ صَاعِنَا بَرَكَةً مَعَ بَرَكَةٍ ثُمَّ يُعْطِيْهِ أَصْغَرَ مَنْ يَحْضُرُهُ مِنَ الْوِلْدَانِ. رواه مسلم، باب فضل المدينة ... رقم: ٣٣٣٥

314. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में मौसम का नया फल पेश किया जाता, तो आप ﷺ यह दुआ पढ़ते : "ऐ अल्लाह! आप हमारे शहर मदीना में, हमारे फलों में, हमारे मुद्द में और हमारे साअ् में ख़ूब बरकत अता फ़रमाइए"। फिर आप ﷺ उस वक़्त जो बच्चे हाज़िर होते, उनमें सबसे छोटे बच्चे को यह फल दे दिया करते थे। (मुस्लिम)

फ़ायदा : मुद्द, नापने का छोटा पैमाना है जिसमें तक़रीबन एक किलो की मिक़दार आ जाती है। साअ् नापने का बड़ा पैमाना है, जिसमें तक़रीबन चार किलो की मिक़दार आ जाती है।

﴿315﴾ عَنْ وَحْشِيِّ بْنِ حَرْبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ أَصْحَابَ النَّبِيِّ ﷺ قَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللهِ! إِنَّا نَأْكُلُ وَلَا نَشْبَعُ، قَالَ: فَلَعَلَّكُمْ تَفْتَرِقُوْنَ؟ قَالُوْا: نَعَمْ، قَالَ: فَاجْتَمِعُوْا عَلَى طَعَامِكُمْ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللهِ عَلَيْهِ يُبَارَكْ لَكُمْ فِيْهِ. رواه ابو داود، باب في الاجتماع على الطعام، رقم: ٣٧٦٤

315. हज़रत वहशी बिन हर्ब ﷺ से रिवायत है कि चन्द सहाबा ने अर्ज़ किया : या

रसूलुल्लाह! हम खाना खाते हैं मगर हमारा पेट नहीं भरता। आप ﷺ ने पूछा : शायद तुम लोग अलाहिदा-अलाहिदा खाते हो? उन्होंने अर्ज़ किया : जी हां। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम लोग खाना एक जगह जमा होकर और अल्लाह तआला का नाम ले कर खाया करो, तुम्हारे खाने में बरकत होगी। (अबूदाऊद)

﴿316﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ : مَنْ اَكَلَ طَعَامًا ثُمَّ قَالَ: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ اَطْعَمَنِيْ هٰذَا الطَّعَامَ وَرَزَقَنِيْهِ مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِنِّيْ وَلَا قُوَّةٍ، غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ وَمَا تَاَخَّرَ، قَالَ: وَمَنْ لَبِسَ ثَوْبًا فَقَالَ: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ كَسَانِيْ هٰذَا الثَّوْبَ وَرَزَقَنِيْهِ مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِنِّيْ وَلَا قُوَّةٍ، غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ وَمَا تَاَخَّرَ.

رواه ابو داؤد،باب مايقول اذا لبس ثوبا جديدا، رقم: ٤٠٢٣

316. हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने खाना खाकर यह दुआ पढ़ी : 'अल-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत-अ-म-नी हाज़त्तआ-म व र-ज़-क़-नीहि मिनग़ैरि हौलिम-मिन्नी व ला क़ुव्वः' "तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं, जिन्होंने मुझे यह खाना खिलाया और मेरी कोशिश और ताक़त के बग़ैर मुझे यह नसीब फ़रमाया" तो उसके अगले-पिछले गुनाह माफ़ हो जाते हैं।

और जिसने कपड़ा पहनकर यह दुआ पढ़ी : 'अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी कसानी हाज़स्सौ-ब व र-ज़-क़-नीहि मिन ग़ैरि हौलिम मिन्नी व ला क़ुव्वः' "तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं जिन्होंने मुझे यह कपड़ा पहनाया और मेरी कोशिश और ताक़त के बग़ैर मुझे यह नसीब फ़रमाया" तो उसके अगले-पिछले गुनाह माफ़ हो जाते हैं। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : अगले गुनाह माफ़ होने का मतलब यह है कि आइंदा अल्लाह तआला अपने इस बन्दे की गुनाहों से हिफ़ाज़त फ़रमाएंगे। (बज़्लुलमज्हूद)

﴿317﴾ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ لَبِسَ ثَوْبًا جَدِيْدًا فَقَالَ: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ كَسَانِيْ مَا اُوَارِيْ بِهِ عَوْرَتِيْ وَاَتَجَمَّلُ بِهِ فِيْ حَيَاتِيْ، ثُمَّ عَمَدَ اِلَى الثَّوْبِ الَّذِيْ اَخْلَقَ فَتَصَدَّقَ بِهِ كَانَ فِيْ كَنَفِ اللهِ وَفِيْ حِفْظِ اللهِ وَفِيْ سِتْرِ اللهِ حَيًّا وَمَيِّتًا.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث غريب، احاديث شتى من ابواب الدعوات، رقم: ٣٥٦٠

317. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ؓ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स नया कपड़ा पहन कर यह दुआ पढ़े : **अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी कसानी मा उवारी बिही औरती व अ-तजम्मलु बिही फ़ी हयाती** "तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआ़ला के लिए हैं जिन्होंने मुझे कपड़े पहनाए, उन कपड़ों से मैं अपना सत्तर छुपाता हूं और अपनी ज़िन्दगी में उनसे ज़ीनत हासिल करता हूं' फिर पुराने कपड़े को सदक़ा कर दे तो ज़िन्दगी और मरने के बाद अल्लाह तआ़ला की हिफ़ाज़त और अमान में रहेगा और उसके गुनाहों पर अल्लाह तआ़ला पर्दा डाले रखेंगे। (तिर्मिज़ी)

﴿318﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِىَّ ﷺ قَالَ: إِذَا سَمِعْتُمْ صِيَاحَ الدِّيَكَةِ فَسْئَلُوْا اللهَ مِنْ فَضْلِهِ فَإِنَّهَا رَاَتْ مَلَكًا، وَإِذَا سَمِعْتُمْ نَهِيْقَ الْحَمِيْرِ فَتَعَوَّذُوا بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ فَإِنَّهَا رَاَتْ شَيْطَانًا. رواه البخاری، باب خیر مال المسلم......،رقم، ٣٣٠٣

381. हज़रत अबू हुरैरह ؓ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम मुर्ग़ की आवाज़ सुनो तो अल्लाह तआ़ला से उसके फ़ज़्ल का सवाल करो, क्योंकि वह फ़रिश्ते को देखकर आवाज़ देता है और जब तुम गधे की आवाज़ सुनो तो शैतान से अल्लाह तआ़ला की पनाह मांगो, क्योंकि वह शैतान को देखकर बोलता है। (बुख़ारी)

﴿319﴾ عَنْ طَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِىَّ ﷺ كَانَ إِذَا رَاَى الْهِلَالَ قَالَ: اَللّٰهُمَّ اَهِلَّهُ عَلَيْنَا بِالْيُمْنِ وَالْإِيْمَانِ وَالسَّلَامَةِ وَالْإِسْلَامِ، رَبِّىْ وَرَبُّكَ اللهُ.

رواہ الترمذی وقال: ھذا حدیث حسن غریب، باب مایقول عند رؤیۃ الھلال، الجامع الصحیح للترمذی، رقم: ٣٤٥١

319. हज़रत तल्हा बिन उबैदुल्लाह ؓ रिवायत करते हैं कि जब नबी करीम ﷺ नया चांद देखते तो यह दुआ पढ़ते : **'अल्लाहुम-म अहिल्लहू अ़लैना बिलयुम्नि वल इमानि वस्सलामति वल इस्लाम। रब्बी व रब्बुकल्लाह'**

तर्जुमा : ऐ अल्लाह! यह चांद हमारे ऊपर बरकत, ईमान, सलामती और इस्लाम के साथ निकालिए। ऐ चांद! मेरा और तेरा रब अल्लाह तआ़ला है। (तिर्मिज़ी)

﴿320﴾ عَنْ قَتَادَةَ رَحِمَهُ اللهُ أَنَّهُ بَلَغَهُ أَنَّ نَبِيَّ اللهِ ﷺ كَانَ إِذَا رَأَى الْهِلَالَ قَالَ: هِلَالُ خَيْرٍ وَرُشْدٍ، هِلَالُ خَيْرٍ وَرُشْدٍ،هِلَالُ خَيْرٍ وَرُشْدٍ، آمَنْتُ بِالَّذِيْ خَلَقَكَ، ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، ثُمَّ يَقُوْلُ: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ ذَهَبَ بِشَهْرِ كَذَا وَجَاءَ بِشَهْرِ كَذَا.

رواه ابو داؤد، باب مايقول الرجل اذا رأى الهلال،رقم: ٥٠٩٢

320. हज़रत क़तादा रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं, मुझे यह बात पहुंची है कि रसूलुल्लाह ﷺ जब नये चांद को देखते, तो तीन बार फ़रमाते : "यह ख़ैर और हिदायत का चांद हो, यह ख़ैर और हिदायत का चांद हो, यह ख़ैर और हिदायत का चांद हो, मैं ईमान लाया अल्लाह तआ़ला पर जिन्होंने तुझे पैदा किया"। फिर फ़रमाते : 'तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआ़ला के लिए हैं, जिन्होंने फ़्लां महीना ख़त्म किया और फ़्लां महीना शुरू किया" (अबूदाऊद)

﴿321﴾ عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ رَأَى صَاحِبَ بَلَاءٍ فَقَالَ: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ عَافَانِيْ مِمَّا ابْتَلَاكَ بِهِ، وَفَضَّلَنِيْ عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِيْلًا، إِلَّا عُوْفِيَ مِنْ ذٰلِكَ الْبَلَاءِ، كَائِنًا مَّا كَانَ مَا عَاشَ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث غريب، باب ماجاء مايقول اذا رأى مبتلى، رقم: ٣٤٣١

321. हज़रत उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी मुसीबतज़दा को देखकर यह दुआ़ पढ़ ले : 'अल-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी आफ़ानी मिम्मब्तला-क बिही व फ़ज़्ज़लनी अ़ला कसीरिम मिम्मन ख़-ल-क़ तफ़्ज़ीला०' तो उस दुआ़ का पढ़ने वाला उस पर परेशानी से ज़िन्दगी भर महफ़ूज़ रहेगा ख़्वाह वह परेशानी कैसी ही हो।

तर्जुमा : सब तारीफ़ें अल्लाह तआ़ला के लिए हैं, जिन्होंने मुझे उस हाल से बचाया जिसमें तुम्हें मुब्तला किया और उसने अपनी बहुत-सी मख़्लूक़ पर मुझे फ़ज़ीलत दी। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : हज़रत जाफ़र रह० फ़रमाते हैं कि ये अल्फ़ाज़ अपने दिल में कहे और मुसीबतज़दा को न सुनाए। (तिर्मिज़ी)

﴿322﴾ عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا أَخَذَ مَضْجَعَهُ مِنَ اللَّيْلِ وَضَعَ يَدَهُ تَحْتَ خَدِّهِ ثُمَّ يَقُوْلُ: اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ أَمُوْتُ وَأَحْيٰى وَإِذَا اسْتَيْقَظَ قَالَ: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ أَحْيَانَا بَعْدَ مَا أَمَاتَنَا وَإِلَيْهِ النُّشُوْرُ.

رواه البخاري، باب وضع اليد تحت الخد اليمنى، رقم: ٦٣١٤

322. हज़रत हुज़ैफ़ा ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ जब रात को अपने बिस्तर पर लेटते, तो अपना हाथ अपने रुख़्सार के नीचे रखते, फिर यह दुआ पढ़ते : **'अल्लाहुम-म बिस्मि-क अमूतु व अह्या'** ''ऐ अल्लाह! मैं आपका नाम लेकर मरता हूं (यानी सोता हूं) और ज़िन्दा होता हूं (यानी जागता हूं)'' और जब बेदार होते तो यह दुआ पढ़ते : **'अल-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अह्याना बा-द मा अमा-तना व इलैहिन्नुशूर०'** ''तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं, जिसने हमें मार कर ज़िन्दगी बख़्शी और हमको उन्हीं की तरफ़ क़ब्रों से उठकर जाना है''। (बुख़ारी)

﴿323﴾ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ لِيْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِذَا أَتَيْتَ مَضْجَعَكَ فَتَوَضَّأْ وُضُوْءَكَ لِلصَّلَاةِ ثُمَّ اضْطَجِعْ عَلٰى شِقِّكَ الْأَيْمَنِ وَقُلْ: اَللّٰهُمَّ! أَسْلَمْتُ وَجْهِيْ إِلَيْكَ، وَفَوَّضْتُ أَمْرِيْ إِلَيْكَ، وَأَلْجَأْتُ ظَهْرِيْ إِلَيْكَ، رَهْبَةً وَرَغْبَةً إِلَيْكَ، لَا مَلْجَأَ وَلَا مَنْجَا مِنْكَ إِلَّا إِلَيْكَ، آمَنْتُ بِكِتَابِكَ الَّذِيْ أَنْزَلْتَ، وَنَبِيِّكَ الَّذِيْ أَرْسَلْتَ قَالَ: فَإِنْ مُتَّ مُتَّ عَلَى الْفِطْرَةِ، وَاجْعَلْهُنَّ آخِرَ مَا تَقُوْلُ قَالَ الْبَرَاءُ: فَقُلْتُ أَسْتَذْكِرُهُنَّ، فَقُلْتُ: وَبِرَسُوْلِكَ الَّذِيْ أَرْسَلْتَ، قَالَ: لَا، وَنَبِيِّكَ الَّذِيْ أَرْسَلْتَ.

رواه ابوداؤد، باب مايقول عند النوم، رقم: ٥٠٤٦ و زاد مسلم وَإِنْ أَصْبَحْتَ أَصَبْتَ خَيْرًا، باب الدعاء عند النوم، رقم: ٦٨٨٥

323. हज़रत बरा बिन आज़िब ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझसे इर्शाद फ़रमाया : जब तुम (सोने के लिए) बिस्तर पर आने का इरादा करो तो वुज़ू करो, फिर दाएं करवट पर लेट कर यह दुआ पढ़ो :

तर्जुमा : ऐ अल्लाह! मैंने अपनी जान आप के सुपुर्द कर दी और अपना मामला आपके हवाले कर दिया और आपसे डरते हुए और आप ही की तरफ़ रग़बत करते हुए मैंने आपका सहारा लिया। आपकी ज़ात के अलावा कोई पनाह की जगह और नजात की जगह नहीं है और जो किताब आपने उतारी है, उस पर मैं ईमान ले आया और जो नबी आपने भेजा है उस पर भी मैं ईमान ले आया। रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत बरा ﷺ से फ़रमाया : (अगर इस दुआ को पढ़कर सो जाओ) फिर उस रात तुम्हारी मौत आ जाए तो तुम्हारी मौत इस्लाम पर होगी और अगर सुबह उठोगे तो तुम्हें बड़ी ख़ैर मिलेगी और इस दुआ के बाद कोई और बात न करो (बल्कि सो जाओ)। हज़रत बरा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैं नबी करीम ﷺ के सामने ही इस दुआ को याद करने लगा, तो मैंने (आख़िरी जुमले में) ونبیک الذی ارسلت की जगह وبرسولک الذی ارسلت कहा,

आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : नहीं (बल्कि) وبنبيك الذي ارسلت कहो। (अबूदाऊद)

﴿324﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: إِذَا أَوَى أَحَدُكُمْ إِلَى فِرَاشِهِ فَلْيَنْفُضْ فِرَاشَهُ بِدَاخِلَةِ إِزَارِهِ، فَإِنَّهُ لَا يَدْرِي مَا خَلَفَهُ عَلَيْهِ، ثُمَّ يَقُولُ: بِاسْمِكَ رَبِّي وَضَعْتُ جَنْبِي، وَبِكَ أَرْفَعُهُ، إِنْ أَمْسَكْتَ نَفْسِي فَارْحَمْهَا، وَإِنْ أَرْسَلْتَهَا فَاحْفَظْهَا بِمَا تَحْفَظُ بِهِ عِبَادَكَ الصَّالِحِينَ.

رواه البخاري، كتاب الدعوات، رقم: ٦٣٢٠

324. हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुममें से कोई अपने बिस्तर पर आए तो बिस्तर को अपने तहबन्द के किनारे से तीन मर्तबा झाड़ ले, क्योंकि उसे मालूम नहीं कि उसके बिस्तर पर उसकी ग़ैर मौजूदगी में क्या चीज़ आ गई हो, यानी मुम्किन है कि उसकी ग़ैर मौजूदगी में बिस्तर के अन्दर कोई ज़हरीला जानवर छुप गया हो। फिर कहे :

तर्जुमा : ऐ मेरे रब! मैंने आपका नाम लेकर अपना पहलू बिस्तर पर रखा है और आपके नाम से उसको उठाऊंगा, अगर आप सोने की हालत में मेरी रूह को क़ब्ज़ कर लें तो उस पर रहम फ़रमा दीजिएगा और अगर आप उसे ज़िन्दा रखें तो उसकी इसी तरह हिफ़ाज़त कीजिए जिस तरह आप अपने नेक बन्दों की हिफ़ाज़त फ़रमाते हैं। (बुख़ारी)

﴿325﴾ عَنْ حَفْصَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ إِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْقُدَ وَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى تَحْتَ خَدِّهِ، ثُمَّ يَقُولُ: اَللّٰهُمَّ قِنِي عَذَابَكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ، ثَلَاثَ مَرَّاتٍ.

رواه ابوداؤد، باب مايقول عند النوم، رقم: ٥٠٤٥

325. हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा जो कि रसूलुल्लाह ﷺ की अह्लिया मुहतर्मा हैं फ़रमाती हैं जब रसूलुल्लाह ﷺ सोने का इरादा फ़रमाते, तो अपना दायां हाथ अपने दाएं रुख़सार के नीचे रखते और तीन मर्तबा यह दुआ पढ़ते : **'अल्लाहुम-म क़िनी अज़ा-ब-क यौ-म तबअसु इबा-द-क०'** "ऐ अल्लाह! मुझे अपने अज़ाब से उस दिन बचाइए, जिस दिन आप अपने बन्दों को क़ब्रों से उठाएंगे"। (अबूदाऊद)

﴿326﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: أَمَا لَوْ أَنَّ أَحَدَهُمْ يَقُولُ حِينَ يَأْتِي أَهْلَهُ: بِسْمِ اللهِ، اَللّٰهُمَّ جَنِّبْنِي الشَّيْطَانَ وَجَنِّبِ الشَّيْطَانَ مَا رَزَقْتَنَا، ثُمَّ قُدِّرَ بَيْنَهُمَا فِي ذٰلِكَ أَوْ قُضِيَ وَلَدٌ لَمْ يَضُرَّهُ شَيْطَانٌ أَبَدًا.

رواه البخاري، باب مايقول اذا اتى اهله، رقم: ٥١٦٥

326. हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब कोई अपनी बीवी के पास आए और यह दुआ पढ़े : **'बिस्मिल्लाह अल्लाहुम-म जन्निब निश-शैता-न व जन्निबिश-शैता-न मा र-ज़क़-तना'** फिर उस वक़्त की हमबिस्तरी से अगर उनके यहां बच्चा पैदा हुआ तो उसे शैतान कभी नुक़सान न पहुंचा सकेगा, यानी शैतान उस बच्चे को गुमराह करने में कामयाब न हो सकेगा।

तर्जुमा : अल्लाह तआला के नाम से यह काम करता हूं, ऐ अल्लाह! मुझे शैतान से बचाइए और जो औलाद आप हम को अ़ता फ़रमाएं उनको भी शैतान से बचाइए। (बुख़ारी)

﴿327﴾ عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ اَبِيْهِ عَنْ جَدِّهٖ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: اِذَا فَزِعَ اَحَدُكُمْ فِي النَّوْمِ فَلْيَقُلْ: اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ غَضَبِهٖ وَ عِقَابِهٖ وَشَرِّ عِبَادِهٖ، وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِيْنِ وَاَنْ يَحْضُرُوْنِ فَاِنَّهَا لَنْ تَضُرَّهُ قَالَ: فَكَانَ عَبْدُاللّٰهِ بْنُ عَمْرٍو يُعَلِّمُهَا مَنْ بَلَغَ مِنْ وَلَدِهٖ، وَمَنْ لَمْ يَبْلُغْ مِنْهُمْ كَتَبَهَا فِي صَكٍّ ثُمَّ عَلَّقَهَا فِيْ عُنُقِهٖ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب دعاء الفزع في النوم، رقم: ٣٥٢٨

327. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुममें से कोई शख़्स सोते हुए घबरा जाए, तो यह कलिमात कहे : "मैं अल्लाह तआला के मुकम्मल, हर ऐब और कमी से पाक क़ुरआनी कलिमों के ज़रिए उसके ग़ुस्सा से, उसके अ़ज़ाब से, उसके बन्दों की बुराई से, शैतानों के वस्वसों से और इस बात से कि शैतान मेरे पास आए, पनाह मांगता हूं" तो वह ख़्वाब उसको कोई नुक़सान नहीं पहुंचाएगा। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رضی اللہ عنہ (अपने ख़ानदान की) औलाद में जो ज़रा समझदार होते, उनको यह दुआ सिखाते थे और नासमझ के लिए यह दुआ काग़ज़ पर लिखकर उनके गले में डाल देते थे। (तिर्मिज़ी)

﴿328﴾ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّهٗ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: اِذَا رَاٰى اَحَدُكُمُ الرُّؤْيَا يُحِبُّهَا فَاِنَّمَا هِيَ مِنَ اللّٰهِ فَلْيَحْمَدِ اللّٰهَ عَلَيْهَا وَ لْيُحَدِّثْ بِمَا رَاٰى، وَاِذَا رَاٰى غَيْرَ ذٰلِكَ مِمَّا يَكْرَهُهٗ فَاِنَّمَا هِيَ مِنَ الشَّيْطَانِ فَلْيَسْتَعِذْ بِاللّٰهِ مِنْ شَرِّهَا وَلَا يَذْكُرْهَا لِاَحَدٍ فَاِنَّهَا لَا تَضُرُّهٗ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب صحيح، باب مايقول اذا رأى رؤيا يكرهها، رقم: ٣٤٥٣

328. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि उन्होंने नबी करीम ﷺ को यह

इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जब तुममें से कोई शख़्स अच्छा ख़्वाब देखे तो वह अल्लाह तआला की तरफ़ से है, लिहाज़ा उस पर अल्लाह तआला की तारीफ़ करे और उसे ब्यान करे और अगर बुरा ख़्वाब देखे तो यह शैतान की तरफ़ से है, उसे चाहिए कि उस ख़्वाब के शर से अल्लाह तआला की पनाह मांगे और किसी के सामने उसे ब्यान न करे तो बुरा ख़्वाब उसे नुक़सान न देगा। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : अल्लाह तआला की पनाह मांगने के लिए 'अऊज़ु बिल्लाहि मिन शर्रिहा०' "मैं इस ख़्वाब की बुराई से अल्लाह तआला की पनाह लेता हूं" कहे।

﴾329﴿ عَنْ اَبِيْ قَتَادَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: الرُّؤْيَا مِنَ اللهِ، وَ الْحُلْمُ مِنَ الشَّيْطَانِ، فَإِذَا رَاٰى اَحَدُكُمْ شَيْئًا يَكْرَهُهُ فَلْيَنْفِثْ حِيْنَ يَسْتَيْقِظُ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، وَيَتَعَوَّذْ مِنْ شَرِّهَا فَإِنَّهَا لَا تَضُرُّهُ. رواه البخاري، باب النفث في الرقية، رقم: ٥٧٤٧

329. हज़रत अबू क़तादा ﷺ रिवायत करते हैं कि मैंने नबी करीम ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अच्छा ख़्वाब अल्लाह तआला की तरफ़ से है और बुरा ख़्वाब (जिसमें घबराहट हो) शैतान की तरफ़ से है। जब तुम में से कोई ख़्वाब में नापसन्दीदा चीज़ देखे तो जिस वक़्त उठे (अपनी बाईं तरफ़) तीन मर्तबा थुथकारे और उस ख़्वाब की बुराई से अल्लाह तआला की पनाह मांगे, तो वह ख़्वाब उस शख़्स को नुक़सान न पहुंचाएगा। (बुख़ारी)

﴾330﴿ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِذَا اَوَى اَحَدُكُمْ إِلَى فِرَاشِهِ، ابْتَدَرَهُ مَلَكٌ وَشَيْطَانٌ، يَقُوْلُ الشَّيْطَانُ: اِخْتِمْ بِشَرٍّ، وَيَقُوْلُ الْمَلَكُ: اِخْتِمْ بِخَيْرٍ، فَإِنْ ذَكَرَ اللهَ ذَهَبَ الشَّيْطَانُ وَبَاتَ الْمَلَكُ يَكْلَؤُهُ، وَإِذَا اسْتَيْقَظَ اِبْتَدَرَهُ مَلَكٌ وَشَيْطَانٌ، يَقُوْلُ الشَّيْطَانُ: اِفْتَحْ بِشَرٍّ وَيَقُوْلُ الْمَلَكُ: اِفْتَحْ بِخَيْرٍ فَإِنْ قَالَ: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ رَدَّ اِلَيَّ نَفْسِيْ بَعْدَ مَوْتِهَا وَلَمْ يُمِتْهَا فِيْ مَنَامِهَا، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ يُمْسِكُ السَّمَاءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهِ اِنَّ اللهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ يُحْيِي الْمَوْتٰى وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، فَإِنْ خَرَّ مِنْ دَابَّةٍ مَاتَ شَهِيْدًا، وَإِنْ قَامَ فَصَلّٰى صَلّٰى فِي الْفَضَائِلِ.

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح على شرط مسلم ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ١/٥٤٨

330. हज़रत जाबिर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुममें से कोई अपने बिस्तर पर सोने के लिए आता है तो फ़ौरन एक फ़रिश्ता और

एक शैतान उसके पास आते हैं। शैतान कहता है कि अपने बेदारी के वक़्त को बुराई पर ख़त्म कर, और फ़रिश्ता कहता है : इसे भलाई पर ख़त्म कर। अगर वह अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करके सोया है तो शैतान उसके पास से चला जाता है और रात भर एक फ़रिश्ता उसकी हिफ़ाज़त करता है। फिर जब वह बेदार होता है, तो एक फ़रिश्ता और शैतान फ़ौरन उसके पास आते हैं। शैतान उससे कहता है : अपनी बेदारी को बुराई से शुरू कर और फ़रिश्ता कहता है : भलाई से शुरू कर। फिर अगर वह यह दुआ़ पढ़ लेता है : उसके बाद अगर वह किसी जानवर से गिर कर मर जाए (या किसी और वजह से उसकी मौत वाके हो जाए) तो वह शहादत की मौत मरा, और अगर ज़िन्दा रहा और खड़े होकर नमाज़ पढ़ी, तो उसे उस नमाज़ पर बड़े दर्जे मिलते हैं।

तर्जुमा : तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआ़ला के लिए हैं, जिन्होंने मेरी जान मुझको वापस लौटा दी और मुझे सोने की हालत में मौत न दी। तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआ़ला के लिए हैं, जिन्होंने आसमान को अपनी इजाज़त के बग़ैर ज़मीन पर गिरने से रोका हुआ है। यक़ीनन अल्लाह तआ़ला लोगों पर बड़ी शफ़क़त करने वाले, मेहरबानी फ़रमाने वाले हैं। तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआ़ला के लिए हैं, जो मुर्दों को ज़िन्दा करते हैं और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखते हैं। (मुस्नद अहमद)

﴿331﴾ عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِأَبِي: يَا حُصَيْنُ! كَمْ تَعْبُدُ الْيَوْمَ إِلٰهًا؟ قَالَ أَبِي: سَبْعَةً: سِتَّةً فِي الْأَرْضِ، وَوَاحِدًا فِي السَّمَاءِ، قَالَ: فَأَيُّهُمْ تَعُدُّ لِرَغْبَتِكَ وَرَهْبَتِكَ؟ قَالَ: الَّذِي فِي السَّمَاءِ، قَالَ: يَا حُصَيْنُ! أَمَا إِنَّكَ لَوْ أَسْلَمْتَ عَلَّمْتُكَ كَلِمَتَيْنِ تَنْفَعَانِكَ، قَالَ: فَلَمَّا أَسْلَمَ حُصَيْنٌ قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ! عَلِّمْنِي الْكَلِمَتَيْنِ اللَّتَيْنِ وَعَدْتَنِي، فَقَالَ: قُلْ: اَللّٰهُمَّ أَلْهِمْنِي رُشْدِي، وَأَعِذْنِي مِنْ شَرِّ نَفْسِي.

رواه الترمذي، وقال: هذا حديث حسن غريب، باب قصة تعليم دعاء ......، رقم: ٣٤٨٣

331. हज़रत इमरान बिन हुसैन ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मेरे वालिद से पूछा : तुम कितने माबूदों की इबादत करते हो? मेरे वालिद ने जवाब दिया : सात माबूदों की इबादत करता हूं, छ : ज़मीन में हैं और एक आसमान में है। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम उम्मीद व ख़ौफ़ की हालत में किस को पुकारते हो? उन्होंने अ़र्ज़ किया : उस माबूद को जो आसमान में है। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हुसैन! अगर तुम इस्लाम ले आओ तो मैं तुम्हें दो कलिमे सिखाऊंगा, जो तुम को

फ़ायदा देंगे। जब हज़रत हुसैन ﷺ मुसलमान हो गए तो उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ से अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह! आप मुझे वे दो कलिमे सिखाइए, जिनका आपने मुझसे वादा किया था। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : कहो : **'अल्लाहुम-म अलहिम्नी रुश्दी व अइज़्नी मिनशर्रि नफ़्सी'** "ऐ अल्लाह! मेरी भलाई मेरे दिल में डाल दीजिए और मुझे मेरे नफ़्स के शर से बचा लीजिए।" (तिर्मिज़ी)

﴿332﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ اَمَرَهَا اَنْ تَدْعُوَ بِهٰذَا الدُّعَاءِ: اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ مِنَ الْخَيْرِ كُلِّهٖ عَاجِلِهٖ وَآجِلِهٖ مَا عَلِمْتُ مِنْهُ وَمَا لَمْ اَعْلَمْ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ الشَّرِّ كُلِّهٖ عَاجِلِهٖ وَآجِلِهٖ مَاعَلِمْتُ مِنْهُ وَمَالَمْ اَعْلَمْ وَاَسْاَلُكَ الْجَنَّةَ وَمَا قَرَّبَ اِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ اَوْعَمَلٍ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ النَّارِ وَمَا قَرَّبَ اِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ اَوْعَمَلٍ وَاَسْاَلُكَ خَيْرَ مَا سَاَلَكَ عَبْدُكَ وَ رَسُوْلُكَ مُحَمَّدٌ ﷺ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا اسْتَعَاذَ بِكَ عَنْهُ عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ مُحَمَّدٌ ﷺ وَاَسْاَلُكَ مَا قَضَيْتَ لِيْ مِنْ اَمْرٍ اَنْ تَجْعَلَ عَاقِبَتَهٗ رُشْدًا.

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ١/٥٢٢

332. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मझे फ़रमाया कि इन अल्फ़ाज़ से दुआ करो :

तर्जुमा : ऐ अल्लाह! मैं हर क़िस्म की भलाई जल्द मिलने वाली और देर में मिलने वाली, जो मैं जानता हूं और जो मैं नहीं जानता उन तमाम को आपसे तलब करता हूं, और मैं हर क़िस्म के शर से, जो जल्द या देर में आने वाला हो जो मैं जानता हूं और जो मैं नहीं जानता, उन तमाम से आप की पनाह मांगता हूं। मैं आपसे जन्नत का और हर उस क़ौल या अमल का सवाल करता हूं जो जन्नत से क़रीब कर दे। और मैं आपसे जहन्नम से और हर उस क़ौल या अमल से पनाह मांगता हूं जो जहन्नम से क़रीब कर दे। मैं आपसे उन तमाम भलाइयों का सवाल करता हूं जिसका आपके बन्दे और रसूल मुहम्मद ﷺ ने सवाल किया और मैं आपसे हर उस शर से पनाह मांगता हूं जिससे आपके बन्दे और रसूल मुहम्मद ﷺ ने पनाह मांगी और मैं आपसे दरख़्वास्त करता हूं कि जो कुछ आप मेरे हक़ में फ़ैसला फ़रमाएंगे, उसके अंजाम को मेरे लिए बेहतर फ़रमाएं। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿333﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ اِذَا رَاَى مَا يُحِبُّ قَالَ: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ بِنِعْمَتِهٖ تَتِمُّ الصَّالِحَاتُ، وَاِذَا رَاَى مَا يَكْرَهُ قَالَ: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَالٍ.

رواه ابن ماجه، باب فضل الحامدين، رقم: ٣٨٠٣

333. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ जब किसी पसन्दीदा चीज़ को देखते तो फ़रमाते : "तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआ़ला के लिए हैं जिनके फ़ज़्ल से तमाम नेक काम अंजाम पाते हैं"। और जब किसी नागवार चीज़ को देखते, तो फ़रमाते : "तमाम तारीफ़ें हर हाल में अल्लाह तआ़ला ही के लिए हैं"। (इब्ने माजा)

بسم الله الرحمن الرحيم

इकरामे मुस्लिम

बन्दों से मुतअ़ल्लिक़ अल्लाह तआ़ला के अवामिर को रसूलुल्लाह ﷺ के तरीक़े की पाबंदी के साथ पूरा करना और उसमें मुसलमानों की नौइयत का लिहाज़ करना।

मुसलमान का मक़ाम

क़ुरआनी आयतें

قَالَ تَعَالٰى ﴿ وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكُمْ ﴾ [البقرة: ٢٢١]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और एक मुसलमान गुलाम मुशरिक आज़ाद मर्द से कहीं बेहतर है, ख़्वाह वह मुश्रिक मर्द तुमको कितना ही भला क्यों न मालूम होता हो। (बक़रः 221)

وَقَالَ تَعَالٰى ﴿ اَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا فَاَحْيَيْنٰهُ وَجَعَلْنَا لَهٗ نُوْرًا يَّمْشِيْ بِهٖ فِي النَّاسِ كَمَنْ مَّثَلُهٗ فِي الظُّلُمٰتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا ﴾ [الانعام: ١٢٢]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : क्या एक ऐसा शख़्स जो मुर्दा था, फिर हमने उसको ज़िन्दगी बख़्शी और हमने उसको एक ऐसा नूर अ़ता किया, जिसको लिए हुए वह लोगों में चलता फिरता है, भला क्या यह शख़्स उस शख़्स के बराबर हो सकता है जो मुख़्तलिफ़ तारीकियों में पड़ा हुआ हो और उन

तारीकियों से निकल न सकता हो (यानी क्या मुसलमान काफ़िर के बराबर हो सकता है?)। (अन्आम : 122)

وَقَالَ تَعَالَى: ﴿أَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا ط لَا يَسْتَوُونَ﴾ [السجدة: ١٨]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : जो शख़्स मोमिन हो क्या वह उस शख़्स जैसा हो जाएगा, जो बेहुक्म (यानी काफ़िर) हो? (नहीं) वे आपस में बराबर नहीं हो सकते। (सज्दा : 18)

وَقَالَ تَعَالَى: ﴿ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا﴾ [فاطر: ٣٢]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : फिर यह किताब हमने उन लोगों के हाथों में पहुंचाई जिनको हमने अपने (तमाम दुनिया व जहान के) बन्दों में से (ब-एतबार ईमान के) पसन्द फ़रमाया, (मुराद इससे अहले इस्लाम हैं जो ईमान की इस हैसियत से दुनिया वालों में मक़बूल इन्दल्लाह हैं)। (फ़ातिर : 32)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿1﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: أَمَرَنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ أَنْ نُنْزِلَ النَّاسَ مَنَازِلَهُمْ. رواه مسلم في مقدمة صحيحه

1. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हमें रसूलुल्लाह ﷺ ने इस बात का हुक्म फ़रमाया कि हम, लोगों के साथ उनके मरतबों का लिहाज़ करके बर्ताव किया करें। (मुक़द्दमा सही मुस्लिम)

﴿2﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: نَظَرَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِلَى الْكَعْبَةِ فَقَالَ: لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ مَا أَطْيَبَكِ وَأَطْيَبَ رِيْحَكِ، وَأَعْظَمَ حُرْمَتَكِ، وَالْمُؤْمِنُ أَعْظَمُ حُرْمَةً مِنْكِ، إِنَّ اللهَ تَعَالَى جَعَلَكِ حَرَامًا، وَحَرَّمَ مِنَ الْمُؤْمِنِ مَالَهُ وَدَمَهُ وَعِرْضَهُ، وَأَنْ نَظُنَّ بِهِ ظَنًّا سَيِّئًا.

رواه الطبراني في الكبير وفيه: الحسن بن ابي جعفر وهو ضعيف وقد وثق، مجمع الزوائد ٣/٢٠٠

2. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने काबा को

देखकर (ताज्जुब से) इर्शाद फ़रमाया : ला इला-ह इल्लल्लाह (ऐ काबा!) तू किस क़द्र पाकीज़ा है, तेरी ख़ुश्बू किस क़द्र उम्दा है और तू कितना ज़्यादा क़ाबिले एहतराम है, (लेकिन) मोमिन की इज़्ज़त व एहतराम तुझसे ज़्यादा है। अल्लाह तआला ने तुझको एहतराम के क़ाबिल बनाया है और (इसी तरह) मोमिन के माल, ख़ून और इज़्ज़त को भी एहतराम के क़ाबिल बनाया है और (इसी एहतराम की वजह से) इस बात को भी हराम क़रार दिया है कि हम मोमिन के बारे में ज़रा भी बदगुमानी करें। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 3 ﴾ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: يَدْخُلُ فُقَرَاءُ الْمُسْلِمِيْنَ الْجَنَّةَ قَبْلَ اَغْنِيَائِهِمْ بِاَرْبَعِيْنَ خَرِيْفًا.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن، باب ماجاء ان فقراء المهاجرين ... رقم: ٢٣٥٥

3. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुसलमान फ़ुक़रा, मुसलमान मालदारों से चालीस साल पहले जन्नत में दाख़िल होंगे। (तिर्मिज़ी)

﴿ 4 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَدْخُلُ الْفُقَرَاءُ الْجَنَّةَ قَبْلَ الْاَغْنِيَاءِ بِخَمْسِ مِائَةِ عَامٍ، نِصْفِ يَوْمٍ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ماجاء ان فقراء المهاجرين ... رقم: ٢٣٥٣

4. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : फ़ुक़रा मालदारों से आधे दिन पहले जन्नत में दाख़िल होंगे और उस आधे दिन की मिक़दार पांच सौ बरस होगी। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : पिछली हदीस में ग़रीब का अमीर से चालीस साल पहले जन्नत में दाख़िल होने का ज़िक्र है, यह इस सूरत में है कि अमीर और ग़रीब दोनों में माल की रग़बत हो। इस हदीस में पांच सौ साल पहले जन्नत में जाने का ज़िक्र है, यह उस वक़्त है, जबकि ग़रीब में माल की रग़बत न हो और मालदार में माल की रग़बत हो। (जामेउल उसूल लिइब्ने असीर)

﴿ 5 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: تَجْتَمِعُوْنَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيُقَالُ: اَيْنَ فُقَرَاءُ هٰذِهِ الْاُمَّةِ وَمَسَاكِيْنُهَا؟ قَالَ: فَيَقُوْمُوْنَ، فَيُقَالُ لَهُمْ: مَاذَا عَمِلْتُمْ؟ فَيَقُوْلُوْنَ: رَبَّنَا ابْتَلَيْتَنَا فَصَبَرْنَا، وَآتَيْتَ الْاَمْوَالَ وَالسُّلْطَانَ غَيْرَنَا، فَيَقُوْلُ اللهُ: صَدَقْتُمْ،

قَالَ: فَيَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ قَبْلَ النَّاسِ، وَيَبْقَى شِدَّةُ الْحِسَابِ عَلَى ذَوِى الْاَمْوَالِ وَالسُّلْطَانِ۔

(الحديث) رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده حسن ١٦/٤٣٦

5. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन जब तुम लोग जमा होगे, तो उस वक़्त एलान किया जाएगा इस उम्मत के फ़ुक़रा व मसाकीन कहां हैं? (इस एलान पर) वे खड़े हो जाएंगे। उनसे पूछा जाएगा : तुमने क्या आमाल किए थे? वे कहेंगे : हमारे रब! आपने हमारा इम्तिहान लिया हमने सब्र किया। आपने हमारे अलावा दूसरे लोगों को माल और हुक्मरानी दी। अल्लाह तआला फ़रमाएगा : तुम सच कहते हो। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : चुनांचे ये लोग जन्नत में आम लोगों से पहले दाख़िल हो जाएंगे और हिसाब व किताब की सख़्ती मालदारों और हुक्मरानों के लिए रह जाएगी।

(इब्ने हब्बान)

﴿6﴾ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: هَلْ تَدْرُوْنَ مَنْ اَوَّلُ مَنْ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مِنْ خَلْقِ اللّٰهِ؟ قَالُوْا: اَللّٰهُ وَرَسُوْلُهُ اَعْلَمُ، قَالَ: اَوَّلُ مَنْ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مِنْ خَلْقِ اللّٰهِ الْفُقَرَاءُ الْمُهَاجِرُوْنَ الَّذِيْنَ تُسَدُّ بِهِمُ الثُّغُوْرُ، وَتُتَّقَى بِهِمُ الْمَكَارِهُ، وَيَمُوْتُ اَحَدُهُمْ وَحَاجَتُهُ فِيْ صَدْرِهِ لَا يَسْتَطِيْعُ لَهَا قَضَاءً، فَيَقُوْلُ اللّٰهُ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ مَلَائِكَتِهِ: اِئْتُوْهُمْ فَحَيُّوْهُمْ، فَيَقُوْلُ الْمَلَائِكَةُ: رَبَّنَا نَحْنُ سُكَّانُ سَمٰوَاتِكَ وَخِيَرَتُكَ مِنْ خَلْقِكَ، اَفَتَأْمُرُنَا اَنْ نَأْتِيَ هٰؤُلَاءِ، فَنُسَلِّمَ عَلَيْهِمْ؟ قَالَ: اِنَّهُمْ كَانُوْا عِبَادًا يَعْبُدُوْنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْئًا، وَتُسَدُّ بِهِمُ الثُّغُوْرُ وَتُتَّقَى بِهِمُ الْمَكَارِهُ، وَيَمُوْتُ اَحَدُهُمْ وَحَاجَتُهُ فِيْ صَدْرِهِ لَا يَسْتَطِيْعُ لَهَا قَضَاءً، قَالَ: فَتَأْتِيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ عِنْدَ ذٰلِكَ، فَيَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِنْ كُلِّ بَابٍ: سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ۔

رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحيح ١٦/٤٣٨

6. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम जानते हो कि अल्लाह तआला की मख़्लूक़ में कौन सबसे पहले जन्नत में दाख़िल होगा? सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया : अल्लाह तआला और उनके रसूल ही ज़्यादा जानते हैं। इर्शाद फ़रमाया : सबसे पहले जो लोग जन्नत में दाख़िल होंगे वह फ़ुक़रा मुहाजिरीन हैं। जिनके ज़रिए सरहदों की हिफ़ाज़त की जाती है, मुश्किल कामों में (उन्हें आगे रखकर) उनके ज़रिए से बचाव हासिल

उन में से जिसको मौत आती है उसकी हाजत उसके सीने में ही रह जाती है वह उसे पूरा नहीं कर पाता। अल्लाह तआला (क़ियामत के दिन) फ़रिश्तों से फ़रमाएगा : उनके पास जाकर उन्हें सलाम करो, फ़रिश्ते (ताज्जुब से) अ़र्ज़ करेंगे : ऐ हमारे रब! हम तो आपके आसमानों के रहने वाले हैं और आपकी बेहतरीन मख़्लूक़ हैं, (इसके बावजूद) आप हमें हुक्म फ़रमा रहे हैं कि हम उनके पास जाकर उनको सलाम करें (इसकी क्या वजह है?) अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे : (इसकी वजह यह है कि) ये मेरे ऐसे बन्दे थे जो मेरी इबादत करते थे, मेरे साथ किसी को शरीक नहीं ठहराते थे, उनके ज़रिए सरहदों की हिफ़ाज़त की जाती थी, मुश्किल कामों में उन्हें (आगे रखकर) उनके ज़रिए से बचाव हासिल किया जाता था और उनमें से जिसको मौत आती थी, उसकी हाजत उसके सीने में ही रह जाती थी, वह उसे पूरा नहीं कर पाता था। चुनांचे उस वक़्त फ़रिश्ते उनके पास हर दरवाज़े से यूं कहते हुए आएंगे कि तुम्हारे सब्र करने की वजह से तुम पर सलामती हो। इस जहान में तुम्हारा अंजाम कितना ही अच्छा है। (इब्ने हब्बान)

﴿ 7 ﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عَمْرِوبْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: سَيَاتِيْ اُنَاسٌ مِنْ اُمَّتِيْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ نُوْرُهُمْ كَضَوْءِ الشَّمْسِ، قُلْنَا: مَنْ اُوْلَئِكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ؟ فَقَالَ: فُقَرَاءُ الْمُهَاجِرِيْنَ الَّذِيْنَ تُتَّقَى بِهِمُ الْمَكَارِهُ يَمُوْتُ اَحَدُهُمْ وَحَاجَتُهُ فِيْ صَدْرِهٖ يُحْشَرُوْنَ مِنْ اَقْطَارِ الْاَرْضِ

رواه احمد ٢/١٧٧

7. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्र बिन आ़स ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन मेरी उम्मत के कुछ लोग आएंगे, उनका नूर सूरज की रोशनी की तरह होगा। हमने अ़र्ज़ किया : अल्लाह के रसूल! वे कौन लोग होंगे? इर्शाद फ़रमाया : वे फ़ुक़रा मुहाजिरीन होंगे, जिनको मुश्किल कामों में आगे रखकर उनके ज़रिए से बचाव हासिल किया जाता था, उनमें से जिसको मौत आती थी उसकी हाजत उसके सीने में रह जाती थी। उन्हें ज़मीन के मुख़्तलिफ़ हिस्सों से लाकर जमा किया जाएगा। (मुस्नद अहमद)

﴿ 8 ﴾ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: اَللّٰهُمَّ اَحْيِنِيْ مِسْكِيْنًا، وَتَوَفَّنِيْ مِسْكِيْنًا، وَاحْشُرْنِيْ فِيْ زُمْرَةِ الْمَسَاكِيْنِ.

(الحديث) رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ٤/٣٢٢

8. हज़रत अबू सईद ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए

सुना : मुझे मिस्कीन तबीयत बनाकर ज़िन्दा रखिए, मिस्कीनी की हालत में दुनिया से उठाइए और मेरा हश्र मिस्कीनों की जमाअत में फ़रमाइए। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿ 9 ﴾ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ اَبِىْ سَعِيْدٍ رَحِمَهُ اللّٰهُ اَنَّ اَبَا سَعِيْدِ الْخُدْرِىَّ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ شَكَا اِلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ حَاجَتَهُ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِصْبِرْ اَبَا سَعِيْدٍ، فَاِنَّ الْفَقْرَ اِلٰى مَنْ يُّحِبُّنِىْ مِنْكُمْ اَسْرَعُ مِنَ السَّيْلِ مِنْ اَعْلَى الْوَادِى، وَمِنْ اَعْلَى الْجَبَلِ اِلٰى اَسْفَلِهِ.

رواه احمد ورجاله رجال الصحيح الا انه شبه المرسل، مجمع الزوائد ١٠/٤٨٦

9. हज़रत सईद बिन अबी सईद रह० फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ ने रसूलुल्लाह ﷺ से अपनी (तंगदस्ती और) ज़रूरत का इज़्हार किया। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अबू सईद! सब्र करो, तुम में से जो मुझसे मुहब्बत करता है, फ़क्र उस पर ऐसी तेज़ी से आता है, जिस तेज़ी से सैलाब का पानी वादी की ऊंचाई और पहाड़ों की बुलन्दी से नीचे की तरफ़ आता है। (मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 10 ﴾ عَنْ رَافِعِ بْنِ خَدِيْجٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِذَا اَحَبَّ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ عَبْدًا حَمَاهُ الدُّنْيَا كَمَا يَظَلُّ اَحَدُكُمْ يَحْمِىْ سَقِيْمَهُ الْمَاءَ.

رواه الطبراني واسناده حسن، مجمع الزوائد ١٠/٥٠٨

10. हज़रत राफ़ेअ् बिन ख़ुदैज ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब अल्लाह तआ़ला किसी बन्दे से मुहब्बत फ़रमाते हैं तो उसको दुनिया से इस तरह बचाते हैं जिस तरह तुम में से कोई शख़्स अपने मरीज़ को पानी से बचाता है। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 11 ﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَحِبُّوا الْفُقَرَاءَ وَجَالِسُوْهُمْ وَاَحِبَّ الْعَرَبَ مِنْ قَلْبِكَ وَلْتَرُدَّ عَنِ النَّاسِ مَا تَعْلَمُ مِنْ قَلْبِكَ.

رواه الحاكم وقال: صحيح الاسناد ووافقه الذهبي ٤/٣٣٢

11. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : फ़ुक़रा से मुहब्बत करो और उनके साथ बैठो। अरबों से दिल से मुहब्बत करो और जो ऐब तुममें मौजूद हैं वे तुम्हें दूसरों पर तान व तश्नीअ् करने से रोक दें।

(मुस्तदरक हाकिम)

﴿ 12 ﴾ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: رُبَّ أَشْعَثَ أَغْبَرَ ذِيْ طِمْرَيْنِ مُصَفَّحٍ عَنْ أَبْوَابِ النَّاسِ، لَوْ أَقْسَمَ عَلَى اللهِ لَأَبَرَّهُ. رواه الطبراني في الاوسط

وفيه: عبدالله بن موسى التيمي، وقد وثق، وبقية رجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ١٠/٤٦٦

12. हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : बहुत से परागंदा बाल, गर्द आलूद, पुरानी चादरों वाले, लोगों के दरवाज़ों से हटाए जाने वाले, अगर अल्लाह तआला (के भरोसे) पर क़सम खा लें, तो अल्लाह तआला उनकी क़सम को ज़रूर पूरा फ़रमा दें। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : इस हदीस शरीफ़ का मक़सद यह है कि अल्लाह तआला के किसी बन्दे को मैला कुचैला और परागंदा बाल देखकर अपने से कमतर न समझा जाए, क्योंकि बहुत से इस हाल में रहने वाले भी अल्लाह तआला के ख़ास बन्दों में से होते हैं, अलबत्ता वाज़ेह रहे कि हदीस शरीफ़ का मक़सद परागंदा बाल और मैला कुचैला रहने की तर्ग़ीब देना नहीं है। (मआरिफ़ुल हदीस)

﴿ 13 ﴾ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: مَرَّ رَجُلٌ عَلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقَالَ لِرَجُلٍ عِنْدَهُ جَالِسٍ: مَا رَأْيُكَ فِيْ هٰذَا؟ فَقَالَ: رَجُلٌ مِنْ أَشْرَافِ النَّاسِ، هٰذَا وَاللهِ حَرِيٌّ إِنْ خَطَبَ أَنْ يُنْكَحَ، وَإِنْ شَفَعَ أَنْ يُشَفَّعَ، قَالَ: فَسَكَتَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ ثُمَّ مَرَّ رَجُلٌ فَقَالَ لَهُ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا رَأْيُكَ فِيْ هٰذَا؟ فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! هٰذَا رَجُلٌ مِنْ فُقَرَاءِ الْمُسْلِمِيْنَ، هٰذَا حَرِيٌّ إِنْ خَطَبَ أَنْ لَا يُنْكَحَ، وَإِنْ شَفَعَ أَنْ لَا يُشَفَّعَ، وَإِنْ قَالَ أَنْ لَا يُسْمَعَ لِقَوْلِهِ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: هٰذَا خَيْرٌ مِنْ مِلْءِ الْأَرْضِ مِثْلَ هٰذَا.

رواه البخاري، باب فضل الفقر، رقم: ٦٤٤٧

13. हज़रत सहल बिन सअद साइदी ﷺ रिवायत करते हैं कि एक शख़्स रसूलुल्लाह ﷺ के सामने से गुज़रे तो आप ﷺ ने अपने पास बैठे हुए आदमी से पूछा : तुम्हारी इस शख़्स के बारे में क्या राय है? उन्होंने अर्ज़ किया : मुअज़्ज़ज़ लोगों में से है, अल्लाह तआला की क़सम! इस क़ाबिल है कि अगर कहीं निकाह का पैग़ाम दे तो क़ुबूल किया जाए और किसी की सिफ़ारिश करे, तो सिफ़ारिश क़ुबूल की जाए। आप ﷺ यह सुनकर ख़ामोश हो गए। उसके बाद एक और साहब सामने से गुज़रे। आप ﷺ ने उस आदमी से पूछा : तुम्हारी उस शख़्स के बारे में क्या राय है? उस आदमी ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! एक मुसलमान फ़क़ीर है, अगर कहीं निकाह का

पैग़ाम दे तो क़ुबूल न किया जाए, किसी की सिफ़ारिश करे तो क़ुबूल न की जाए और अगर बात कहे तो उसकी बात न सुनी जाए। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर पहले शख़्स जैसों से सारी दुनिया भर जाए, तो भी उन सबसे यह शख़्स बेहतर है। (बुख़ारी)

﴿ 14 ﴾ عَنْ مُصْعَبِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : رَأَى سَعْدٌ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ لَهُ فَضْلًا عَلَى مَنْ دُوْنَهُ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ : هَلْ تُنْصَرُوْنَ وَتُرْزَقُوْنَ اِلَّا بِضُعَفَائِكُمْ؟

رواه البخاري، باب من استعان بالضعفاء..... رقم: ٢٨٩٦

14. हज़रत मुसअ़ब बिन साद ﷺ से रिवायत है कि (उनके वालिद) हज़रत सईद ﷺ का ख़्याल था कि उन्हें उन सहाबा पर फ़ज़ीलत हासिल है, जो उनसे (मालदारी और बहादुरी की वजह से) कम दर्जे के हैं। (उनके ख़्याल की इस्लाह की ग़रज़ से) नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम्हारे कमज़ोरों और बेकसों ही की बरकत से तुम्हारी मदद की जाती है और तुम्हें रोज़ी दी जाती है। (बुख़ारी)

﴿ 15 ﴾ عَنْ اَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: اِبْغُوْنِي الضُّعَفَاءَ فَاِنَّمَا تُرْزَقُوْنَ وَتُنْصَرُوْنَ بِضُعَفَائِكُمْ. رواه ابوداؤد، باب في الانتصار، رقم: ٢٥٩٤

15. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : मुझे कमज़ोरों में तलाश किया करो, इसलिए कि तुम्हारे कमज़ोरों की वजह से तुम्हें रोज़ी मिलती है और तुम्हारी मदद होती है। (अबूदाऊद)

﴿ 16 ﴾ عَنْ حَارِثَةَ بْنِ وَهْبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: اَلَا اَدُلُّكُمْ عَلَى اَهْلِ الْجَنَّةِ؟ كُلُّ ضَعِيْفٍ مُتَضَعِّفٍ لَوْ اَقْسَمَ عَلَى اللهِ لَاَبَرَّهُ، وَاَهْلِ النَّارِ كُلُّ جَوَّاظٍ عُتُلٍّ مُسْتَكْبِرٍ.

رواه البخاري، باب قول الله تعالى واقسموا بالله..... رقم: ٦٦٥٧

16. हज़रत हारिसा बिन वह्ब ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : क्या मैं तुम्हें न बताऊं कि जन्नती कौन हैं? (फिर आप ﷺ ने ख़ुद ही इर्शाद फ़रमाया) हर वह शख़्स जो कमज़ोर हो यानी मामला और बरताव में सख़्त न हो, बल्कि मुतवाज़े और नर्म तबीयत हो, लोग भी उसे कमज़ोर समझते हों (अल्लाह तआला के साथ उसका तअ़ल्लुक़ ऐसा हो कि) अगर वह किसी बात पर अल्लाह तआला की क़सम खा ले (कि फ़्लां बात यूँ होगी) तो अल्लाह तआला उस कस की क़सम (की लाज रखकर उसकी बात को) ज़रूर पूरा कर दें

न बताऊं दोज़ख़ी कौन हैं? (फिर आप ﷺ ने ख़ुद ही इर्शाद फ़रमाया) हर वह शख़्स जो माल जमा करके रखने वाला बख़ील, सख़्त मिज़ाज, मग़रूर हो। (बुख़ारी)

﴿ 17 ﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عَمْرِوبْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ عِنْدَ ذِكْرِ النَّارِ: اَهْلُ النَّارِ كُلُّ جَعْظَرِيٍّ جَوَّاظٍ مُسْتَكْبِرٍ جَمَّاعٍ مَنَّاعٍ وَاَهْلُ الْجَنَّةِ الضُّعَفَاءُ الْمَغْلُوْبُوْنَ. رواه احمد ورجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ١٠/٧٢١

17. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आ़स ؓ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने दोज़ख़ के ज़िक्र के वक़्त इर्शाद फ़रमाया : दोज़ख़ी लोगों में हर सख़्त तबीयत, फ़रबा बदन, इतरा कर चलने वाला, मुतकब्बिर, माल व दौलत को ख़ूब जमा करने वाला और (फिर) उसको ख़ूब रोक कर रखने वाला, यानी साइल को न देने वाला है और जन्नती लोग वे हैं जो कमज़ोर हों, यानी उनका रवैया लोगों के साथ आजिज़ी का हो, वे दबाए जाते हों यानी लोग उन्हें कमज़ोर समझकर दबाते हों।

(मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 18 ﴾ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: ثَلَاثٌ مَنْ كُنَّ فِيْهِ نَشَرَ اللهُ عَلَيْهِ كَنَفَهُ وَاَدْخَلَهُ الْجَنَّةَ: رِفْقٌ بِالضَّعِيْفِ، وَالشَّفَقَةُ عَلَى الْوَالِدَيْنِ، وَالْاِحْسَانُ اِلَى الْمَمْلُوْكِ. رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب فيه اربعة احاديث، رقم: ٢٤٩٤

18. हज़रत जाबिर ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तीन ख़ूबियां जिस शख़्स में पाई जाएं, अल्लाह तआ़ला (क़ियामत के दिन) उसको अपनी रहमत के साए में जगह अ़ता फ़रमाएंगे और उसे जन्नत में दाख़िल कर देंगे : कमज़ोर से नर्म बरताव करना, वालिदैन से मेहरबानी का मामला करना और गुलाम से अच्छा सुलूक करना। (तिर्मिज़ी)

﴿ 19 ﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: يُؤْتَى بِالشَّهِيْدِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيُنْصَبُ لِلْحِسَابِ، ثُمَّ يُؤْتَى بِالْمُتَصَدِّقِ فَيُنْصَبُ لِلْحِسَابِ، ثُمَّ يُؤْتَى بِاَهْلِ الْبَلَاءِ فَلَا يُنْصَبُ لَهُمْ مِيْزَانٌ، وَلَا يُنْصَبُ لَهُمْ دِيْوَانٌ، فَيُصَبُّ عَلَيْهِمُ الْاَجْرُ صَبًّا حَتَّى اِنَّ اَهْلَ الْعَافِيَةِ لَيَتَمَنَّوْنَ فِي الْمَوَاقِفِ اَنَّ اَجْسَادَهُمْ قُرِضَتْ بِالْمَقَارِيْضِ مِنْ حُسْنِ ثَوَابِ اللهِ لَهُمْ.

رواه الطبراني في الكبير وفيه مُجّاعة بن الزبير وثقه احمد وضعفه الدارقطني، مجمع الزوائد ٣/٨٢ ، طبع مؤسسة المعارف

19. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ؓ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया :

क़ियामत के दिन शहीद को लाया जाएगा और उसको हिसाब-किताब के लिए खड़ा कर दिया जाएगा। फिर सदक़ा करने वाले को लाया जाएगा और उसको भी हिसाब किताब के लिए खड़ा कर दिया जाएगा। फिर उन लोगों को लाया जाएगा जो दुनिया की मुख़्तलिफ़ मुसीबतों और तकलीफ़ों में मुब्तला रहे, उनके लिए न मीज़ाने अद्ल क़ायम होगी और न उन के लिए कोई अदालत लगाई जाएगी। फिर उन पर अज्र व इनाम बरसाए जाएंगे कि वे लोग जो दुनिया में आफ़ियत से रहे (उस बेहतरीन अज्र व इनाम को देखकर) तमन्ना करने लगेंगे कि उनके जिस्म (दुनिया में) कैंचियों से काट दिए गए होते (और उस पर वे सब्र करते)। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 20 ﴾ عَنْ مَحْمُوْدِ بْنِ لَبِيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِذَا اَحَبَّ اللهُ قَوْمًا ابْتَلَاهُمْ، فَمَنْ صَبَرَ فَلَهُ الصَّبْرُ وَمَنْ جَزِعَ فَلَهُ الْجَزَعُ.

رواه احمد ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ٣/١١

20. हज़रत महमूद बिन लबीद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब अल्लाह तआला लोगों से मुहब्बत फ़रमाते हैं तो उनको (मुसीबतों में डाल कर) आज़माते हैं, चुनांचे जो सब्र करता है उसके लिए सब्र (का अज्र) लिख दिया जाता है और जो बेसब्री करता है तो उसके लिए बेसब्री लिख दी जाती है (फिर वह रोता-पीटता ही रह जाता है)। (मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 21 ﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ الرَّجُلَ لَيَكُوْنُ لَهُ عِنْدَ اللهِ الْمَنْزِلَةُ فَمَا يَبْلُغُهَا بِعَمَلِهِ، فَمَا يَزَالُ اللهُ يَبْتَلِيْهِ بِمَا يَكْرَهُ حَتّٰى يُبْلِغَهَا. رواه ابويعلى

وفى رواية له: يَكُوْنُ لَهُ عِنْدَ اللهِ الْمَنْزِلَةُ الرَّفِيْعَةُ. ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ٣/١٣

21. हज़रत अबूहुरैरह ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला के यहां एक शख़्स के लिए एक बुलन्द दर्जा मुक़र्रर होता है, (लेकिन) वह अपने अमल के ज़रिए उस दर्जा तक नहीं पहुंच पाता, तो अल्लाह तआला उसको ऐसी चीज़ों (मसलन बीमारियों व परेशानियों वग़ैरह) में मुब्तला करते रहते हैं, जो उसे नागवार होती हैं, यहां तक कि वह उन नागवारियों के ज़रिए उस दर्जा तक पहुंच जाता है। (अबू याला, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 22 ﴾ عَنْ اَبِىْ سَعِيْدٍ الْخُدْرِىِّ وَعَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِىِّ ﷺ قَالَ: مَا يُصِيْبُ الْمُسْلِمَ مِنْ نَصَبٍ وَلَا وَصَبٍ وَلَا هَمٍّ وَلَا حُزْنٍ، وَلَا اَذًى، وَلَا غَمٍّ حَتّٰى الشَّوْكَةِ يُشَاكُهَا إِلَّا كَفَّرَ اللهُ بِهَا مِنْ خَطَايَاهُ. رواه البخارى، باب ماجاء فى كفارة المرض، رقم: ٥٦٤١

22. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी और हज़रत अबू हुरैरह ﷛ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुसलमान जब किसी थकावट, बीमारी, फ़िक्र, रंज व मलाल, तकलीफ़ और ग़म से दोचार होता है, यहां तक कि अगर उसे कोई कांटा भी चुभता है तो अल्लाह तआला उसकी वजह से उसके गुनाहों को माफ़ फ़रमा देते हैं। (बुख़ारी)

﴿ 23 ﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَامِنْ مُسْلِمٍ يُشَاكُ شَوْكَةً فَمَا فَوْقَهَا، إِلَّا كُتِبَتْ لَهُ بِهَا دَرَجَةٌ، وَمُحِيَتْ عَنْهُ بِهَا خَطِيْئَةٌ.

رواه مسلم، باب ثواب المؤمن فيما يصيبه من مرض...... رقم: ٦٥٦١

23. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जब किसी मुसलमान को कांटा चुभता है या उससे भी कोई कम तकलीफ़ पहुंचती है तो उसके बदले अल्लाह तआला की तरफ़ से उसके लिए एक दर्जा लिख दिया जाता है और उसका एक गुनाह माफ़ कर दिया जाता है। (मुस्लिम)

﴿ 24 ﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا يَزَالُ الْبَلَاءُ بِالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنَةِ فِيْ نَفْسِهِ وَوَلَدِهِ وَمَالِهِ حَتّٰى يَلْقَى اللهَ وَمَا عَلَيْهِ خَطِيْئَةٌ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ماجاء في الصبر على البلاء، رقم: ٢٣٩٩

24. हज़रत अबूहुरैरह ﷛ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला के बाज़ ईमान वाले बन्दे और ईमान वाली बन्दी पर अल्लाह तआला की तरफ़ से मसाइब और हवादिस आते रहते हैं, कभी उसकी जान पर, कभी उसकी औलाद पर, कभी उसके माल पर (और उसके नतीजे में उसके गुनाह झड़ते रहते हैं) यहां तक कि वह मरने के बाद अल्लाह तआला से इस हाल में मुलाक़ात करता है कि उसका एक गुनाह भी बाक़ी नहीं रहता। (तिर्मिज़ी)

﴿ 25 ﴾ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِذَا ابْتَلَى اللهُ عَزَّوَجَلَّ الْعَبْدَ الْمُسْلِمَ بِبَلَاءٍ فِيْ جَسَدِهِ، قَالَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ لِلْمَلَكِ: اكْتُبْ لَهُ صَالِحَ عَمَلِهِ الَّذِيْ كَانَ يَعْمَلُهُ، فَإِنْ شَفَاهُ، غَسَلَهُ وَطَهَّرَهُ، وَإِنْ قَبَضَهُ غَفَرَلَهُ وَرَحِمَهُ.

رواه ابويعلى واحمد ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ٣/٣٢

25. हज़रत अनस बिन मालिक ﷛ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला जब किसी बन्दे को जिस्मानी बीमारी में मुब्तला करते हैं

तो अल्लाह तआला फ़रिश्ते को हुक्म देते हैं कि इस बन्दे के वही सब नेक आमाल लिखते रहो जो यह (तंदुरुस्ती के ज़माने) में किया करता था। फिर अगर उसको शिफ़ा देते हैं तो उसे (गुनाहों से) धो कर पाक-साफ़ फ़रमा देते हैं और अगर उसकी रूह क़ब्ज़ कर लेते हैं तो उसकी मग्फ़िरत फ़रमाते हैं और उस पर रहम फ़रमाते हैं।

(अबू याला, मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 26 ﴾ عَنْ شَدَّادِ بْنِ اَوْسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: اِنَّ اللهَ يَقُوْلُ: اِذَا ابْتَلَيْتُ عَبْدًا مِنْ عِبَادِىْ مُؤْمِنًا، فَحَمِدَنِىْ عَلٰى مَا ابْتَلَيْتُهُ فَاَجْرُوا لَهُ كَمَا كُنْتُمْ تُجْرُوْنَ لَهُ وَ هُوَ صَحِيْحٌ.

رواه احمد والطبراني في الكبير والاوسط كلهم من رواية اسماعيل بن عياش عن راشد الصنعاني وهو ضعيف في غير الشاميين وفي الحاشية: راشد بن داؤد شامي فرواية اسماعيل عنه صحيحة، مجمع الزوائد ٢/٢٢

26. हज़रत शद्दाद बिन औस ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ से हदीसे क़ुदसी में अपने रब का यह इर्शाद नक़ल करते हैं : मैं अपने बन्दों में से किसी मोमिन बन्दे को (किसी मुसीबत, परेशानी, बीमारी वग़ैरह में) मुब्तला करता हूं और वह मेरी तरफ़ से इस भेजी हुई परेशानी पर (राज़ी रहते हुए) मेरी हम्द व सना करता है तो (मैं फ़रिश्तों को हुक्म देता हूं कि) उसके उन तमाम नेक आमाल का सवाब वैसे ही लिखते रहो जैसा कि तुम उसकी तन्दुरुस्ती की हालत में लिखा करते थे।

(मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 27 ﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا يَزَالُ الْمَلِيْلَةُ وَ الصُّدَاعُ بِالْعَبْدِ وَالْاَمَةِ وَاِنَّ عَلَيْهِمَا مِنَ الْخَطَايَا مِثْلَ اُحُدٍ، فَمَا يَدَعُهُمَا وَعَلَيْهِمَا مِثْقَالُ خَرْدَلَةٍ.

رواه ابو يعلى ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ٢/٢٩

27. हज़रत अबूहुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : किसी मुसलमान बन्दे और बन्दी पर मुसलसल रहने वाला अन्दरूनी बुख़ार या सर का दर्द उनके गुनाहों में से राई के दाने के बराबर भी किसी गुनाह को नहीं छोड़ते, अगरचे उनके गुनाह उहुद पहाड़ के बराबर हों। (अबू याला, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 28 ﴾ عَنْ اَبِىْ سَعِيْدِ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: صُدَاعُ الْمُؤْمِنِ وَشَوْكَةٌ يُشَاكُهَا اَوْشَيْءٌ يُؤْذِيْهِ يَرْفَعُهُ اللهُ بِهَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ دَرَجَةً، وَيُكَفِّرُ عَنْهُ بِهَا ذُنُوْبَهُ.

رواه ابن ابي الدنيا ورواته ثقات، الترغيب ٤/٢٦٧

28. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह

फ़रमाया : मोमिन के सर का दर्द और वह कांटा जो उसे चुभता है या और कोई चीज़ जो उसे तकलीफ़ देती है अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उसकी वजह से उस मोमिन का एक दर्जा बुलन्द फ़रमाएंगे और उस तकलीफ़ के बाइस उसके गुनाहों को माफ़ फ़रमाएंगे। (इब्ने अबिद्दुन्या, तर्ग़ीब)

﴿ 29 ﴾ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ الْبَاهِلِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَا مِنْ عَبْدٍ تَصَرَّعَ مِنْ مَرَضٍ إِلَّا بَعَثَهُ اللهُ مِنْهُ طَاهِرًا. رواه الطبراني في الكبير ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ٢/٣١

29. हज़रत अबू उमामा बाहिली ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो बन्दा बीमारी की वजह से (अल्लाह तआ़ला की तरफ़ मुतवज्जह होकर) गिड़गिड़ाता है, तो अल्लाह तआ़ला उसको बीमारी से इस हाल में शिफ़ा अ़ता फ़रमाएंगे कि वह गुनाहों से बिल्कुल पाक-साफ़ होगा। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 30 ﴾ عَنِ الْحَسَنِ رَحِمَهُ اللهُ مُرْسَلًا مَرْفُوعًا قَالَ: إِنَّ اللهَ لَيُكَفِّرُ عَنِ الْمُؤْمِنِ خَطَايَاهُ كُلَّهَا بِحُمَّى لَيْلَةٍ. رواه ابن أبي الدنيا وقال ابن المبارك عقب روايته له انه من جيد الحديث

ثم قال ولشواهده كثيرة تؤكد بعضها بعضا، اتحاف ٩/٥٢٦

30. हज़रत हसन रह० नबी करीम ﷺ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि अल्लाह तआ़ला एक रात के बुख़ार से मोमिन के सारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा देते हैं। (इब्ने अबिद्दुन्या, इत्तहाफ़)

﴿ 31 ﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: قَالَ اللهُ تَعَالَى: إِذَا ابْتَلَيْتُ عَبْدِيَ الْمُؤْمِنَ وَلَمْ يَشْكُنِي إِلَى عُوَّادِهِ أَطْلَقْتُهُ مِنْ إِسَارِي، ثُمَّ أَبْدَلْتُهُ لَحْمًا خَيْرًا مِنْ لَحْمِهِ، وَدَمًا خَيْرًا مِنْ دَمِهِ، ثُمَّ يَسْتَأْنِفُ الْعَمَلَ.

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح على شرط الشيخين ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ١/٣٤٩

31. हज़रत अबूहुरैरह ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ से हदीसे कुदसी में अल्लाह तआ़ला का यह इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं : जब मैं अपने मोमिन बन्दे को (किसी बीमारी में) मुब्तिला करता हूं, फिर वह अपनी इयादत करने वालों से मेरी शिकायत नहीं करता तो मैं उसे अपनी क़ैद से आज़ाद कर देता हूँ यानी उस के गुनाह माफ़ कर देता हूं। फिर उसे उसके गोश्त से बेहतर गोश्त देता हूँ और उसके ख़ून से बेहतर ख़ून देता हूँ यानी उस को तन्दुरुस्ती दे देता हूँ फिर अब वह दुबारा (बिमारी से उठने के बाद) नए सिरे से अमल करना शुरू करता है (क्योंकि पिछले तमाम गुनाह माफ़ हो चुके होते हैं)।

﴾ 32 ﴿ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ وُعِكَ لَيْلَةً فَصَبَرَ وَرَضِيَ بِهَا عَنِ اللهِ عَزَّوَجَلَّ خَرَجَ مِنْ ذُنُوْبِهِ كَيَوْمِ وَلَدَتْهُ اُمُّهُ.

رواه ابن ابي الدنيا في كتاب الرضا وغيره، الترغيب ٤/٢٩٩

32. हज़रत अबूहुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी-ए- करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स को एक रात बुख़ार आए और वह सब्र करे और उस बुख़ार के बावजूद अल्लाह तआला से राज़ी रहे, तो वह अपने गुनहों से इस तरह पाक साफ़ हो जाएगा जैसा कि उस दिन था, जिस दिन उस की माँ ने उस को जना था। (इब्न अबिद्दुनिया, तर्ग़ीब)

﴾ 33 ﴿ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ رَفَعَهُ اِلَى النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: يَقُوْلُ اللهُ عَزَّوَجَلَّ: مَنْ اَذْهَبْتُ حَبِيْبَتَيْهِ فَصَبَرَ وَاحْتَسَبَ لَمْ اَرْضَ لَهُ ثَوَابًا دُوْنَ الْجَنَّةِ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ماجاء في ذهاب البصر، رقم: ٢٤٠١

33. हज़रत अबूहुरैरह ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ से हदीसे क़ुदसी में अपने रब का यह इर्शाद मुबारक नक़्ल फ़रमाते हैं : जिस बन्दे की मैं दो महबूब तरीन चीज़ें यानी आँखें ले लूँ और वह सब्र करे और अज्र व सवाब की उम्मीद रखे तो मैं उस के लिए जन्नत से कम बदला पर राज़ी नहीं हूँगा। (तिर्मिज़ी)

﴾ 34 ﴿ عَنْ اَبِيْ مُوْسٰى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِذَا مَرِضَ الْعَبْدُ اَوْ سَافَرَ كُتِبَ لَهُ مِثْلُ مَا كَانَ يَعْمَلُ مُقِيْمًا صَحِيْحًا.

رواه البخاري، باب يكتب للمسافر ... رقم: ٢٩٩٦

34. हज़रत अबू मूसा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब बन्दा बीमार पड़ जाता है या सफ़र पर जाता है तो उसके लिए उस जैसे आमाल का अज्र व सवाब लिखा जाता है, जो आमाल वह तंदुरुस्ती या घर पर क़ियाम की हालत पर किया करता था। (बुख़ारी)

﴾ 35 ﴿ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اَلتَّاجِرُ الصَّدُوْقُ الْاَمِيْنُ، مَعَ النَّبِيِّيْنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَاءِ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن، باب ماجاء في التجار ... رقم: ١٢٠٩

35. हज़रत अबू सईद ﷺ रिवायत कहते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : पूरी सच्चाई और अमानतदारी के साथ कारोबार करने वाला ताजिर अम्बिया, सिद्दीक़ीन

और शुहदा के साथ होगा। (तिर्मिज़ी)

﴿ 36 ﴾ عَنْ رِفَاعَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: إِنَّ التُّجَّارَ يُبْعَثُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فُجَّارًا، إِلَّا مَنِ اتَّقَى اللهَ وَبَرَّ وَصَدَقَ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ماجاء في التجار...، رقم: ١٢١٠

36. हज़रत रिफ़ाअः ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ताजिर लोग क़ियामत के दिन गुनाहगार उठाए जाएंगे, सिवाए उन ताजिरों के जिन्होंने अपनी तिजारत में परहेज़गारी अख़्तियार की, यानी ख़ियानत और फ़रेबदही वग़ैरह में मुब्तला नहीं हुए और नेकी की यानी अपने तिजारती मामलों में लोगों के साथ अच्छा सुलूक किया और सच पर क़ायम रहे। (तिर्मिज़ी)

﴿ 37 ﴾ عَنْ أُمِّ عُمَارَةَ ابْنَةِ كَعْبٍ الْأَنْصَارِيَّةِ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ عَلَيْهَا فَقَدَّمَتْ إِلَيْهِ طَعَامًا، فَقَالَ: كُلِي، فَقَالَتْ: إِنِّي صَائِمَةٌ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: إِنَّ الصَّائِمَ تُصَلِّي عَلَيْهِ الْمَلَائِكَةُ إِذَا أُكِلَ عِنْدَهُ حَتَّى يَفْرُغُوا، وَرُبَّمَا قَالَ: حَتَّى يَشْبَعُوا.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ماجاء في فضل الصائم اذا اكل عنده، رقم: ٧٨٥

37. हज़रत काब ﷺ की साहबज़ादी उम्मे उमारा अन्सारिया रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ उनके यहां तशरीफ़ लाए। उन्होंने आपकी ख़िदमत में खाना पेश किया। आप ﷺ ने उनसे फ़रमाया : तुम भी खाओ। उन्होंने अर्ज़ किया : मेरा रोज़ा है। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब रोज़ेदार के सामने खाना खाया जाता है तो खाने वालों के फ़ारिग़ होने तक फ़रिश्ते उस रोज़ेदार के लिए रहमत की दुआ करते रहते हैं। (तिर्मिज़ी)

﴿ 38 ﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِنَّ شَجَرَةً كَانَتْ تُؤْذِي الْمُسْلِمِينَ، فَجَاءَ رَجُلٌ فَقَطَعَهَا، فَدَخَلَ الْجَنَّةَ.

رواه مسلم، باب فضل ازالة الاذى عن الطريق، رقم: ٦٦٧٢

38. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : एक दरख़्त मुसलमानों को तकलीफ़ देता था। एक शख़्स ने आकर उसे काट दिया, तो (इस अमल की वजह से) जन्नत में दाख़िल हो गया। (मुस्लिम)

﴿ 39 ﴾ عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ اَنَّ النَّبِیَّ ﷺ قَالَ لَہٗ: اُنْظُرْ فَاِنَّکَ لَسْتَ بِخَیْرٍ مِنْ اَحْمَرَ وَلَا اَسْوَدَ اِلَّا اَنْ تَفْضُلَہٗ بِتَقْوٰی۔ رواہ احمد ۵/۱۵۸

36. हज़रत अबूज़र ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने उनसे इर्शाद फ़रमाया : देखो! तुम अपनी ज़ात से न किसी गोरे से बेहतर हो, न किसी काले से, अलबत्ता तुम तक़्वा की वजह से अफ़ज़ल हो सकते हो। (मुस्नद अहमद)

﴿ 40 ﴾ عَنْ ثَوْبَانَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: اِنَّ مِنْ اُمَّتِیْ مَنْ لَوْ جَاءَ اَحَدَکُمْ یَسْاَلُہٗ دِیْنَارًا لَمْ یُعْطِہٖ، وَلَوْ سَاَلَہٗ دِرْھَمًا لَمْ یُعْطِہٖ، وَلَوْ سَاَلَہٗ فِلْسًا لَمْ یُعْطِہٖ، وَلَوْ سَاَلَ اللّٰہَ الْجَنَّۃَ اَعْطَاہُ اِیَّاھَا، ذِیْ طِمْرَیْنِ لَا یُؤْبَہُ لَہٗ لَوْ اَقْسَمَ عَلَی اللّٰہِ لَاَبَرَّہٗ۔

رواہ الطبرانی فی الاوسط ورجالہ الصحیح مجمع الزوائد ۱۰/۴۶۶

40. हज़रत सौबान ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरी उम्मत में कुछ लोग ऐसे हैं कि उनमें से कोई शख़्स तुममें से किसी के पास आए और दीनार मांगे तो वह उसको न दे, अगर एक दिरहम मांगे तो वह भी न दे और अगर एक पैसा मांगे तो वह उसको एक पैसा तक न दे (लेकिन अल्लाह तआ़ला के यहां उसका यह मक़ाम है कि) अगर वह अल्लाह तआ़ला से जन्नत मांग ले तो अल्लाह तआ़ला उसको जन्नत दे दें। (उस शख़्स के बदन पर सिर्फ़) दो पुरानी चादरें हों, उसकी बिल्कुल परवाह न की जाती हो (लेकिन) अगर वह अल्लाह तआ़ला (के भरोसे) पर क़सम खा बैठे तो अल्लाह तआ़ला ज़रूर उसकी क़सम को पूरा कर दें। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

हुस्ने अख़्लाक़

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللهُ تَعَالٰى: ﴿وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ﴾ [الحجر: ٨٨]

अल्लाह तआला का अपने रसूल ﷺ से ख़िताब है : और मुसलमानों पर शफ़क़त रखिए। (हजर : 88)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ لا اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ۔ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِى السَّرَّآءِ وَالضَّرَّآءِ وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ط وَاللهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ﴾ [ال عمران ١٣٣-١٣٤]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और अपने रब की बख़्शिश की तरफ़ दौड़ो और उस जन्नत की तरफ़ जिसकी चौड़ाई ऐसी है जैसे आसमानों का और ज़मीनों का फैलाव, जो अल्लाह तआला से डरने वालों के लिए तैयार की गई है (यानी उन आला दर्जे के मुसलमानों के लिए हैं) जो ख़ुशहाली और तंगदस्ती दोनों हालतों में नेक कामों में ख़र्च करते रहते हैं और ग़ुस्सा को ज़ब्त करने वाले हैं और लोगों को माफ़ करने वाले हैं और अल्लाह तआला ऐसे नेक लोगों को पसन्द करते हैं। (आले इमरान : 133)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا﴾

[الفرقان: ٦٣]

एक जगह इर्शाद है : और रहमान के (ख़ास) बन्दे वे हैं जो ज़मीन पर आजिज़ी के साथ चलते हैं। (फ़ुरक़ान : 63)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿ وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ﴾ [الشورى: ٤٠]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : (और बराबर का बदला लेने के लिए हमने इजाज़त दे रखी है कि) बुराई का बदला तो उसी तरह की बुराई है (लेकिन इसके बावजूद) जो शख़्स दरगुज़र करे और (बाहमी मामले की) इस्लाह कर ले (जिससे दुश्मनी ख़त्म हो जाए और दोस्ती हो जाए कि यह माफ़ी से भी बढ़ कर है) तो उसका सवाब अल्लाह तआला के ज़िम्मे है (और जो बदला लेने में ज़्यादती करने लगे, तो सुन ले कि) वाक़ई अल्लाह तआला ज़ालिमों को पसन्द नहीं करते। (शूरा : 40)

وَقَالَ تَعَالٰى : ﴿ وَاِذَا مَا غَضِبُوْا هُمْ يَغْفِرُوْنَ ﴾ [الشورى: ٣٧]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और जब गुस्सा होते हैं तो माफ़ कर देते हैं। (शूरा : 37)

وَقَالَ تَعَالٰى حِكَايَةً عَنْ قَوْلِ لُقْمٰنَ: ﴿ وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِى الْاَرْضِ مَرَحًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ۚ وَاقْصِدْ فِىْ مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ؕ اِنَّ اَنْكَرَ الْاَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيْرِ﴾ [لقمن: ١٨-١٩]

हज़रत लुक़मान ने अपने बेटे को नसीहत की : और (बेटा!) लोगों से बेरुख़ी का बरताव न किया करो और ज़मीन पर मुतकब्बिराना चाल से न चला करो। बेशक अल्लाह तआला किसी तकब्बुर करने वाले, शेख़ी मारने वाले को पसन्द नहीं करते और अपनी चाल में एतदाल अख़्तियार करो और (बोलने में) अपनी आवाज़ को पस्त करो, यानी शोर मत मचाओ (अगर ऊंची आवाज़ से बोलना ही कोई कमाल होता तो गधे की आवाज़ अच्छी होती, जबकि) आवाज़ों में सबसे बुरी आवाज़ गधों की आवाज़ है। (लुक़मान : 16-19)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿ 41 ﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: إِنَّ الْمُؤْمِنَ لَيُدْرِكُ بِحُسْنِ خُلُقِهِ دَرَجَةَ الصَّائِمِ الْقَائِمِ. رواه ابوداؤد، باب في حسن الخلق، رقم: ٤٧٩٨

41. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : मोमिन अच्छे अख़्लाक़ की वजह से रोज़ा रखने वाले और रात भर इबादत करने वाले के दर्जे को हासिल कर लेता है। (अबूदाऊद)

﴿ 42 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَكْمَلُ الْمُؤْمِنِيْنَ اِيْمَانًا اَحْسَنُهُمْ خُلُقًا وَخِيَارُكُمْ خِيَارُكُمْ لِنِسَائِكُمْ. رواه احمد ٤٧٢/٢

42. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ईमान वालों में कामिलतरीन मोमिन वह है जिसके अख़्लाक़ सबसे अच्छे हों और तुम में से वे लोग सबसे बेहतर हैं जो अपनी बीवियों के साथ (बरताव में) सबसे अच्छे हों। (मुस्नद अहमद)

﴿ 43 ﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ مِنْ اَكْمَلِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِيْمَانًا اَحْسَنُهُمْ خُلُقًا وَاَلْطَفُهُمْ بِاَهْلِهِ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب في استكمال الايمان...... رقم: ٢٦١٢

43. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : कामिलतरीन ईमान वालों में से वह शख़्स है जिसके अख़्लाक़ सबसे अच्छे हों और जिसका बरताव अपने घर वालों के साथ सबसे ज़्यादा नर्म हो। (तिर्मिज़ी)

﴿ 44 ﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: عَجِبْتُ لِمَنْ يَشْتَرِى الْمَمَالِيْكَ بِمَالِهِ، ثُمَّ يُعْتِقُهُمْ كَيْفَ لَا يَشْتَرِى الْاَحْرَارَ بِمَعْرُوْفِهِ؟ فَهُوَ اَعْظَمُ ثَوَابًا.

رواه ابو الغنائم النرسي في قضاء الحوائج وهو حديث حسن، الجامع الصغير ١٤٩/٢

44. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे ताज्जुब है उस शख़्स पर जो अपने माल से तो गुलामों को खरीदता

है, फिर उनको आज़ाद करता है। वह भलाई का मामला करके आज़ाद आदमियों को क्यों नहीं ख़रीदता, जबकि उसका सवाब बहुत ज़्यादा है? यानी जब वह लोगों के साथ हुस्ने सुलूक करेगा तो लोग उसके गुलाम बन जाएंगे।

(फ़ज़ाउलहवाइज, जामेअ़ सग़ीर)

﴿ 45 ﴾ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَنَا زَعِيْمٌ بِبَيْتٍ فِي رَبَضِ الْجَنَّةِ لِمَنْ تَرَكَ الْمِرَاءَ وَإِنْ كَانَ مُحِقًّا، وَبِبَيْتٍ فِي وَسَطِ الْجَنَّةِ لِمَنْ تَرَكَ الْكَذِبَ وَإِنْ كَانَ مَازِحًا، وَبِبَيْتٍ فِي أَعْلَى الْجَنَّةِ لِمَنْ حَسَّنَ خُلُقَهُ.

رواه ابو داؤد، باب في حسن الخلق، رقم: ٤٨٠٠

45. हज़रत अबू उमामा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं उस शख़्स के लिए जन्नत के अतराफ़ में एक घर (दिलाने) की ज़िम्मेदारी लेता हूं जो हक़ पर होने के बावजूद भी झगड़ा छोड़ दे और उस शख़्स के लिए जन्नत के दर्मियान में एक घर (दिलाने) की ज़िम्मेदारी लेता हूं, जो मज़ाक़ में भी झूठ छोड़ दे और उस शख़्स के लिए जन्नत के बुलन्द तरीन दर्जा में एक घर (दिलाने) की ज़िम्मेदारी लेता हूं जो अपने अख़्लाक़ अच्छे बना ले। (अबूदाऊद)

﴿ 46 ﴾ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ لَقِيَ أَخَاهُ الْمُسْلِمَ بِمَا يُحِبُّ اللهُ لِيَسُرَّهُ بِذٰلِكَ سَرَّهُ اللهُ عَزَّوَجَلَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

رواه الطبراني في الصغير واسناده حسن، مجمع الزوائد ٣٥٣/٨

46. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अपने मुसलमान भाई को ख़ुश करने के लिए इस तरह मिलता है जिस तरह अल्लाह तआ़ला पसन्द फ़रमाते हैं (मसलन ख़न्दापेशानी के साथ) तो अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उसे ख़ुश कर देंगे। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 47 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُوْلُ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: إِنَّ الْمُسْلِمَ الْمُسَدِّدَ لَيُدْرِكُ دَرَجَةَ الصَّوَّامِ الْقَوَّامِ بِآيَاتِ اللهِ بِحُسْنِ خُلُقِهِ وَكَرَمِ ضَرِيْبَتِهِ.

رواه احمد ١٧٧/٢

47. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : वह मुसलमान जो शरीअ़त पर अमल करने

वाला हो, अपनी तबीयत की शराफ़त और अपने अच्छे अख़्लाक़ की वजह से उस शख़्स के दर्जे को पा लेता है जो रात को बहुत ज़्यादा क़ुरआन करीम को नमाज़ में पढ़ने वाला और बहुत रोज़े रखने वाला हो। (मुस्नद अहमद)

﴾ 48 ﴿ عَنْ اَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَا مِنْ شَيْءٍ اَثْقَلُ فِي الْمِيْزَانِ مِنْ حُسْنِ الْخُلُقِ۔ رواه ابو داؤد، باب في حسن الخلق، رقم: ٤٧٩٩

48. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : (क़ियामत के दिन) मोमिन के तराज़ू में अच्छे अख़्लाक़ से ज़्यादा भारी कोई चीज नहीं होगी। (अबूदाऊद)

﴾ 49 ﴿ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: آخِرُ مَا اَوْصَانِيْ بِهِ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ حِيْنَ وَضَعْتُ رِجْلِيْ فِي الْغَرْزِ اَنْ قَالَ لِيْ: اَحْسِنْ خُلُقَكَ لِلنَّاسِ مُعَاذَ بْنَ جَبَلٍ۔

رواه الامام مالك في الموطا، ماجاء في حسن الخلق ص ٧٠٤

49. हज़रत मुआज़ बिन जबल ﷺ से रिवायत है कि आख़िरी नसीहत जो रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे फ़रमाई, जिस वक़्त मैंने अपना पांव रकाब में रख लिया था वह यह थी : मुआज़! अपने अख़्लाक़ को लोगों के लिए अच्छा बनाओ।

(मुअत्ता इमाम मालिक)

﴾ 50 ﴿ عَنْ مَالِكٍ رَحِمَهُ اللهُ اَنَّهُ بَلَغَهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: بُعِثْتُ لِاُتَمِّمَ حُسْنَ الْاَخْلَاقِ۔ رواه الامام مالك في الموطا، ماجاء في حسن الخلق ص ٧٠٥

50. हज़रत मालिक रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि मुझे यह हदीस पहुंची है कि आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं अच्छे अख़्लाक़ को मुकम्मल करने के लिए भेजा गया हूं। (मुअत्ता इमाम मालिक)

﴾ 51 ﴿ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اِنَّ مِنْ اَحَبِّكُمْ اِلَيَّ وَاَقْرَبِكُمْ مِنِّيْ مَجْلِسًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ اَحَاسِنَكُمْ اَخْلَاقًا (الحديث) رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ماجاء في معالي الاخلاق، رقم: ٢٠١٨

51. हज़रत जाबिर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम सबमें मुझे ज़्यादा महबूब और क़ियामत के दिन मेरे सबसे क़रीब वे लोग होंगे जिनके अख़्लाक़ ज़्यादा अच्छे होंगे। (तिर्मिज़ी)

﴿ 52 ﴾ عَنِ النَّوَّاسِ بْنِ سَمْعَانَ الْاَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَاَلْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ عَنِ الْبِرِّ وَالْاِثْمِ؟ فَقَالَ: اَلْبِرُّ حُسْنُ الْخُلُقِ، وَالْاِثْمُ مَاحَاكَ فِيْ صَدْرِكَ، وَكَرِهْتَ اَنْ يَطَّلِعَ عَلَيْهِ النَّاسُ.

رواه مسلم، باب تفسير البر و الاثم، رقم: ٦٥١٦

52. हज़रत नव्वास बिन समआन अन्सारी ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से नेकी और गुनाह के बारे में पूछा। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : नेकी अच्छे अख़्लाक़ का नाम है और गुनाह वह है जो तुम्हारे दिल में खटके और तुम्हें यह बात नापसन्द हो कि लोगों को उसकी ख़बर हो। (मुस्लिम)

﴿ 53 ﴾ عَنْ مَكْحُوْلٍ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْمُؤْمِنُوْنَ هَيِّنُوْنَ لَيِّنُوْنَ كَالْجَمَلِ الْاَنِفِ اِنْ قِيْدَ انْقَادَ، وَاِنْ اُنِيْخَ عَلٰى صَخْرَةٍ اسْتَنَاخَ.

رواه الترمذي مرسلا، مشكوة المصابيح، رقم: ٥٠٨٦

53. हज़रत मकहूल रहमतुल्लाह अ़लैह रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ईमान वाले लोग अल्लाह तआ़ला का बहुत हुक्म मानने वाले और निहायत नर्म तबीयत होते हैं जैसे ताबेदार ऊंट जिधर उसको चलाया जाता है, चला जाता है और उसको किसी चट्टान पर बिठा दिया जाता है तो उसी पर बैठ जाता है। (तिर्मिज़ी, मिश्कातुलमसाबीह)

फ़ायदा : मतलब यह है कि चट्टान पर बैठना बहुत मुश्किल है मगर उसके बावजूद भी वह अपने मालिक की बात मान कर उस पर बैठ जाता है। (मज़मअ़ बिहारिअन्वार)

﴿ 54 ﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلَا اُخْبِرُكُمْ بِمَنْ يَحْرُمُ عَلَى النَّارِ، وَبِمَنْ تَحْرُمُ عَلَيْهِ النَّارُ؟ عَلٰى كُلِّ قَرِيْبٍ هَيِّنٍ سَهْلٍ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب فضل كل قريب هين سهل، رقم: ٢٤٨٨

54. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम्हें न बताऊं कि वह शख़्स कौन है जो आग पर हराम होगा और जिस पर आग हराम होगी? (सुनो मैं बताता हूं) दोज़ख़ की आग हराम है हर ऐसे शख़्स पर जो लोगों के क़रीब होने वाला, निहायत नर्म मिज़ाज और नर्म तबीयत हो। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : लोगों से क़रीब होने वाले से मुराद वह शख़्स है जो नर्मख़ूई की वजह से

लोगों से ख़ूब मिलता जुलता हो और लोग भी उसकी अच्छी ख़सलत की वजह से उससे बेतकल्लुफ़ और मुहब्बत से मिलते हों। (मआरिफ़ुल हदीस)

﴾ 55 ﴿ عَنْ عِيَاضِ بْنِ حِمَارٍ أَخِيْ بَنِي مُجَاشِعٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: إِنَّ اللّٰهَ أَوْحٰى إِلَيَّ أَنْ تَوَاضَعُوْا حَتّٰى لَا يَفْخَرَ أَحَدٌ عَلٰى أَحَدٍ، وَلَا يَبْغِيَ أَحَدٌ عَلٰى أَحَدٍ. (وهو جزء من الحديث) رواه مسلم، باب الصفات التي يعرف بها في الدنيا...... رقم: ٧٢١٠

55. क़बीला बनी मुजाशिअ् के हज़रत अयाज़ बिन हिमार ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला ने मेरी तरफ़ इस बात की वह्य फ़रमाई है कि तुम लोग इस क़द्र तवाज़ो अख़्तियार करो, यहां तक कि कोई किसी पर फ़ख़्र न करे और कोई किसी पर ज़ुल्म न करे। (मुस्लिम)

﴾ 56 ﴿ عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ تَوَاضَعَ لِلّٰهِ رَفَعَهُ اللّٰهُ فَهُوَ فِيْ نَفْسِهِ صَغِيْرٌ وَفِيْ أَعْيُنِ النَّاسِ عَظِيْمٌ وَمَنْ تَكَبَّرَ وَضَعَهُ اللّٰهُ فَهُوَ فِيْ أَعْيُنِ النَّاسِ صَغِيْرٌ وَفِيْ نَفْسِهِ كَبِيْرٌ حَتّٰى لَهُوَ أَهْوَنُ عَلَيْهِمْ مِنْ كَلْبٍ أَوْ خِنْزِيْرٍ.

رواه البيهقي في شعب الايمان ٢٧٦/٦

56. हज़रत उमर ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो अल्लाह तआला (की रज़ा हासिल करने) के लिए तवाज़ो को अख़्तियार करता है, अल्लाह तआला उसको बुलन्द फ़रमाते हैं, जिसका नतीजा यह होता है कि वह अपने ख़्याल और अपनी निगाह में तो छोटा होता है लेकिन लोगों की निगाह में ऊंचा होता है और जो तकब्बुर करता है, अल्लाह तआला उसको गिरा देते हैं, जिसका नतीजा यह होता है कि वह लोगों की निगाहों में छोटा होता है, अगरचे ख़ुद अपने ख़्याल में बड़ा होता है, लेकिन दूसरों की नज़रों में वह कुत्ते, ख़िन्ज़ीर से भी ज़्यादा ज़लील हो जाता है। (बैहक़ी)

﴾ 57 ﴿ عَنْ عَبْدِاللّٰهِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مَنْ كَانَ فِيْ قَلْبِهِ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ مِنْ كِبْرٍ. رواه مسلم، باب تحريم الكبر وبيانه، رقم: ٢٦٧

57. हज़रत अब्दुल्लाह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वह शख़्स जन्नत में नहीं जाएगा, जिसके दिल में ज़र्रा बराबर भी तकब्बुर हो। (मुस्लिम)

﴿ 58 ﴾ عَنْ مُعَاوِيَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ سَرَّهُ اَنْ يَتَمَثَّلَ لَهُ الرِّجَالُ قِيَامًا فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن، باب ماجاء في كراهية قيام الرُّجل للرَّجل، رقم: ٢٧٥٥

58. हज़रत मुआविया ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स इस बात को पसन्द करता हो कि लोग उस (की ताज़ीम) के लिए खड़े रहें, वह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : इस वईद का तअ़ल्लुक़ इस सूरत से है कि जब कोई आदमी ख़ुद यह चाहे कि लोग उसकी ताज़ीम के लिए खड़े हों, लेकिन अगर कोई ख़ुद बिल्कुल न चाहे, मगर दूसरे लोग इकराम और मुहब्बत के जज़्बे में उसके लिए खड़े हो जाएं, तो यह और बात है। (मआरिफ़ुल हदीस)

﴿ 59 ﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمْ يَكُنْ شَخْصٌ اَحَبَّ اِلَيْهِمْ مِنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، قَالَ: وَكَانُوْا اِذَا رَاَوْهُ لَمْ يَقُوْمُوْا لِمَا يَعْلَمُوْنَ مِنْ كَرَاهِيَتِهِ لِذٰلِكَ. رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح غريب، باب ما جاء في كراهية قيام الرجل للرجل، رقم: ٢٧٥٤

59. हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि सहाबा के नज़दीक कोई शख़्स भी रसूलुल्लाह ﷺ से ज़्यादा महबूब नहीं था। उसके बावजूद रसूलुल्लाह ﷺ को देखकर खड़े नहीं होते थे, क्योंकि वे जानते थे कि आप ﷺ उसको नापसन्द फ़रमाते हैं। (तिर्मिज़ी)

﴿ 60 ﴾ عَنْ اَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَا مِنْ رَجُلٍ يُصَابُ بِشَيْءٍ فِيْ جَسَدِهِ فَيَتَصَدَّقُ بِهِ اِلَّا رَفَعَهُ اللهُ بِهِ دَرَجَةً وَحَطَّ عَنْهُ بِهِ خَطِيْئَةً.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث غريب، باب ماجاء في العفو رقم: ١٣٩٣

60. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिस शख़्स को भी (किसी की तरफ़ से) जिस्मानी तकलीफ़ पहुंचे, फिर वह उसको माफ़ कर दे, तो अल्लाह तआला उसकी वजह से एक दर्जा बुलन्द फ़रमा देते हैं और एक गुनाह माफ़ फ़रमा देते हैं। (तिर्मिज़ी)

﴿ 61 ﴾ عَنْ جَوْدَانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنِ اعْتَذَرَ اِلَى اَخِيْهِ بِمَعْذِرَةٍ، فَلَمْ يَقْبَلْهَا، كَانَ عَلَيْهِ مِثْلُ خَطِيْئَةِ صَاحِبِ مَكْسٍ.

رواه ابن ماجه، باب المعاذير، رقم: ٣٧١٨

61. हज़रत जौदान ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अपने मुसलमान भाई के सामने उज़्र पेश करता है और वह उसके उज़्र को क़ुबूल नहीं करता, तो उसको ऐसा गुनाह होगा जैसा नाहक़ टैक्स वुसूल करने वाले का गुनाह होता है। (इब्ने माजा)

﴿ 62 ﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: قَالَ مُوْسَى بْنُ عِمْرَانَ عَلَيْهِ السَّلَامُ: يَا رَبِّ! مَنْ اَعَزُّ عِبَادِكَ عِنْدَكَ؟ قَالَ: مَنْ إِذَا قَدَرَ غَفَرَ.

رواه البيهقى فى شعب الايمان ٦/٣١٩

62. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हज़रत मूसा बिन इमरान ﷺ ने अल्लाह तआ़ला की बारगाह में अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब! आप के बन्दों में आपके नज़दीक ज़्यादा इ़ज़्ज़त वाला कौन है? अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया : वह बन्दा जो बदला ले सकता हो और फिर माफ़ कर दे। (बैहक़ी)

﴿ 63 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عُمَرَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! كَمْ اَعْفُوْ عَنِ الْخَادِمِ؟ فَصَمَتَ عَنْهُ النَّبِيُّ ﷺ، ثُمَّ قَالَ: يَارَسُوْلَ اللّٰهِ! كَمْ اَعْفُوْ عَنِ الْخَادِمِ؟ قَالَ: كُلَّ يَوْمٍ سَبْعِيْنَ مَرَّةً.

رواه الترمذى وقال: هذا حديث حسن غريب،باب ماجاء فى العفو عن الخادم، رقم: ١٩٤٩

63. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि एक साहब नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मैं (अपने) ख़ादिम की ग़लती को कितनी मर्तबा माफ़ करूं? आप ﷺ ख़ामोश रहे। उन्होंने फिर वही अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मैं (अपने) ख़ादिम को कितनी मर्तबा माफ़ करूं? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : रोज़ाना सत्तर मर्तबा। (तिर्मिज़ी)

﴿ 64 ﴾ عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: إِنَّ رَجُلًا كَانَ فِيْمَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ اَتَاهُ الْمَلَكُ لِيَقْبِضَ رُوْحَهُ فَقِيْلَ لَهُ: هَلْ عَمِلْتَ مِنْ خَيْرٍ؟ قَالَ: مَا اَعْلَمُ، قِيْلَ لَهُ: اُنْظُرْ، قَالَ: مَا اَعْلَمُ شَيْئًا غَيْرَ اَنِّيْ كُنْتُ اُبَايِعُ النَّاسَ فِى الدُّنْيَا وَاُجَازِيْهِمْ فَاُنْظِرُ الْمُوْسِرَ وَاَتَجَاوَزُ عَنِ الْمُعْسِرِ، فَاَدْخَلَهُ اللّٰهُ الْجَنَّةَ.

رواه البخارى، باب ماذكر عن بنى اسرائيل، رقم: ٣٤٥١

64. हज़रत हुज़ैफ़ा ؓ फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : तुममें से पहले किसी उम्मत में एक आदमी था। जब मौत का फ़रिश्ता उसकी रूह क़ब्ज़ करने आया (और रूह क़ब्ज़ होने के बाद वह इस दुनिया से दूसरे आलम की तरफ़ मुन्तक़िल हो गया) तो उससे पूछा गया कि तूने दुनिया में कोई नेक अ़मल किया था? उसने अ़र्ज़ किया : मेरे इल्म में मेरा कोई (ऐसा) अ़मल नहीं है। उससे कहा गया कि (अपनी ज़िन्दगी पर) नज़र डाल (और ग़ौर कर!) उसने फिर अ़र्ज़ किया : मेरे इल्म में मेरा कोई (ऐसा) अ़मल नहीं है, सिवाए इसके कि मैं दुनिया में लोगों के साथ ख़रीद व फ़रोख़्त और लेन देन का मामला किया करता था, जिसमें मैं दौलतमंद को मुहलत देता था और तंगदस्तों को माफ़ कर देता था, तो अल्लाह तआ़ला ने उस शख़्स को जन्नत में दाख़िल फ़रमा दिया। (बुख़ारी)

﴿65﴾ عَنْ اَبِیْ قَتَادَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ سَرَّهُ اَنْ يُنْجِيَهُ اللّٰهُ مِنْ كُرَبِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ فَلْيُنَفِّسْ عَنْ مُعْسِرٍ اَوْ يَضَعْ عَنْهُ.

رواه مسلم، باب فضل انظار المعسر......، رقم: ٤٠٠٠

65. हज़रत अबू क़तादा ؓ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स यह चाहता है कि अल्लाह तआ़ला उसको क़ियामत के दिन की तकलीफ़ों से बचा लें, तो उसको चाहिए कि तंगदस्त को (जिस पर उसका क़र्ज़ वग़ैरह हो) मुहलत दे दे या (अपना पूरा मुतालबा या उसका कुछ हिस्सा) माफ़ कर दे। (मुस्लिम)

﴿66﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: خَدَمْتُ النَّبِیَّ ﷺ عَشْرَ سِنِيْنَ بِالْمَدِيْنَةِ وَاَنَا غُلَامٌ لَيْسَ كُلُّ اَمْرِیْ كَمَا يَشْتَهِیْ صَاحِبِیْ اَنْ يَكُوْنَ عَلَيْهِ، مَاقَالَ لِیْ فِيْهَا اُفٍّ قَطُّ، وَمَا قَالَ لِیْ لِمَ فَعَلْتَ هٰذَا، اَمْ اَلَّا فَعَلْتَ هٰذَا.

رواه ابوداؤد، باب فی الحلم واخلاق النبی ﷺ، رقم: ٤٧٧٤

66. हज़रत अनस ؓ फ़रमाते हैं कि मैंने मदीना में दस साल नबी करीम ﷺ की ख़िदमत की। मैं नौ उम्र लड़का था, इसलिए मेरे सारे काम रसूलुल्लाह ﷺ की मर्ज़ी के मुताबिक़ नहीं हो पाते थे, यानी नौउम्री की वजह से मुझ से बहुत-सी कोताहियां भी हो जाती थीं। (लेकिन दस साल की इस मुद्दत में) कभी आप ﷺ ने मुझे उफ़ तक नहीं फ़रमाया और न कभी यह फ़रमाया तुमने यह क्यों किया, या यह क्यों न किया। (अबूदाऊद)

﴿ 67 ﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَجُلًا قَالَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: أَوْصِنِي، قَالَ: لَا تَغْضَبْ، فَرَدَّدَ مِرَارًا، قَالَ: لَا تَغْضَبْ. رواه البخاري، باب الحذر من الغضب، رقم: ٦١١٦

67. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि एक शख़्स ने नबी करीम ﷺ से अर्ज़ किया कि मुझे कोई वसीयत फ़रमा दीजिए। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ग़ुस्सा न किया करो। उस शख़्स ने अपनी (वही) दरख़्वास्त कई बार दुहराई। आप ﷺ ने हर मर्तबा वही फ़रमाया : ग़ुस्सा न किया करो। (बुख़ारी)

﴿ 68 ﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَيْسَ الشَّدِيدُ بِالصُّرَعَةِ، إِنَّمَا الشَّدِيدُ الَّذِي يَمْلِكُ نَفْسَهُ عِنْدَ الْغَضَبِ. رواه البخاري، باب الحذر من الغضب، رقم: ٦١١٤

68. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ताक़तवर वह नहीं है जो (अपने मुक़ाबिल को) पछाड़ दे, बल्कि ताक़तवर वह है जो ग़ुस्से की हालत में अपने आप पर क़ाबू पा ले। (बुख़ारी)

﴿ 69 ﴾ عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ لَنَا: إِذَا غَضِبَ أَحَدُكُمْ وَهُوَ قَائِمٌ فَلْيَجْلِسْ، فَإِنْ ذَهَبَ عَنْهُ الْغَضَبُ وَإِلَّا فَلْيَضْطَجِعْ.

رواه ابوداؤد، باب مايقال عند الغضب، رقم: ٤٧٨٢

69. हज़रत अबूज़र ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुममें से किसी को ग़ुस्सा आए और वह खड़ा हो तो उसको चाहिए कि बैठ जाए, अगर बैठने से ग़ुस्सा चला जाए (तो ठीक है), वरना उसको चाहिए कि लेट जाए। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि जिस हालत की तब्दीली से ज़ेहन को सुकून मिले, उस हालत को अख़्तियार करना चाहिए, ताकि ग़ुस्से का नुक़सान कम-से-कम हो। बैठने की हालत में खड़े होने से कम और लेटने में बैठने से कम नुक़सान का इम्कान है। (मज़ाहिरे हक़)

﴿ 70 ﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: عَلِّمُوا وَبَشِّرُوا وَلَا تُعَسِّرُوا وَإِذَا غَضِبَ أَحَدُكُمْ فَلْيَسْكُتْ. رواه احمد ١/٢٨٣

70. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : लोगों को (दीन) सिखाओ और ख़ुशख़बरियां सुनाओ और दुश्वारियां पैदा न करो और

जब तुममें से किसी को गुस्सा आए तो उसे चाहिए कि ख़ामोशी अख़्तियार कर ले। (मुस्नद अहमद)

﴿ 71 ﴾ عَنْ عَطِيَّةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ الْغَضَبَ مِنَ الشَّيْطَانِ، وَإِنَّ الشَّيْطَانَ خُلِقَ مِنَ النَّارِ، وَإِنَّمَا تُطْفَأُ النَّارُ بِالْمَاءِ، فَإِذَا غَضِبَ أَحَدُكُمْ فَلْيَتَوَضَّأْ.

رواه ابوداؤد، باب مايقال عند الغضب، رقم: ٤٧٨٤

71. हज़रत अतीया ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : गुस्सा शैतान (के असर से) होता है। शैतान की पैदाइश आग से हुई है और आग पानी से बुझाई जाती है, लिहाज़ा जब तुम में से किसी को गुस्सा आए तो उसको चाहिए कि वुज़ू कर ले। (अबूदाऊद)

﴿ 72 ﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا تَجَرَّعَ عَبْدٌ جُرْعَةً أَفْضَلَ عِنْدَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ مِنْ جُرْعَةِ غَيْظٍ يَكْظِمُهَا ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللهِ تَعَالَى. رواه احمد ١٢٨/٢

72. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बन्दा (किसी चीज़ का) ऐसा कोई घूंट नहीं पीता जो अल्लाह तआला के नज़दीक गुस्सा का घूंट पीने से बेहतर हो, जिसको वह महज़ अल्लाह तआला की रज़ा के लिए पी जाए। (मुस्नद अहमद)

﴿ 73 ﴾ عَنْ مُعَاذٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ كَظَمَ غَيْظًا وَهُوَ قَادِرٌ عَلَى أَنْ يُنَفِّذَهُ دَعَاهُ اللهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَى رُؤُوْسِ الْخَلَائِقِ حَتَّى يُخَيِّرَهُ مِنْ أَيِّ الْحُوْرِ الْعِيْنِ شَاءَ.

رواه ابوداؤد، باب من كظم غيظا، رقم: ٤٧٧٧

73. हज़रत मुआज़ ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स गुस्से को पी जाए, जबकि उसमें गुस्सा के तक़ाज़ा को पूरा करने की ताक़त भी हो, (लेकिन उसके बावजूद जिस पर गुस्सा है उसको कोई सज़ा न दे) अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उसको सारी मख़्लूक़ के सामने बुलाएंगे और उसको अख़्तियार देंगे कि जन्नत की हूरों में से जिस हूर को चाहे अपने लिए पसन्द कर ले। (अबूदाऊद)

﴿ 74 ﴾ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ خَزَنَ لِسَانَهُ سَتَرَ اللهُ عَوْرَتَهُ وَمَنْ كَفَّ غَضَبَهُ كَفَّ اللهُ عَنْهُ عَذَابَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَمَنِ اعْتَذَرَ إِلَى اللهِ عَزَّوَجَلَّ قَبِلَ عُذْرَهُ.

رواه البيهقي في شعب الايمان ٣١٥/٦

74. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अपनी ज़बान को रोके रखता है, अल्लाह तआ़ला उसके ऐबों को छुपाते हैं। जो शख़्स अपने गुस्से को रोकता है (और पी जाता है) अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उससे अपने अ़ज़ाब को रोकेंगे और जो शख़्स (अपने गुनाह पर नादिम होकर) अल्लाह तआ़ला से माज़रत करता है, यानी माफ़ी चाहता है, अल्लाह तआ़ला उसके उज़्र को क़ुबूल फ़रमा लेते हैं। (बैहक़ी)

﴿ 75 ﴾ عَنْ مُعَاذٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ لِلْاَشَجِّ اَشَجِّ عَبْدِ الْقَيْسِ: اِنَّ فِيْكَ لَخَصْلَتَيْنِ يُحِبُّهُمَا اللهُ: الْحِلْمُ وَالْاَنَاةُ. (وهو جزء من الحديث)

رواه مسلم، باب الامر بالايمان بالله تعالى ...... رقم: ١١٧

75. हज़रत मुआ़ज़ ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने क़बीला अ़ब्दे क़ैस के सरदार हज़रत अशज ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : तुममें दो ख़स्लतें ऐसी हैं जो अल्लाह तआ़ला को महबूब हैं। एक हिल्म यानी नरमी और बरदाश्त, दूसरे जल्दबाज़ी से काम न करना। (मुस्लिम)

﴿ 76 ﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: يَا عَائِشَةُ! اِنَّ اللهَ رَفِيْقٌ يُحِبُّ الرِّفْقَ، وَيُعْطِيْ عَلَى الرِّفْقِ مَا لَا يُعْطِيْ عَلَى الْعُنْفِ، وَمَا لَا يُعْطِيْ عَلَى مَا سِوَاهُ.

رواه مسلم، باب فضل الرفق، رقم: ٦٦٠١

76. उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आइशा! अल्लाह तआ़ला (ख़ुद भी) नर्म व मेहरबान हैं (और बन्दों के लिए भी उनके आपस के मामलों में) नरमी और मेहरबानी करना उनको पसन्द है, नरमी पर अल्लाह तआ़ला जो कुछ (अज्र व सवाब और मक़ासिद में कामयाबी) अ़ता फ़रमाते हैं, वह सख़्ती पर अ़ता नहीं फ़रमाते और नरमी के अलावा किसी चीज़ पर भी अ़ता नहीं फ़रमाते। (मुस्लिम)

﴿ 77 ﴾ عَنْ جَرِيْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ يُحْرَمِ الرِّفْقَ، يُحْرَمِ الْخَيْرَ.

رواه مسلم، باب فضل الرفق، رقم: ٦٥٩٨

77. हज़रत जरीर ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स नरमी (की सिफ़त) से महरूम रहा, वह (सारी) भलाई से महरूम रहा। (मुस्लिम)

﴿ 78 ﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ اُعْطِيَ حَظَّهُ مِنَ الرِّفْقِ اُعْطِيَ حَظَّهُ مِنْ خَيْرِ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ، وَمَنْ حُرِمَ حَظَّهُ مِنَ الرِّفْقِ حُرِمَ حَظَّهُ مِنْ خَيْرِ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ.

رواه البغوي في شرح السنة ٧٤/١٣

78. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स को (अल्लाह तआला की तरफ़ से) नरमी में हिस्सा दिया गया, उसको दुनिया व आख़िरत की भलाइयों में से हिस्सा दिया गया और जो शख़्स नरमी के हिस्से से महरूम रहा, वह दुनिया व आख़िरत की भलाइयों से महरूम रहा। (शर्हुस्सुन्नः)

﴿ 79 ﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا يُرِيْدُ اللهُ بِأَهْلِ بَيْتٍ رِفْقًا إِلَّا نَفَعَهُمْ وَلَا يَحْرِمُهُمْ إِيَّاهُ إِلَّا ضَرَّهُمْ.

رواه البيهقي في شعب الايمان، مشكاة المصابيح، رقم: ٥١٠٣

79. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला जिन घर वालों को नरमी की तौफ़ीक़ देते हैं उन्हें नरमी के ज़रिए नफ़ा पहुंचाते हैं और जिन घर वालों को नरमी से महरूम रखते हैं उन्हें उसके ज़रिए नुक़सान पहुंचाते हैं। (बैहक़ी, मिशकात)

﴿ 80 ﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا اَنَّ الْيَهُوْدَ اَتَوُا النَّبِيَّ ﷺ فَقَالُوْا: اَلسَّامُ عَلَيْكُمْ، فَقَالَتْ عَائِشَةُ: عَلَيْكُمْ وَلَعَنَكُمُ اللهُ وَغَضِبَ اللهُ عَلَيْكُمْ، قَالَ: مَهْلًا يَا عَائِشَةُ! عَلَيْكِ بِالرِّفْقِ، وَإِيَّاكِ وَالْعُنْفَ وَالْفُحْشَ، قَالَتْ: اَوَلَمْ تَسْمَعْ مَا قَالُوْا؟ قَالَ: اَوَلَمْ تَسْمَعِيْ مَا قُلْتُ؟ رَدَدْتُ عَلَيْهِمْ فَيُسْتَجَابُ لِيْ فِيْهِمْ، وَلَا يُسْتَجَابُ لَهُمْ فِيَّ.

رواه البخاري باب لم يكن النبي ﷺ فاحشا ولا متفاحشا، رقم ٦٠٣٠

80. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि कुछ यहूदी नबी करीम ﷺ के पास आए और कहा, अस्सामुअलैकुम (जिसका मतलब यह है कि तुमको मौत आए), हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने जवाब में कहा : तुम ही को मौत आए और तुम पर अल्लाह की लानत और उसका गुस्सा हो। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आइशा! ठहरो, नरमी अख़्तियार करो, सख़्ती और बदज़ुबानी से बचो। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया : आपने नहीं सुना कि उन्होंने

क्या कहा? रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुमने नहीं सुना कि मैंने उसके जवाब में क्या कहा? मैंने उनकी बात उन ही पर लौटा दी (कि तुम ही को आए) मेरी बद्दुआ उनके हक़ में क़ुबूल होगी और उनकी बद्दुआ मेरे बारे में क़ुबूल नहीं होगी। (बुख़ारी)

﴿ 81 ﴾ عَنْ جَابِرِبْنِ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: رَحِمَ اللهُ رَجُلًا سَمْحًا اِذَا بَاعَ، وَاِذَا اشْتَرٰى، وَاِذَا اقْتَضٰى۔

رواه البخاري،باب السهولة والسماحة في الشراء والبيع......،رقم: ٢٠٧٦

81. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला की रहमत हो उस बन्दे पर जो बेचने, ख़रीदने और अपने हक़ का तक़ाज़ा करने और वुसूल करने में नरमी अख़्तियार करे। (बुख़ारी)

﴿ 82 ﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْمُؤْمِنُ الَّذِيْ يُخَالِطُ النَّاسَ، وَيَصْبِرُ عَلٰى اَذَاهُمْ، اَعْظَمُ اَجْرًا مِنَ الْمُؤْمِنِ الَّذِيْ لَا يُخَالِطُ النَّاسَ وَلَا يَصْبِرُ عَلٰى اَذَاهُمْ۔

رواه ابن ماجه، باب الصبر على البلاء، رقم: ٤٠٣٢

82. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वह मोमिन, जो लोगों से मिलता-जुलता हो और उनसे पहुंचने वाली तकलीफ़ों पर सब्र करता हो, वह उस मोमिन से अफ़ज़ल है, जो लोगों के साथ मेल-जोल न रखता हो और उनसे पहुंचने वाली तकलीफ़ों पर सब्र न करता हो। (इब्ने माजा)

﴿ 83 ﴾ عَنْ صُهَيْبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: عَجَبًا لِاَمْرِ الْمُؤْمِنِ اِنَّ اَمْرَهُ كُلَّهُ لَهُ خَيْرٌ، وَلَيْسَ ذٰلِكَ لِاَحَدٍ اِلَّا لِلْمُؤْمِنِ، اِنْ اَصَابَتْهُ سَرَّاءُ شَكَرَ، فَكَانَ خَيْرًا لَهُ، وَاِنْ اَصَابَتْهُ ضَرَّاءُ صَبَرَ، فَكَانَ خَيْرًا لَهُ۔

رواه مسلم، باب المؤمن امره كله خير، رقم: ٧٥٠٠

83. हज़रत सुहैब ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मोमिन का मामला भी अजीब है, उसके हर मामला और हर हाल में उसके लिए ख़ैर ही ख़ैर है और यह बात सिर्फ़ मोमिन ही को हासिल है। अगर उसको कोई ख़ुशी पहुंचती है, उस पर वह अपने रब का शुक्र अदा करता है, तो यह शुक्र करना उसके लिए ख़ैर का सबब है, यानी उसमें अज्र है और अगर उसे कोई तकलीफ़ पहुंचती है,

उस पर वह सब्र करता है तो यह सब्र करना भी उसके लिए ख़ैर का सबब है, यानी उसमें भी अज्र है। (मुस्लिम)

﴿ 84 ﴾ عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ كَانَ يَقُوْلُ: اَللّٰهُمَّ اَحْسَنْتَ خَلْقِيْ فَاَحْسِنْ خُلُقِيْ۔ (رواه احمد ١/٤٠٣)

84. हज़रत इब्ने मसऊद ؓ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ यह दुआ करते थे : 'या अल्लाह! आपने मेरे जिस्म की ज़ाहिरी बनावट अच्छी बनाई है, मेरे अख़्लाक़ भी अच्छे कर दीजिए।' (मुस्नद अहमद)

﴿ 85 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ اَقَالَ مُسْلِمًا اَقَالَهُ اللّٰهُ عَثْرَتَهُ۔ رواه ابو داؤد، باب فى فضل الاقالة، رقم: ٣٤٦٠

85. हज़रत अबू हुरैरह ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स मुसलमान की बेची या ख़रीदी हुई चीज़ की वापसी पर राज़ी हो जाता है, अल्लाह तआला उसकी लग़्ज़िश को माफ़ फ़रमा देता है। (अबूदाऊद)

﴿ 86 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ اَقَالَ مُسْلِمًا عَثْرَتَهُ، اَقَالَهُ اللّٰهُ عَثْرَتَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ۔ رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحيح [illegible]

86. हज़रत अबू हुरैरह ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो मुसलमान की लग़्ज़िश को माफ़ करे, अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उसकी लग़्ज़िश को माफ़ फ़रमाएंगे। (इब्ने हब्बान)

بسم الله الرحمن الرحيم

मुसलमानों के हुकूक़

क़ुरआनी आयतें

قال الله تعالى: ﴿إنما المؤمنون إخوة﴾ [الحجرات: ١٠]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : मुसलमान आपस में भाई-भाई हैं।

(हुजुरात : 10)

وقال تعالى: ﴿يا أيها الذين آمنوا لا يسخر قوم من قوم عسى أن يكونوا خيرا
منهم ولا نساء من نساء عسى أن يكن خيرا منهن ولا تلمزوا أنفسكم ولا
تنابزوا بالألقاب بئس الاسم الفسوق بعد الإيمان ومن لم يتب فأولئك
هم الظالمون يا أيها الذين آمنوا اجتنبوا كثيرا من الظن إن بعض الظن إثم
ولا تجسسوا ولا يغتب بعضكم بعضا أيحب أحدكم أن يأكل لحم أخيه
ميتا فكرهتموه واتقوا الله إن الله تواب رحيم يا أيها الناس إنا خلقناكم من
ذكر وأنثى وجعلناكم شعوبا وقبائل لتعارفوا إن أكرمكم عند الله أتقاكم إن
الله عليم خبير﴾ [الحجرات: ١١-١٣]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : ईमान वालो! न तो मर्दों को मर्दों पर हंसना चाहिए शायद कि (जिन पर हँसा जाता है) वे उन (हंसने वालों) से (अल्लाह तआला के नज़दीक) बेहतर हों और न औरतों को औरतों पर हँसना चाहिए, शायद कि (जिन पर हँसा जाता है) वे उन (हँसने वाली औरतों) से अल्लाह तआला के नज़दीक बेहतर हों और न एक दूसरे को ताना दो और न एक दूसरे के बुरे नाम रखो (क्योंकि ये सब बातें गुनाह की हैं और) ईमान लाने के बाद (मुसलमानों पर) गुनाह का नाम लगना ही बुरा है और जो इन

हरकतों से बाज़ न आएंगे, तो वे ज़ुल्म करने वाले (और हुक़ूक़ुलइबाद को ज़ाया करने वाले) हैं (तो जो सज़ा ज़ालिमों को मिलेगी, वही उनको मिलेगी)। ईमान वालो! बहुत-सी बदगुमानियों से बचा करो, क्योंकि बाज़ गुमान गुनाह होते हैं (और बाज़ जायज़ भी होते हैं जैसे अल्लाह तआला के साथ अच्छा गुमान रखना, तो इसलिए तहक़ीक़ कर लो। हर मौक़ा और हर मामले में, बदगुमानी न करो) और (किसी के ऐब का) सुराग़ मत लगाया करो और एक दूसरे की ग़ीबत न किया करो, क्या तुममें कोई इस बात को पसन्द करता है कि अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाए, उसको तो तुम बुरा समझते हो और अल्लाह तआला से डरते रहो (और तौबा कर लो) बेशक अल्लाह तआला बड़े माफ़ करने वाले (और) मेहरबान हैं। ऐ लोगो! हम ने तुम (सब) को एक मर्द और एक औरत (यानी आदम व हव्वा) से पैदा किया (उसमें तो सब बराबर हैं और फिर जिस बात में फ़र्क़ रखा, वह यह कि) तुम्हारी क़ौमें और क़बीले बनाए, (यह सिर्फ़ इसलिए) ताकि तुम्हें आपस में पहचान हो (जिसमें मुख़्तलिफ़ मसलहतें हैं, ये मुख़्तलिफ़ क़बाइल इसलिए नहीं कि एक दूसरे पर फ़ख़्र करो, क्योंकि) अल्लाह तआला के नज़दीक तो तुम सबमें बड़ा इज़्ज़त वाला वह है जो तुम में सबसे ज़्यादा परहेज़गार है। अल्लाह तआला ख़ूब जानने वाले (और सबके हाल से) बाख़बर हैं। (हुजुरात : 11-13)

फ़ायदा : ग़ीबत को मरे हुए भाई के गोश्त को खाने की तरह फ़रमाया है। इसका मतलब यह है कि जैसे इंसान का गोश्त नोच-नोच कर खाने से उसको तकलीफ़ होती है, उसी तरह मुसलमान की ग़ीबत से उसको तकलीफ़ होती है, लेकिन जैसे मरे हुए इंसान को तकलीफ़ का असर नहीं होता है उसी तरह जिसकी ग़ीबत होती है उसको भी मालूम न होने तक तकलीफ़ नहीं होती।

وَقَالَ تَعَالَى: يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَلَوْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ ۚ اِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا اَوْ فَقِيْرًا فَاللّٰهُ اَوْلٰى بِهِمَا ۫ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰٓى اَنْ تَعْدِلُوْا ۚ وَاِنْ تَلْوٗٓا اَوْ تُعْرِضُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۞

[النساء: ١٣٥]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : ऐ ईमान वालो! इंसाफ़ पर क़ायम रहो और अल्लाह तआला के लिए सच्ची गवाही दो, ख़्वाह (उसमें) तुम्हारा या तुम्हारे

बाप और रिश्तेदारों का नुक़सान ही हो और गवाही के वक़्त यह ख़्याल न करो (कि जिसके मुक़ाबले में हम गवाही दे रहे हैं) वह अमीर है (उसको नफ़ा पहुंचाना चाहिए) या वह ग़रीब है (उसका कैसे नुक़सान कर दें, तो तुम किसी की अमीरी-ग़रीबी को न देखो, क्योंकि) वह शख़्स अगर अमीर है तो भी और ग़रीब है तो भी दोनों के साथ अल्लाह तआ़ला को ज़्यादा ताल्लुक़ है (इतना ताल्लुक़ तुम को नहीं) लिहाज़ा तुम गवाही देने तक नफ़्सानी ख़्वाहिश की पैरवी न करना कि कहीं तुम हक़ और इंसाफ़ से हट जाओ और अगर तुम हेर फेर से गवाही दोगे या गवाही से बचना चाहोगे तो (याद रखना कि) अल्लाह तआ़ला तुम्हारे सब आ़माल की पूरी ख़बर रखते हैं। (निसा : 135)

وَقَالَ تَعَالَى: ﴿وَإِذَا حُيِّيْتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوْا بِأَحْسَنَ مِنْهَا أَوْ رُدُّوْهَا ط إِنَّ اللهَ كَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَسِيْبًا﴾ [النساء: ٨٦]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और जब तुम को कोई सलाम करे तो तुम उससे बेहतर अल्फ़ाज़ में सलाम का जवाब दो या कम-अज़-कम जवाब में वही अल्फ़ाज़ कह दो जो पहले शख़्स ने कहे थे, बिलाशुब्हा अल्लाह तआ़ला हर चीज़ का यानी हर अमल का हिसाब लेने वाले हैं। (निसा : 86)

وَقَالَ تَعَالَى: ﴿وَقَضَى رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوْا إِلَّا إِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ط إِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ أُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ۝ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا﴾ [بني اسرائيل: ٢٣، ٢٤]

अल्लाह तआ़ला ने रसूलुल्लाह ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : और आपके रब ने यह हुक्म दे दिया है कि उस माबूदे बरहक़ के सिवा किसी की इबादत न करो और तुम वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आओ, अगर उनमें से एक या दोनों तेरे सामने बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो उस वक़्त भी कभी उनको "हूं" मत कहना और न उनको झिड़कना और इन्तिहाई नर्मी और अदब के साथ उनसे बात करना और उनके सामने शफ़क़त से इंकिसारी के साथ झुके रहना और यूं दुआ़ करते रहना, ऐ मेरे रब! जिस तरह उन्होंने बचपने में मेरी परवरिश की है उसी तरह आप भी उन दोनों पर रहमत फ़रमाइए।

(बनी इस्राईल : 23-24)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿ 87 ﴾ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لِلْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ سِتَّةٌ بِالْمَعْرُوْفِ: يُسَلِّمُ عَلَيْهِ إِذَا لَقِيَهُ، وَيُجِيْبُهُ إِذَا دَعَاهُ، وَيُشَمِّتُهُ إِذَا عَطَسَ ، وَيَعُوْدُهُ إِذَا مَرِضَ، وَيَتْبَعُ جَنَازَتَهُ إِذَا مَاتَ، وَيُحِبُّ لَهُ مَا يُحِبُّ لِنَفْسِهِ۔

رواه ابن ماجه،باب ماجاء في عيادة المريض، رقم: ١٤٣٣

87. हज़रत अली रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मसुलमान के दूसरे मुसलमान पर छः हुक़ूक़ हैं : जब मुलाक़ात हो तो उसको सलाम करे, जब दावत दे तो उसकी दावत क़ुबूल करे, जब उसे छींक आए (और अल-हम्दु लिल्लाह) कहे तो उसके जवाब में यरहमुकल्लाह कहे, जब बीमार हो तो उसकी इयादत करे, जब इंतिक़ाल कर जाए तो उसके जनाज़े के साथ जाए और उसके लिए वही पसन्द करे जो अपने लिए पसन्द करता है। (इब्ने माजा)

﴿ 88 ﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: حَقُّ الْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ خَمْسٌ: رَدُّ السَّلَامِ، وَعِيَادَةُ الْمَرِيْضِ، وَاتِّبَاعُ الْجَنَائِزِ، وَإِجَابَةُ الدَّعْوَةِ، وَتَشْمِيْتُ الْعَاطِسِ۔

رواه البخاري، باب الامر باتباع الجنائز، رقم: ١٢٤٠

88. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर पांच हक़ हैं : सलाम का जवाब देना, बीमार की इयादत करना, जनाज़े के साथ जाना, दावत क़ुबूल करना और छींकने वाले के जवाब में 'यर्हमुकल्लाह' कहना। (बुख़ारी)

﴿ 89 ﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا تَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ حَتّٰى تُؤْمِنُوْا، وَلَا تُؤْمِنُوْا حَتّٰى تَحَابُّوْا، أَوَلَا أَدُلُّكُمْ عَلٰى شَيْءٍ إِذَا فَعَلْتُمُوْهُ تَحَابَبْتُمْ؟ أَفْشُوا السَّلَامَ بَيْنَكُمْ۔

رواه مسلم، باب بيان انه لا يدخل الجنة الا المؤمنون......رقم: ١٩٤

89. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम जन्नत में नहीं जा सकते, जब तक मोमिन न हो जाओ (यानी तुम्हारी ज़िन्दगी ईमान वाली ज़िन्दगी न हो जाए) और तुम उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकते, जब तक आपस में एक दूसरे से मुहब्बत न करो। क्या मैं तुम्हें वह अमल न बता दूं जिसके

करने से तुम्हारे दर्मियान मुहब्बत पैदा हो जाए? (वह यह है कि) सलाम को आपस में ख़ूब फैलाओ। (मुस्लिम)

﴿ 90 ﴾ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَفْشُوا السَّلَامَ كَيْ تَعْلُوْا. رواه الطبراني واسناده حسن، مجمع الزوائد ٨/٦٥

90. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सलाम को ख़ूब फैलाओ, ताकि तुम बुलन्द हो जाओ। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 91 ﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ يَعْنِي ابْنَ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: السَّلَامُ اسْمٌ مِنْ أَسْمَاءِ اللهِ تَعَالَى وَضَعَهُ فِي الْأَرْضِ فَأَفْشُوْهُ بَيْنَكُمْ، فَإِنَّ الرَّجُلَ الْمُسْلِمَ إِذَا مَرَّ بِقَوْمٍ فَسَلَّمَ عَلَيْهِمْ فَرَدُّوْا عَلَيْهِ، كَانَ لَهُ عَلَيْهِمْ فَضْلُ دَرَجَةٍ بِتَذْكِيْرِهِ إِيَّاهُمُ السَّلَامَ، فَإِنْ لَمْ يَرُدُّوْا عَلَيْهِ رَدَّ عَلَيْهِ مَنْ هُوَ خَيْرٌ مِنْهُمْ.

رواه البزار والطبراني واحد اسنادي البزار جيد قوي، الترغيب ٣/٤٢٧

91. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सलाम अल्लाह तआला के नामों में से एक नाम है जिसको अल्लाह तआला ने ज़मीन पर उतारा है, लिहाज़ा उसको आपस में ख़ूब फैलाओ क्योंकि मुसलमान जब किसी क़ौम पर गुज़रता है और उनको सलाम करता है और वे उसको जवाब देते हैं, तो उनको सलाम याद दिलाने की वजह से सलाम करने वाले को उस क़ौम पर एक दर्जा फ़ज़ीलत हासिल होती है और अगर वह जवाब नहीं देते हैं तो फ़रिश्ते जो इंसानों से बेहतर हैं उसके सलाम का जवाब देते हैं।

(बज़्ज़ार, तबरानी, तर्ग़ीब)

﴿ 92 ﴾ عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ مِنْ أَشْرَاطِ السَّاعَةِ أَنْ يُسَلِّمَ الرَّجُلُ عَلَى الرَّجُلِ لَا يُسَلِّمُ عَلَيْهِ إِلَّا لِلْمَعْرِفَةِ. رواه احمد ١/٤٠٦

92. हज़रत इब्ने मस्ऊद ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत की निशानियों में से यह है कि एक शख़्स दूसरे शख़्स को सिर्फ़ जान-पहचान की बुनियाद पर सलाम करे (न कि मुसलमान होने की बुनियाद पर)।

﴿ 93 ﴾ عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ، فَرَدَّ عَلَيْهِ السَّلَامَ ثُمَّ جَلَسَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: عَشْرٌ، ثُمَّ جَاءَ آخَرُ فَقَالَ:

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ، فَرَدَّ عَلَيْهِ فَجَلَسَ، فَقَالَ: عِشْرُوْنَ، ثُمَّ جَاءَ آخَرُ فَقَالَ: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ، فَرَدَّ عَلَيْهِ فَجَلَسَ، فَقَالَ: ثَلَاثُوْنَ.

رواه ابو داؤد، باب كيف السلام، رقم: ٥١٩٥

93. हज़रत इमरान बिन हुसैन ﷺ से रिवायत है कि एक साहब नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन्होंने अस्सलामु अ़लैकुम कहा, आपने उनके सलाम का जवाब दिया, फिर वह मज्लिस में बैठ गए। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : दस, यानी उनके लिए उनके सलाम की वजह से दस नेकियां लिखी गईं। फिर एक और साहब आए और उन्होंने अस्सलामु अ़लैकुम व रहमतुल्लाह कहा, आप ﷺ ने उनके सलाम का जवाब दिया, फिर वह साहब बैठ गए। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बीस यानी उनके लिए बीस नेकियां लिखी गईं। फिर एक तीसरे साहब आए और उन्होंने अस्सलामु अ़लैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु कहा, आप ﷺ ने उनके सलाम का जवाब दिया, फिर वह मज्लिस में बैठ गए। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तीस यानी उनके लिए तीस नेकियां लिखी गईं। (अबूदाऊद)

﴿ 94 ﴾ عَنْ أَبِيْ أُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِاللهِ تَعَالَى مَنْ بَدَأَهُمْ بِالسَّلَامِ.

رواه ابو داؤد، باب في فضل من بدأ بالسلام، رقم: ٥١٩٧

94. हज़रत अबू उमामा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : लोगों में अल्लाह तआ़ला के क़ुर्ब का ज़्यादा मुस्तहिक़ वह है, जो सलाम करने में पहल करे। (अबूदाऊद)

﴿ 95 ﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: الْبَادِئُ بِالسَّلَامِ بَرِيْءٌ مِنَ الْكِبْرِ.

رواه البيهقي في شعب الايمان ٦/٤٣٣

95. हज़रत अ़ब्दुल्लाह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सलाम में पहल करने वाला तकब्बुर से बरी है। (बैहक़ी)

﴿ 96 ﴾ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ لِيْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَا بُنَيَّ! إِذَا دَخَلْتَ عَلَى أَهْلِكَ فَسَلِّمْ يَكُوْنُ بَرَكَةً عَلَيْكَ وَعَلَى أَهْلِ بَيْتِكَ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح غريب، باب ماجاء في التسليم ...... رقم: ٢٦٩٨

96. हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं कि मुझे रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरे प्यारे बेटे! जब तुम अपने घर में दाख़िल हो तो घर वालों को सलाम करो

लिए और तुम्हारे घर वालों के लिए बरकत का सबब होगा। (तिर्मिज़ी)

﴿ 97 ﴾ عَنْ قَتَادَةَ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: إِذَا دَخَلْتُمْ بَيْتًا فَسَلِّمُوْا عَلٰى أَهْلِهِ وَإِذَا خَرَجْتُمْ فَأَوْدِعُوْا أَهْلَهُ السَّلَامَ.

رواه عبد الرزاق في مصنفه ١٠/٣٨٩

97. हज़रत क़तादा रहमतुल्लाह अ़लैह से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम किसी घर में दाख़िल हो तो उस घर वालों को सलाम करो और जब (घर से) जाने लगो, तो घर वालों से सलाम के साथ रुख़सत हो। (मुसन्निफ़ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़)

﴿ 98 ﴾ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِذَا انْتَهٰى أَحَدُكُمْ إِلٰى مَجْلِسٍ فَلْيُسَلِّمْ، فَإِنْ بَدَا لَهُ أَنْ يَجْلِسَ فَلْيَجْلِسْ، ثُمَّ إِذَا قَامَ فَلْيُسَلِّمْ فَلَيْسَتِ الْأُوْلٰى بِأَحَقَّ مِنَ الْآخِرَةِ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن، باب ما جاء في التسليم عند القيام.....رقم:٢٧٠٦

98. हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम में से कोई किसी मज्लिस में जाए तो सलाम करे, उसके बाद बैठना चाहे तो बैठ जाए। फिर जब मज्लिस से उठकर जाने लगे तो फिर सलाम करे क्योंकि पहला सलाम दूसरे सलाम से बढ़ा हुआ नहीं है, यानी जिस तरह मुलाक़ात के वक़्त सलाम करना सुन्नत है ऐसे ही रुख़सत होते वक़्त भी सलाम करना सुन्नत है। (तिर्मिज़ी)

﴿ 99 ﴾ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: يُسَلِّمُ الصَّغِيْرُ عَلَى الْكَبِيْرِ، وَالْمَارُّ عَلَى الْقَاعِدِ، وَالْقَلِيْلُ عَلَى الْكَثِيْرِ.

رواه البخاري، باب تسليم القليل على الكثير، رقم: ٦٢٣١

99. हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : छोटा बड़े को सलाम करे, गुज़रने वाला बैठे हुए को सलाम करे और थोड़े आदमी ज़्यादा आदमी को सलाम करें। (बुख़ारी)

﴿100﴾ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ مَرْفُوْعًا: يُجْزِئُ عَنِ الْجَمَاعَةِ إِذَا مَرُّوْا أَنْ يُسَلِّمَ أَحَدُهُمْ وَيُجْزِئُ عَنِ الْجُلُوْسِ أَنْ يَرُدَّ أَحَدُهُمْ.

رواه البيهقي في شعب الايمان ٦/٤٦٦

100. हज़रत अ़ली رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : (सामने

से) गुज़रने वाली जमाअत में से अगर एक शख़्स सलाम कर ले, तो उन सब की तरफ़ से काफ़ी है और बैठे हुए लोगों में से एक जवाब दे दे तो सबकी तरफ़ से काफ़ी है।

(बैहक़ी)

﴿101﴾ عَنِ الْمِقْدَادِ بْنِ الْاَسْوَدِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: (فِيْ حَدِيْثٍ طَوِيْلٍ) فَيَجِيْءُ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ مِنَ اللَّيْلِ فَيُسَلِّمُ تَسْلِيْمًا لَايُوْقِظُ النَّائِمَ، وَيُسْمِعُ الْيَقْظَانَ۔

رواہ الترمذی وقال: هذاحديث حسن صحيح، باب كيف السلام، رقم: ٢٧١٩

101. हज़रत मिक़्दाद बिन अस्वद ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ रात को तशरीफ़ लाते तो इस तरह सलाम फ़रमाते कि सोने वाले न जागते और जागने वाले सुन लेते।

(तिर्मिज़ी)

﴿102﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَعْجَزُ النَّاسِ مَنْ عَجِزَ فِي الدُّعَاءِ، وَاَبْخَلُ النَّاسِ مَنْ بَخِلَ فِي السَّلَامِ۔

رواه الطبرانی فی الاوسط، وقال لا يروى عن النبی ﷺ الا بهذا الاسناد، ورجاله رجال الصحيح غير مسروق بن المرزبان وهو ثقة، مجمع الزوائد ٨/٦١

102. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : लोगों में सबसे ज़्यादा आजिज़ वह शख़्स है जो दुआ करने से आजिज़ हो यानी दुआ न करता हो। और लोगों में सबसे ज़्यादा बख़ील वह है जो सलाम में भी बुख़्ल करे।

(तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿103﴾ عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مِنْ تَمَامِ التَّحِيَّةِ الْاَخْذُ بِالْيَدِ۔

رواه الترمذی وقال: هذا حديث غريب، باب ماجاء فی المصافحة، رقم: ٢٧٣٠

103. हज़रत इब्ने मस्ऊद ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद नक़्ल करते हैं कि सलाम की तकमील मुसाफ़ा है।

(तिर्मिज़ी)

﴿104﴾ عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا مِنْ مُسْلِمَيْنِ يَلْتَقِيَانِ فَيَتَصَافَحَانِ اِلَّا غُفِرَلَهُمَا قَبْلَ اَنْ يَفْتَرِقَا۔

رواه ابوداؤد، باب فی المصافحة، رقم: ٥٢١٢

104. हज़रत बरा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो दो मुसलमान आपस में मिलते हैं और मुसाफ़ा करते हैं तो जुदा होने से पहले दोनों के गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं।

(अबूदाऊद)

﴿105﴾ عَنْ حُذَيْفَةَ بْنِ الْيَمَانِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِنَّ الْمُؤْمِنَ إِذَا لَقِيَ الْمُؤْمِنَ، فَسَلَّمَ عَلَيْهِ، وَأَخَذَ بِيَدِهِ فَصَافَحَهُ، تَنَاثَرَتْ خَطَايَاهُمَا كَمَا يَتَنَاثَرُ وَرَقُ الشَّجَرِ.

رواه الطبراني في الاوسط ويعقوب بن محمد بن طحلاء روى عنه غير واحد ولم يضعفه احد وبقية رجاله ثقات، مجمع الزوائد ٧٥/٨

105. हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान ؓ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मोमिन जब मोमिन से मिलता है, उसको सलाम करता है और उसका हाथ पकड़ कर मुसाफ़ा करता है तो दोनों के गुनाह इस तरह झड़ते हैं जैसे दरख़्त के पत्ते झड़ते हैं। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿106﴾ عَنْ سَلْمَانَ الْفَارِسِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: إِنَّ الْمُسْلِمَ إِذَا لَقِيَ أَخَاهُ الْمُسْلِمَ فَأَخَذَ بِيَدِهِ تَحَاتَّتْ عَنْهُمَا ذُنُوبُهُمَا كَمَا يَتَحَاتُّ الْوَرَقُ عَنِ الشَّجَرَةِ الْيَابِسَةِ فِي يَوْمِ رِيحٍ عَاصِفٍ وَإِلَّا غُفِرَ لَهُمَا وَلَوْ كَانَتْ ذُنُوبُهُمَا مِثْلَ زَبَدِ الْبَحْرِ.

رواه الطبراني ورجاله رجال الصحيح غير سالم بن غيلان وهو ثقة، مجمع الزوائد ٧٧/٨

106. हज़रत सलमान फ़ारसी ؓ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुसलमान जब अपने मसुलमान भाई से मिलता है उसका हाथ पकड़ता है यानी मुसाफ़ा करता है, तो दोनों के गुनाह ऐसे गिर जाते हैं, जैसे तेज़ हवा चलने के दिन सूखे दरख़्त से पत्ते गिरते हैं और उन दोनों के गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं, अगरचे उनके गुनाह समुंदर के झाग के बराबर हों। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿107﴾ عَنْ رَجُلٍ مِنْ عَنَزَةَ رَحِمَهُ اللّٰهُ أَنَّهُ قَالَ لِأَبِي ذَرٍّ: هَلْ كَانَ رَسُولُ اللّٰهِ ﷺ يُصَافِحُكُمْ إِذَا لَقِيتُمُوهُ؟ قَالَ: مَا لَقِيتُهُ قَطُّ إِلَّا صَافَحَنِي وَبَعَثَ إِلَيَّ ذَاتَ يَوْمٍ وَلَمْ أَكُنْ فِي أَهْلِي، فَلَمَّا جِئْتُ أُخْبِرْتُ أَنَّهُ أَرْسَلَ إِلَيَّ، فَأَتَيْتُهُ وَهُوَ عَلَى سَرِيرِهِ، فَالْتَزَمَنِي، فَكَانَتْ تِلْكَ أَجْوَدَ وَأَجْوَدَ.

رواه ابو داؤد، باب في المعانقة، رقم: ٥٢١٤

107. क़बीला अंज़ा के एक शख़्स से रिवायत है कि उन्होंने हज़रत अबूज़र ؓ से पूछा : क्या रसूलुल्लाह ﷺ मुलाक़ात के वक़्त आप लोगों से मुसाफ़ा भी किया करते थे? उन्होंने फ़रमाया : मैं जब भी रसूलुल्लाह ﷺ से मिला, आपने हमेशा मुझसे मुसाफ़ा फ़रमाया। एक दिन आपने मुझे घर से बुलवाया, मैं उस वक़्त अपने घर पर नहीं था। जब मैं घर आया और मुझे बताया गया कि आप ﷺ ने मुझे बुलवाया था, तो मैं आप ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। उस वक़्त आप अपनी

तशरीफ़ फ़रमा थे। आप ﷺ ने मुझे लिपटा लिया और आपका यह मुआनक़ा बहुत ख़ूब और बहुत ही ख़ूब था। (अबूदाऊद)

﴾108﴿ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ رَحِمَهُ اللهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ سَاَلَهُ رَجُلٌ فَقَالَ: يَارَسُوْلَ اللهِ! اَسْتَاْذِنُ عَلَى اُمِّيْ؟ فَقَالَ: نَعَمْ، فَقَالَ الرَّجُلُ: اِنِّيْ مَعَهَا فِي الْبَيْتِ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِسْتَاْذِنْ عَلَيْهَا، فَقَالَ الرَّجُلُ اِنِّيْ خَادِمُهَا، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِسْتَاْذِنْ عَلَيْهَا، اَتُحِبُّ اَنْ تَرَاهَا عُرْيَانَةً؟ قَالَ: لَا، قَالَ: فَاسْتَاْذِنْ عَلَيْهَا.

رواه الامام مالك في الموطا، باب في الاستئذان ص ٧٢٥

108. हज़रत अ़ता बिन यसार रहमतुल्लाह अ़लैह से रिवायत है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा : या रसूलुल्लाह! क्या मैं अपनी मां से उनकी रहने की जगह में दाख़िल होने की इजाज़त तलब करूं? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हां। उस शख़्स ने अ़र्ज़ किया : मैं मां के साथ ही घर में रहता हूं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इजाज़त लेकर ही जाओ। उस शख़्स ने अ़र्ज़ किया : मैं ही उनका ख़ादिम हूं (इसलिए बार-बार जाना होता है) आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इजाज़त लेकर ही जाओ। क्या तुम्हें अपनी मां को बरहना हालत में देखना पसन्द है? उस शख़्स ने अ़र्ज़ किया : नहीं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तो फिर इजाज़त लेकर ही जाओ।

(मुअत्ता, इमाम मालिक)

﴾109﴿ عَنْ هُزَيْلٍ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: جَاءَ سَعْدٌ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فَوَقَفَ عَلَى بَابِ النَّبِيِّ ﷺ يَسْتَاْذِنُ فَقَامَ مُسْتَقْبِلَ الْبَابِ فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ: هٰكَذَا عَنْكَ، اَوْ هٰكَذَا فَاِنَّمَا الْاِسْتِئْذَانُ مِنَ النَّظَرِ.

رواه ابوداؤد،باب في الاستئذان،رقم:٥١٧٤

109. हज़रत हुज़ैल रहमतुल्लाह अ़लैह से रिवायत है कि हज़रत साद رضي الله عنه आए और नबी करीम ﷺ के दरवाज़े पर (अन्दर जाने की) इजाज़त लेने के लिए रुके और दरवाज़े के बिल्कुल सामने खड़े हो गए। रसूलुल्लाह ﷺ ने उनसे इर्शाद फ़रमाया : (दरवाज़े के सामने न खड़े हो, बल्कि) दाएं या बाएं तरफ़ खड़े हो (क्योंकि दरवाज़े के सामने खड़े होने से इस बात का इम्कान है कि कहीं नज़र अन्दर न पड़ जाए और) इजाज़त मांगना तो सिर्फ़ इसी वजह से है कि नज़र न पड़े। (अबूदाऊद)

﴾110﴿ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: اِذَا دَخَلَ الْبَصَرُ فَلَا اِذْنَ.

رواه ابوداؤد،باب في الاستئذان،رقم:٥١٧٣

110. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब निगाह घर में चली गई, तो फिर इजाज़त कोई चीज़ नहीं यानी इजाज़त का फिर कोई फ़ायदा नहीं। (अबूदाऊद)

﴿111﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ بِشْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: لَا تَأْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ اَبْوَابِهَا وَلٰكِنِ ائْتُوْهَا مِنْ جَوَانِبِهَا فَاسْتَأْذِنُوْا، فَاِنْ اُذِنَ لَكُمْ فَادْخُلُوْا وَ اِلَّا فَارْجِعُوْا۔ قلت: له حديث رواه ابو داؤد غير هذا، رواه الطبراني من طرق ورجال هذا رجال الصحيح غير محمد بن عبد الرحمن بن عرق وهو ثقة، مجمع الزوائد ٨/٨٧

111. हज़रत अब्दुल्लाह बिन बिश्र ﷺ फ़रमाते है कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : (लोगों के) घरों (में दाख़िल होने की इजाज़त के लिए उन) के दरवाज़ों के सामने न खड़े हो (कि कहीं घर के अन्दर निगाह न पड़ जाए) बल्कि दरवाज़े के (दाएं-बाएं) किनारों पर खड़े होकर इजाज़त मांगो। अगर तुम्हें इजाज़त मिल जाए तो दाख़िल हो जाओ वरना वापस लौट जाओ। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿112﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لَا يُقِيْمُ الرَّجُلُ الرَّجُلَ مِنْ مَجْلِسِهِ ثُمَّ يَجْلِسُ فِيْهِ۔ رواه البخاري، باب لا يقيم الرجل الرجل ...، رقم: ٦٢٦٩

112. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : किसी शख़्स को इस बात की इजाज़त नहीं कि किसी दूसरे को उसकी जगह से उठाकर ख़ुद उस जगह बैठ जाए। (बुख़ारी)

﴿113﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ قَامَ مِنْ مَجْلِسِهِ ثُمَّ رَجَعَ اِلَيْهِ، فَهُوَ اَحَقُّ بِهِ۔ رواه مسلم، باب اذا قام من مجلسه ...، رقم: ٥٦٨٩

113. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अपनी जगह से (किसी ज़रूरत से) उठा और वापस आ गया तो उस जगह (बैठने) का वही शख़्स ज़्यादा हक़दार है। (मुस्लिम)

﴿114﴾ عَنْ عَمْرِوبْنِ شُعَيْبٍ عَنْ اَبِيْهِ عَنْ جَدِّهٖ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَا يُجْلَسُ بَيْنَ رَجُلَيْنِ اِلَّا بِاِذْنِهِمَا۔ رواه ابو داؤد، باب في الرجل يجلس ...، رقم: ٤٨٤٤

114. हज़रत उम्रू बिन शुऐब ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : दो आदमियों में उनकी इजाज़त के बग़ैर न बैठा जाए। (अबूदाऊद)

﴾115﴿ عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ لَعَنَ مَنْ جَلَسَ وَسْطَ الْحَلْقَةِ.

رواه ابوداؤد، باب الجلوس وسط الحلقة، رقم: ٤٨٢٦

115. हज़रत हुज़ैफ़ा ﷜ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हल्क़ा के बीच में बैठने वाले पर लानत फ़रमाई है। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : हल्क़ा के बीच में बैठने वाले से मुराद वह शख़्स है जो लोगों के कांधे फलांग कर हल्क़ा के दर्मियान में आकर बैठ जाए। दूसरा मतलब यह है कि कुछ लोग हल्क़ा बनाए बैठे हों और हर एक दूसरे के आमने सामने हो। एक आदमी आकर इस तरह हल्क़ा के दर्मियान में बैठ जाए कि बाज़ लोगों का एक दूसरे के आमने-सामने होना बाक़ी न रहे। (मआरिफ़ुल हदीस)

﴾116﴿ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلْيُكْرِمْ ضَيْفَهُ، قَالَهَا ثَلَاثًا قَالَ رَجُلٌ: وَمَا كَرَامَةُ الضَّيْفِ يَا رَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: ثَلَاثَةُ اَيَّامٍ، فَمَا جَلَسَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَهُوَ عَلَيْهِ صَدَقَةٌ. رواه احمد ٣/٧٦

116. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷜ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो अल्लाह तआला और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो, उसको चाहिए कि अपने मेहमान का इकराम करे। आप ﷺ ने यह बात तीन मर्तबा इर्शाद फ़रमाई। एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मेहमान का इकराम क्या है? इर्शाद फ़रमाया : (मेहमान का इकराम) तीन दिन है। तीन दिन के बाद अगर मेहमान रहा तो मेज़बान का मेहमान को खिलाना उस पर एहसान है, यानी तीन दिन के बाद खाना न खिलाना बेमरव्वती में दाख़िल नहीं। (मुस्नद अहमद)

﴾117﴿ عَنِ الْمِقْدَامِ اَبِيْ كَرِيْمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَيُّمَا رَجُلٍ اَضَافَ قَوْمًا فَاَصْبَحَ الضَّيْفُ مَحْرُوْمًا فَاِنَّ نَصْرَهُ حَقٌّ عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ حَتّٰى يَاْخُذَ بِقِرَى لَيْلَةٍ مِنْ زَرْعِهِ وَمَالِهِ. رواه ابوداؤد، باب ما جاء في الضيافة، رقم: ٣٧٥١

117. हज़रत मिक़्दाम अबू करीमा ﷜ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी क़ौम में (किसी के यहां) मेहमान हुआ और सुबह तक यह मेहमान (खाने से) महरूम रहा, यानी उसके मेज़बान ने रात में उसकी मेहमानदारी नहीं की, तो उसकी मदद करना हर मुसलमान के ज़िम्मा है, यहां तक कि यह

मेहमान अपने मेज़बान के माल और खेती से अपनी रात की मेहमानी की मिक़्दार वुसूल कर ले। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : यह इस सूरत में है जबकि मेहमान के पास खाने पीने का इंतज़ाम न हो और वह मजबूर हो और यह सूरत न हो तो मरव्वत और शराफ़त के दर्जे में मेहमाननवाज़ी मेहमान का हक़ है। (मज़ाहिरे हक़)

﴿118﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عُبَيْدِ بْنِ عُمَيْرٍ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: دَخَلَ عَلَيَّ جَابِرٌ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فِيْ نَفَرٍ مِنْ اَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ، فَقَدَّمَ اِلَيْهِمْ خُبْزًا وَخَلًّا، فَقَالَ: كُلُوْا فَاِنِّيْ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: نِعْمَ الْاِدَامُ الْخَلُّ، اِنَّهُ هَلَاكٌ بِالرَّجُلِ اَنْ يَدْخُلَ عَلَيْهِ النَّفَرُ مِنْ اِخْوَانِهِ فَيَحْتَقِرَ مَا فِيْ بَيْتِهِ اَنْ يُقَدِّمَهُ اِلَيْهِمْ، وَهَلَاكٌ بِالْقَوْمِ اَنْ يَحْتَقِرُوا مَا قُدِّمَ اِلَيْهِمْ.

رواه احمد والطبراني في الاوسط وابو يعلى الاانه قال: وَكَفٰى بِالْمَرْءِ شَرًّا اَنْ يَحْتَقِرَ مَا قُرِّبَ اِلَيْهِ وفي اسناد ابي يعلى ابو طالب القاص ولم اعرفه وبقية رجال ابي يعلى وثقوا، وفي الحاشية: ابوطالب القاص هو يحيى بن يعقوب بن مدرك ثقة، مجمع الزوائد ٣٢٨/٨

118. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उबैद बिन उमैर रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि हज़रत जाबिर ﷺ नबी करीम ﷺ के सहाबा की एक जमाअत के साथ मेरे पास तशरीफ़ लाए। हज़रत जाबिर ﷺ ने साथियों के सामने रोटी और सिरका पेश किया और फ़रमाया : इसे खा लो, क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : सिरका बेहतरीन सालन है। आदमी के लिए हलाकत है कि उसके कुछ भाई उसके पास आएं तो जो चीज़ घर में हो उसे उनके सामने पेश करने को कम समझे और लोगों के लिए हलाकत है कि जो इन के सामने पेश किया जाए वह उसे हक़ीर और कम समझें। एक और रिवायत में है कि आदमी की बुराई के लिए यह काफ़ी है कि जो उसके सामने पेश किया जाए, वह उसको कम समझे।

(मुस्नद अहमद, तबरानी, अबू याला, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿119﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: اِنَّ اللهَ يُحِبُّ الْعُطَاسَ وَيَكْرَهُ التَّثَاؤُبَ، فَاِذَا عَطَسَ اَحَدُكُمْ وَحَمِدَاللهَ كَانَ حَقًّا عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ سَمِعَهُ اَنْ يَقُوْلَ لَهُ: يَرْحَمُكَ اللهُ، وَاَمَّا التَّثَاؤُبُ فَاِنَّمَا هُوَ مِنَ الشَّيْطَانِ، فَاِذَا تَثَاءَبَ اَحَدُكُمْ فَلْيَرُدَّهُ مَا اسْتَطَاعَ، فَاِنَّ اَحَدَكُمْ اِذَا تَثَاءَبَ ضَحِكَ مِنْهُ الشَّيْطَانُ.

رواه البخاري باب اذا تثاءب فليضع يده على فيه، رقم: ٦٢٢٦

119. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला छींक को पसन्द फ़रमाते हैं और जम्हाई को नापसन्द फ़रमाते हैं। जब तुम में से किसी को छींक आए और वह 'अल-हम्दु' कहे तो हर उस मुसलमान के लिए जो उसे सुने जवाब में 'यरहमुकल्लाह' कहना ज़रूरी है। और जम्हाई लेना शैतान की तरफ़ से होता है, लिहाज़ा जब तुममें से किसी को जम्हाई आए तो जितना हो सके उसको रोके, क्योंकि जब तुममें से कोई जम्हाई लेता है तो शैतान हँसता है। (बुख़ारी)

﴾120﴿ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ عَادَ مَرِيْضًا اَوْ زَارَ اَخًا لَهُ فِي اللهِ نَادَاهُ مُنَادٍ اَنْ طِبْتَ وَطَابَ مَمْشَاكَ وَتَبَوَّاْتَ مِنَ الْجَنَّةِ مَنْزِلًا۔

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب،باب ماجاء في زيارة الاخوان،رقم: ٢٠٠٨

120. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी बीमार की इयादत के लिए या अपने मुसलमान भाई की मुलाक़ात के लिए जाता है, तो एक फ़रिश्ता पुकार कर कहता है तुम बरकत वाले हो, तुम्हारा चलना बाबरकत है और तुमने जन्नत में ठिकाना बना लिया। (तिर्मिज़ी)

﴾121﴿ عَنْ ثَوْبَانَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ مَوْلٰى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ عَادَ مَرِيْضًا لَمْ يَزَلْ فِىْ خُرْفَةِ الْجَنَّةِ قِيْلَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! وَمَا خُرْفَةُ الْجَنَّةِ؟ قَالَ: جَنَاهَا۔

رواه مسلم، باب فضل عيادة المريض، رقم: ٦٥٥٤

121. रसूलुल्लाह ﷺ के आज़ाद करदा गुलाम हज़रत सौबान रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी बीमार की इयादत करता है तो वह जन्नत के ख़ुरफ़ा में रहता है। दरयाफ़्त किया गया : या रसूलुल्लाह! जन्नत का ख़ुरफ़ा क्या है? इर्शाद फ़रमाया : जन्नत के तोड़े हुए फल। (मुस्लिम)

﴾122﴿ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ تَوَضَّاَ فَاَحْسَنَ الْوُضُوْءَ وَعَادَ اَخَاهُ الْمُسْلِمَ مُحْتَسِبًا بُوْعِدَ مِنْ جَهَنَّمَ مَسِيْرَةَ سَبْعِيْنَ خَرِيْفًا قُلْتُ: يَا اَبَا حَمْزَةَ! وَمَا الْخَرِيْفُ؟ قَالَ: الْعَامُ۔ رواه ابوداؤد، باب في فضل العيادة على وضوء، رقم: ٣٠٩٧

122. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अच्छी तरह वुज़ू करता है, फिर अज्र व सवाब की उम्मीद रखते हुए अपने मुसलमान भाई की इयादत करता है उसको दोज़ख़ से सत्तर

दिया जाता है। हज़रत साबित बनानी रह० फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत अनस ﷺ से पूछा : अबू हमज़ा! ख़रीफ़ किसे कहते हैं ? फ़रमाया : साल को कहते हैं यानी सत्तर साल की मुसाफ़त के बक़द्र दोज़ख़ से दूर कर दिया जाता है। (अबूदाऊद)

﴿123﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: اَيُّمَا رَجُلٍ يَعُوْدُ مَرِيْضًا فَاِنَّمَا يَخُوْضُ فِي الرَّحْمَةِ، فَاِذَا قَعَدَ عِنْدَ الْمَرِيْضِ غَمَرَتْهُ الرَّحْمَةُ قَالَ: فَقُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللهِ! هٰذَا لِلصَّحِيْحِ الَّذِيْ يَعُوْدُ الْمَرِيْضَ فَالْمَرِيْضُ مَا لَهُ؟ قَالَ: تُحَطُّ عَنْهُ ذُنُوْبُهُ. رواه احمد ٣/١٧٤

123. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स बीमार की इयादत करता है वह रहमत में ग़ोता लगाता है और जब वह बीमार के पास बैठ जाता है तो रहमत उसको ढांप लेती है। हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं, मैंने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! यह फ़ज़ीलत तो उस तंदुरुस्त शख़्स के लिए आपने इर्शाद फ़रमाई है, जो बीमार की इयादत करता है, ख़ुद बीमार को क्या मिलता है? रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उसके गुनाह माफ़ हो जाते हैं। (मुस्नद अहमद)

﴿124﴾ عَنْ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ عَادَ مَرِيْضًا خَاضَ فِي الرَّحْمَةِ، فَاِذَا جَلَسَ عِنْدَهُ اسْتَنْقَعَ فِيْهَا. رواه احمد ٣/٤٦٠ وفي حديث عمرو بن حزم رضي الله عنه عند الطبراني في الكبير والاوسط: وَاِذَا قَامَ مِنْ عِنْدِهِ فَلاَ يَزَالُ يَخُوْضُ فِيْهَا حَتّٰى يَرْجِعَ مِنْ حَيْثُ خَرَجَ ورجاله موثقون، مجمع الزوائد ٣/٢٢

124. हज़रत काब बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी बीमार की इयादत के लिए जाता है वह रहमत में ग़ोता लगाता है और (जब बीमारपुर्सी के लिए) उसके पास बैठता है तो रहमत में ठहर जाता है। (मुस्नद अहमद)

हज़रत उम्रू बिन हज़्म ﷺ की रिवायत में है कि बीमार के पास से उठ जाने के बाद भी वह रहमत में ग़ोता लगाता रहता है, यहां तक कि जिस जगह से इयादत के लिए गया था वहां वापस लौट आए। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿125﴾ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَامِنْ مُسْلِمٍ يَعُوْدُ

مُسْلِمًا غُدْوَةً إِلَّا صَلَّى عَلَيْهِ سَبْعُوْنَ اَلْفَ مَلَكٍ حَتَّى يُمْسِيَ، وَإِنْ عَادَهُ عَشِيَّةً إِلَّا صَلَّى عَلَيْهِ سَبْعُوْنَ اَلْفَ مَلَكٍ حَتَّى يُصْبِحَ وَكَانَ لَهُ خَرِيْفٌ فِي الْجَنَّةِ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث غريب حسن، باب ماجاء في عيادة المريض، رقم: ٩٦٩

125. हज़रत अली ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो मुसलमान किसी मुसलमान की सुबह को इयादत करता है तो शाम तक सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसके लिए दुआ करते रहते हैं और जो शाम को इयादत करता है तो सुबह तक सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसके लिए दुआ करते रहते हैं और उसे जन्नत में एक बाग़ मिल जाता है। (तिर्मिज़ी)

﴿126﴾ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ لِيَ النَّبِيُّ ﷺ: إِذَا دَخَلْتَ عَلَى مَرِيْضٍ فَمُرْهُ اَنْ يَدْعُوَلَكَ فَإِنَّ دُعَائَهُ كَدُعَاءِ الْمَلَائِكَةِ.

رواه ابن ماجه، باب ماجاء في عيادة المريض، رقم: ١٤٤١

126. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने मुझसे इर्शाद फ़रमाया : जब तुम बीमार के पास जाओ तो उससे कहो कि वह तुम्हारे लिए दुआ करे, क्योंकि उसकी दुआ फ़रिश्तों की दुआ की तरह (क़ुबूल होती) है।

(इब्ने माजा)

﴿127﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّهُ قَالَ: كُنَّا جُلُوْسًا مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، إِذْجَاءَهُ رَجُلٌ مِنَ الْاَنْصَارِ فَسَلَّمَ عَلَيْهِ، ثُمَّ اَدْبَرَ الْاَنْصَارِيُّ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَا اَخَا الْاَنْصَارِ! كَيْفَ اَخِيْ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ؟ فَقَالَ: صَالِحٌ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ يَعُوْدُهُ مِنْكُمْ؟ فَقَامَ وَقُمْنَا مَعَهُ، وَنَحْنُ بِضْعَةَ عَشَرَ، مَا عَلَيْنَا نِعَالٌ وَلَا خِفَافٌ وَلَا قَلَانِسُ وَلَا قُمُصٌ نَمْشِيْ فِيْ تِلْكَ السِّبَاخِ حَتَّى جِئْنَاهُ، فَاسْتَاْخَرَ قَوْمُهُ مِنْ حَوْلِهِ حَتَّى دَنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ وَاَصْحَابُهُ الَّذِيْنَ مَعَهُ.

رواه مسلم، باب في عيادة المرضى، رقم: ٢١٣٨

127. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि हम रसूलुल्लाह ﷺ के पास बैठे हुए थे। एक अन्सारी सहाबी ने आकर आप ﷺ को सलाम किया, फिर वापस जाने लगे। आप ﷺ ने उनसे पूछा : अन्सारी भाई! मेरे भाई साद बिन उबादा की तबीयत कैसी है? उन्होंने अर्ज़ किया : अच्छी है। आप ﷺ ने (साथ बैठे हुए सहाबा से) इर्शाद फ़रमाया : तुममें से कौन उनकी इयादत करेगा? यह कहकर आप ﷺ खड़े हो गए, हम भी आपके साथ खड़े हो गए। हम दस से ज़ाइद अफ़राद थे। हमारे पास जूते थे न मोज़े, टोपियां थीं न कमीज़। हम उस पत्थरीली ज़मीन पर चलते

हुए हज़रत साद ﷺ के पास पहुंचे। (उस वक़्त) उनकी क़ौम के जो लोग उनके क़रीब थे, पीछे हट गए। रसूलुल्लाह ﷺ और आपके साथ जाने वाले सहाबा उनके क़रीब हो गए। (मुस्लिम)

﴿128﴾ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ اَنَّہٗ سَمِعَ رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ یَقُوْلُ: خَمْسٌ مَنْ عَمِلَھُنَّ فِیْ یَوْمٍ کَتَبَہُ اللّٰہُ مِنْ اَھْلِ الْجَنَّۃِ: مَنْ عَادَ مَرِیْضًا، وَشَھِدَ جَنَازَۃً، وَصَامَ یَوْمًا، وَرَاحَ یَوْمَ الْجُمُعَۃِ وَاَعْتَقَ رَقَبَۃً. رواہ ابن حبان، قال المحقق: اسنادہ قوی ۷/۶

128. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ फ़रमाते हैं कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिस शख़्स ने पांच आमाल एक दिन में किए अल्लाह तआला उसे जन्नत वालों में लिख देते हैं। बीमार की इयादत की, जनाज़ा में शिरकत की, रोज़ा रखा, जुमे की नमाज़ के लिए गया और ग़ुलाम आज़ाद किया। (इब्ने हब्बान)

﴿129﴾ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰہِ ﷺ قَالَ: مَنْ جَاھَدَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰہِ کَانَ ضَامِنًا عَلَی اللّٰہِ، وَمَنْ عَادَ مَرِیْضًا کَانَ ضَامِنًا عَلَی اللّٰہِ، وَمَنْ غَدَا اِلَی الْمَسْجِدِ اَوْرَاحَ کَانَ ضَامِنًا عَلَی اللّٰہِ، وَمَنْ دَخَلَ عَلٰی اِمَامٍ یُعَزِّرُہٗ کَانَ ضَامِنًا عَلَی اللّٰہِ، وَمَنْ جَلَسَ فِیْ بَیْتِہٖ لَمْ یَغْتَبْ اِنْسَانًا کَانَ ضَامِنًا عَلَی اللّٰہِ. رواہ ابن حبان، قال المحقق: اسنادہ حسن ۲/۹۳

129. हज़रत मुआज़ बिन जबल ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं : जो अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद करता है, वह अल्लाह तआला की ज़िम्मेदारी में है। जो बीमार की इयादत करता है वह अल्लाह तआला की ज़िम्मेदारी में है। जो सुबह या शाम मस्जिद जाता है वह अल्लाह तआला की ज़िम्मेदारी में है। जो किसी हाकिम के पास उसकी मदद के लिए जाता है, वह अल्लाह तआला की ज़िम्मेदारी में है और जो अपने घर में इस तरह रहता है कि किसी की ग़ीबत नहीं करता वह अल्लाह तआला की ज़िम्मेदारी में है। (इब्ने हब्बान)

﴿130﴾ عَنْ اَبِیْ ھُرَیْرَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: مَنْ اَصْبَحَ مِنْکُمُ الْیَوْمَ صَائِمًا؟ قَالَ اَبُوْبَکْرٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ: اَنَا، قَالَ: فَمَنْ اتَّبَعَ مِنْکُمُ الْیَوْمَ جَنَازَۃً؟ قَالَ اَبُوْبَکْرٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ: اَنَا، قَالَ: فَمَنْ اَطْعَمَ مِنْکُمُ الْیَوْمَ مِسْکِیْنًا؟ قَالَ اَبُوْبَکْرٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ: اَنَا، قَالَ: فَمَنْ عَادَ مِنْکُمُ الْیَوْمَ مَرِیْضًا؟ قَالَ اَبُوْبَکْرٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ: اَنَا فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: مَا اجْتَمَعْنَ فِیْ امْرِیءٍ اِلَّا دَخَلَ الْجَنَّۃَ.

رواہ مسلم، باب من فضائل ابی بکر الصدیق رضی اللّٰہ عنہ، رقم: ۶۱۸۲

130. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : आज तुममें से किसने रोज़ा रखा? हज़रत अबूबक्र ﷺ ने अर्ज़ किया : मैंने। फिर दरयाफ़्त फ़रमाया : आज तुममें से कौन जनाज़े के साथ गया? हज़रत अबूबक्र ﷺ ने अर्ज़ किया : मैं। दरयाफ़्त फ़रमाया : आज तुममें से मिस्कीन को किसने खाना खिलाया? हज़रत अबूबक्र ﷺ ने अर्ज़ किया : मैंने दरयाफ़्त फ़रमाया : आज तुममें से किसने बीमार की इयादत की? हज़रत अबू बक्र ﷺ ने अर्ज़ किया : मैंने। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस आदमी में भी ये बातें जमा होंगी, वह जन्नत में ज़रूर दाख़िल होगा। (मुस्लिम)

﴿131﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: مَا مِنْ عَبْدٍ مُسْلِمٍ يَعُوْدُ مَرِيْضًا لَمْ يَحْضُرْ أَجَلُهُ فَيَقُوْلُ سَبْعَ مَرَّاتٍ: أَسْأَلُ اللهَ الْعَظِيْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ أَنْ يَشْفِيَكَ إِلَّا عُوْفِيَ.

رواه الترمذي وقال هذا حديث حسن غريب، باب مايقول عند عيادة المريض، رقم: ٢٠٨٣

131. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब कोई मुसलमान बन्दा किसी मरीज़ की इयादत करे और सात मर्तबा यह दुआ पढ़े : 'अस् अलुल्लाहल अज़ीमि रब्बल अर्शिल अज़ीम ऐंय्यशिफ़-य-क' ''मैं अल्लाह तआला से सवाल करता हूं जो बड़े हैं, अर्शे अज़ीम के मालिक हैं कि वह तुमको शिफ़ा दें'' तो उसको ज़रूर शिफ़ा होगी, अलबत्ता अगर उसकी मौत का वक़्त आ गया हो तो और बात है। (तिर्मिज़ी)

﴿132﴾ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ شَهِدَ الْجَنَازَةَ حَتَّى يُصَلَّى عَلَيْهَا فَلَهُ قِيْرَاطٌ، وَمَنْ شَهِدَهَا حَتَّى تُدْفَنَ فَلَهُ قِيْرَاطَانِ، قِيْلَ: وَمَا الْقِيْرَاطَانِ؟ قَالَ: مِثْلُ الْجَبَلَيْنِ الْعَظِيْمَيْنِ. رواه مسلم، باب فضل الصلوة على الجنازة واتباعها، رقم: ٢١٨٩

وفي رواية له: أَصْغَرُهُمَا مِثْلُ أُحُدٍ رقم: ٢١٩٢

132. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स जनाज़ा में हाज़िर होता है और नमाज़े जनाज़ा के पढ़े जाने तक जनाज़े के साथ रहता है तो उसको एक क़ीरात सवाब मिलता है और जो शख़्स जनाज़े में हाज़िर होता है और दफ़न से फ़रागत तक जनाज़े के साथ रहता है, तो उसको दो क़ीरात का सवाब मिलता है। रसूलुल्लाह ﷺ से दरयाफ़्त किया गया : दो क़ीरात क्या है? इर्शाद फ़रमाया : (दो क़ीरात) दो बड़े पहाड़ों के बराबर हैं। एक और रिवायत में है कि दो पहाड़ों में से छोटा उहुद पहाड़ की तरह है। (मुस्लिम)

﴾133﴿ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَا مِنْ مَيِّتٍ يُصَلِّيْ عَلَيْهِ أُمَّةٌ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ يَبْلُغُوْنَ مِائَةً، كُلُّهُمْ يَشْفَعُوْنَ لَهُ إِلَّا شُفِّعُوْا فِيْهِ.

رواه مسلم، باب من صلى عليه مائة...... رقم: ٢١٩٨

133. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस मैयत पर मुसलमानों की एक बड़ी जमाअत नमाज़ पढ़े जिनकी तादाद सौ तक पहुंच जाए और वे सब अल्लाह तआला से मैयत के लिए सिफ़ारिश करें, यानी मग़फ़िरत व रहमत की दुआ करें तो उनकी सिफ़ारिश ज़रूर क़ुबूल होगी। (मुस्लिम)

﴾134﴿ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ عَزَّى مُصَابًا فَلَهُ مِثْلُ أَجْرِهِ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث غريب، باب ما جاء في اجر من عزى مصابا، رقم: ١٠٧٣

134. हज़रत अब्दुल्लाह ؓ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी मुसीबतज़दा को तसल्ली देता है, तो उसको मुसीबतज़दा की तरह सवाब मिलता है। (तिर्मिज़ी)

﴾135﴿ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ حَزْمٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: مَا مِنْ مُؤْمِنٍ يُعَزِّيْ أَخَاهُ بِمُصِيْبَةٍ إِلَّا كَسَاهُ اللهُ سُبْحَانَهُ مِنْ حُلَلِ الْكَرَامَةِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

رواه ابن ماجه، باب ما جاء في ثواب من عزى مصابا، رقم: ١٦٠١

135. हज़रत मुहम्मद बिन उम्र बिन हज़्म ؓ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमया : जो मोमिन अपने किसी मोमिन भाई की मुसीबत में उसे सब्र व सुकून की तल्क़ीन करेगा, अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उसे इज़्ज़त के लिबास पहनाएंगे। (इब्ने माजा)

﴾136﴿ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: دَخَلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ عَلَى أَبِيْ سَلَمَةَ وَقَدْ شَقَّ بَصَرُهُ، فَأَغْمَضَهُ، ثُمَّ قَالَ: إِنَّ الرُّوْحَ إِذَا قُبِضَ تَبِعَهُ الْبَصَرُ فَضَجَّ نَاسٌ مِنْ أَهْلِهِ فَقَالَ: لَا تَدْعُوْا عَلَى أَنْفُسِكُمْ إِلَّا بِخَيْرٍ، فَإِنَّ الْمَلَائِكَةَ يُؤَمِّنُوْنَ عَلَى مَا تَقُوْلُوْنَ. ثُمَّ قَالَ: اَللّٰهُمَّ! اغْفِرْ لِأَبِيْ سَلَمَةَ وَارْفَعْ دَرَجَتَهُ فِي الْمَهْدِيِّيْنَ وَاخْلُفْهُ فِيْ عَقِبِهِ فِي الْغَابِرِيْنَ، وَاغْفِرْ لَنَا وَلَهُ يَا رَبَّ الْعَالَمِيْنَ! وَافْسَحْ لَهُ فِيْ قَبْرِهِ، وَنَوِّرْ لَهُ فِيْهِ.

رواه مسلم، باب في اغماض الميت والدعاء له اذا حضر، رقم: ٢١٣٠

136. हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ हज़रत अबू सलमा के इंतिक़ाल के बाद तशरीफ़ लाए। हज़रत अबू सलमा ؓ की आंखें खुली हुई थीं। आप ﷺ ने उनकी आंखें बन्द फ़रमाईं और इर्शाद फ़रमाया : जब रूह क़ब्ज़ की जाती है तो निगाह जाती हुई रूह को देखने की वजह से ऊपर उठी रह जाती है (इसी वजह से रसूलुल्लाह ﷺ ने उनकी आंखों को बन्द फ़रमाया)। उनके घर के कुछ लोगों ने आवाज़ से रोना शुरू कर दिया। (मुम्किन है कि कुछ नामुनासिब अल्फ़ाज़ भी कह दिए हों) तो आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम अपने लिए सिर्फ़ ख़ैर की दुआ़ करो, क्योंकि फ़रिश्ते तुम्हारी दुआ़ पर आमीन कहते हैं। फिर आप ﷺ ने दुआ़ फ़रमाई।

> **तर्जुमा** : ऐ अल्लाह! अबू सलमा की मग़्फ़िरत फ़रमा दीजिए और हिदायत पाए हुए लोगों में शामिल फ़रमा कर उनका दर्जा बुलन्द फ़रमा दीजिए और उनके बाद उनके पीछे रहने वालों की निगहबानी फ़रमाइए। रब्बुल आ़लमीन हमारी और उनकी मग़्फ़िरत फ़रमा दीजिए, उनकी क़ब्र को कुशादा फ़रमा दीजिए और उनकी क़ब्र को रौशन फ़रमा दीजिए। (मुस्लिम)

फ़ायदा : जब कोई शख़्स किसी दूसरे मुसलमान के लिए यह दुआ़ पढ़े तो 'अबी सलमा' की जगह मरने वाले का नाम ले और नाम से पहले ज़ेर वाला लाम लगा दे मसलन लिज़ैदिन कहे।

﴿137﴾ عَنْ اَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقُوْلُ: دَعْوَةُ الْمَرْءِ الْمُسْلِمِ لِاَخِيْهِ بِظَهْرِ الْغَيْبِ مُسْتَجَابَةٌ، عِنْدَ رَأْسِهِ مَلَكٌ مُوَكَّلٌ، كُلَّمَا دَعَا لِاَخِيْهِ بِخَيْرٍ، قَالَ الْمَلَكُ الْمُوَكَّلُ بِهِ: آمِيْنَ، وَلَكَ بِمِثْلٍ.

رواه مسلم، باب فضل الدعاء للمسلمين بظهر الغيب، رقم: ٦٩٢٩

137. हज़रत अबुद्दर्दा ؓ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ इर्शाद फ़रमाते थे : मुसलमान की दुआ़ अपने मुसलमान भाई के लिए पीठ पीछे क़ुबूल होती है। दुआ़ करने वाले के सर की जानिब एक फ़रिश्ता मुक़र्रर है, जब भी यह दुआ़ करने वाला अपने भाई के लिए भलाई की दुआ़ करता है तो उस पर वह फ़रिश्ता आमीन कहता है और (दुआ़ करने वाले से कहता है) अल्लाह तआ़ला तुम्हें भी उस जैसी भलाई दे, जो तुमने अपने भाई के लिए मांगी है। (मुस्लिम)

﴿138﴾ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لَا يُؤْمِنُ أَحَدُكُمْ حَتَّى يُحِبَّ لِأَخِيهِ مَا يُحِبُّ لِنَفْسِهِ. رواه البخاري باب من الايمان أن يحب لاخيه ... رقم: ١٣

38. हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुममें से कोई शख़्स उस वक़्त तक (कामिल) ईमान वाला नहीं हो सकता, जब तक कि अपने मुसलमान भाई के लिए वही पसन्द न करे जो अपने लिए पसन्द करता है। (बुख़ारी)

﴿139﴾ عَنْ خَالِدِ بْنِ عَبْدِاللهِ الْقَسْرِيِّ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ جَدِّي رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: أَتُحِبُّ الْجَنَّةَ؟ قَالَ: قُلْتُ نَعَمْ! قَالَ: فَأَحِبَّ لِأَخِيكَ مَا تُحِبُّ لِنَفْسِكَ. رواه احمد ٤/٧٠

39. हज़रत ख़ालिद बिन अब्दुल्लाह क़ुसरी रह० अपने वालिद से और वह अपने दादा से नक़ल करते हैं कि उनसे रसूलुल्लाह ﷺ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : क्या तुमको जन्नत पसन्द है यानी क्या तुम जन्नत में जाना पसन्द करते हो? मैंने अर्ज़ किया : जी हां! इर्शाद फ़रमाया : अपने भाई के लिए वही पसन्द करो जो अपने लिए पसन्द करते हो। (मुस्नद अहमद)

﴿140﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ قَالَ: إِنَّ الدِّينَ النَّصِيحَةُ، إِنَّ الدِّينَ النَّصِيحَةُ، إِنَّ الدِّينَ النَّصِيحَةُ قَالُوا: لِمَنْ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: لِلّٰهِ، وَلِكِتَابِهِ، وَلِرَسُولِهِ، وَلِأَئِمَّةِ الْمُسْلِمِينَ وَعَامَّتِهِمْ. رواه النسائي باب النصيحة للامام رقم: ٤٢٠٤

40. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बेशक दीन ख़ुलूस और वफ़ादारी का नाम है। बेशक दीन ख़ुलूस और वफ़ादारी का नाम है, बेशक दीन ख़ुलूस और वफ़ादारी का नाम है। सहाबा ﷺ ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! किसके साथ ख़ुलूस और वफ़ादारी? इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला के साथ, अल्लाह तआला की किताब के साथ, अल्लाह तआला के रसूल के साथ, मुसलमानों के हाकिमों के साथ और उनके अवाम के साथ। (नसाई)

फ़ायदा : अल्लाह तआला के साथ ख़ुलूस और वफ़ादारी का मतलब यह है कि उन पर ईमान लाया जाए, उनके साथ इन्तिहाई मुहब्बत की जाए, उनसे डरा जाए, उनकी इताअत व इबादत की जाए और उनके साथ किसी को शरीक न किया जाए।

अल्लाह तआला की किताब के साथ वफ़ादारी यह है कि उस पर ईमान लाया जाए, उसकी अ़ज़्मत का हक़ अदा किया जाए, उसका इल्म हासिल किया जाए, उसका इल्म फैलाया जाए और उस पर अ़मल किया जाए।

अल्लाह के रसूल ﷺ के साथ ख़ुलूस और वफ़ादारी यह है कि उनकी तस्दीक़ की जाए, उनकी ताज़ीम की जाए, उनसे और उनकी सुन्नतों से मुहब्बत की जाए और दिल व जान से उनकी इत्तबाअ़ में अपनी नजात समझी जाए।

मुसलमानों के हाकिमों के साथ ख़ुलूस व वफ़ादारी यह है कि उनकी ज़िम्मेदारियों की अदायगी में उनकी मदद की जाए, उनके साथ अच्छा गुमान रखा जाए, अगर उनसे कोई ग़लती होती नज़र आए तो बेहतर तरीक़े पर उसकी इस्लाह की कोशिश की जाए, उनको अच्छे मशवरे दिए जाएं और जायज़ कामों में उनकी बात मानी जाए। आम मुसलमानों के साथ ख़ुलूस व वफ़ादारी यह है कि उनकी हमदर्दी व ख़ैरख़्वाही का पूरा-पूरा ख़्याल रखा जाए, जिसमें उनको दीन की तरफ़ मुतवज्जह करना भी शामिल है, उनका नफ़ा अपना नफ़ा और उनका नुक़सान अपना नुक़सान समझा जाए, जितना मुम्किन हो उनकी मदद की जाए, उनके हुक़ूक़ को अदा किया जाए।

(मआरिफ़ुल हदीस)

﴿141﴾ عَنْ ثَوْبَانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ حَوْضِي مَا بَيْنَ عَدَنَ إِلَى عَمَّانَ أَكْوَابُهُ عَدَدُ النُّجُوْمِ مَاؤُهُ أَشَدُّ بَيَاضًا مِنَ الثَّلْجِ، وَأَحْلَى مِنَ الْعَسَلِ، أَوَّلُ مَنْ يَرِدُهُ فُقَرَاءُ الْمُهَاجِرِيْنَ، قُلْنَا: يَا رَسُوْلَ اللهِ! صِفْهُمْ لَنَا، قَالَ: شُعْثُ الرُّؤُوْسِ، دُنْسُ الثِّيَابِ الَّذِيْنَ لَا يَنْكِحُوْنَ الْمُتَنَعِّمَاتِ، وَلَا تُفْتَحُ لَهُمُ السُّدَدُ، الَّذِيْنَ يُعْطُوْنَ مَا عَلَيْهِمْ، لَا يُعْطَوْنَ مَا لَهُمْ.

رواه الطبراني ورجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ١٠/٤٥٧

141. हज़रत सौबान ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरे हौज़ की जगह अ़दन से अ़म्मान तक की मुसाफ़त के बराबर है। उसके प ने गिनती में आसमान के सितारों की तरह (बेशुमार) हैं, उसका पानी बर्फ़ से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठा है। उस हौज़ पर जो लोग सबसे पहले आएंगे ह फ़ुक़रा-व मुहाजिरीन होंगे। हमने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! हमें बताइए कि वे लोग कैसे होंगे? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बिखरे बालों वाले, मैले कपड़ों वाले, जो नाज़ व नेमत में रहने वाली औरतों से निकाह नहीं कर सकते, जिन के l ए

दरवाज़े नहीं खोले जाते, यानी जिनको ख़ुश आमदीद नहीं किया जाता और वे लोग उन तमाम हुकूक़ को अदा करते हैं जो उनके ज़िम्मे हैं जबकि उनके हुकूक़ अदा नहीं किए जाते। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : अ़दन यमन का मशहूर मक़ाम है और अ़म्मान जॉर्डन का मशहूर शहर है। निशानी के लिए इस हदीस में अ़दन और अ़म्मान का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया गया है। मतलब यह है कि इस दुनिया में अ़दन और अ़म्मान का जितना फ़ासला है, आख़िरत में हौज़ की लम्बाई-चौड़ाई इस मुसाफ़त के बराबर है, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि हौज़ की जगह ठीक इतनी ही मुसाफ़त के बराबर है, बल्कि यह समझाने के लिए है कि हौज़ की लम्बाई चौड़ाई सैंकड़ों मील पर फैली हुई है। (मआरिफ़ुल हदीस)

﴾142﴿ عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا تَكُوْنُوْا إِمَّعَةً تَقُوْلُوْنَ: إِنْ أَحْسَنَ النَّاسُ أَحْسَنَّا، وَإِنْ ظَلَمُوْا ظَلَمْنَا، وَلٰكِنْ وَطِّنُوْا أَنْفُسَكُمْ، إِنْ أَحْسَنَ النَّاسُ أَنْ تُحْسِنُوْا، وَإِنْ أَسَاءُوْا فَلَا تَظْلِمُوْا.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ماجاء في الاحسان والعفو، رقم: ٢٠٠٧

142. हज़रत हुज़ैफ़ा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम दूसरों की देखा देखी काम न किया करो, यूं कहने लगो अगर लोग हमारे साथ भलाई करें तो हम भी उनके साथ भलाई करें और अगर लोग हमारे ऊपर ज़ुल्म करें, तो हम भी उन पर ज़ुल्म करें बल्कि तुम अपने आपको इस बात पर क़ायम रखो कि अगर लोग भलाई करें तो तुम भी भलाई करो और अगर लोग बुरा सुलूक करें तब भी तुम ज़ुल्म न करो। (तिर्मिज़ी)

﴾143﴿ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: مَا انْتَقَمَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ لِنَفْسِهِ فِي شَيْءٍ قَطُّ إِلَّا أَنْ تُنْتَهَكَ حُرْمَةُ اللهِ فَيَنْتَقِمُ بِهَا لِلّٰهِ. (وهو بعض الحديث) رواه البخاري، باب قول النبي ﷺ يسروا ولا تعسروا...، رقم: ٦١٢٦

143. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने ज़ाती मामले में कभी किसी से इंतिक़ाम नहीं लिया, लेकिन जब अल्लाह तआ़ला की हराम की हुई चीज़ का इरतकाब किया जाता तो आप ﷺ अल्लाह तआ़ला का हुक्म टूटने की वजह से सज़ा देते थे। (बुख़ारी)

﴿144﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اِنَّ الْعَبْدَ اِذَا نَصَحَ لِسَيِّدِهٖ، وَ اَحْسَنَ عِبَادَةَ اللهِ، فَلَهُ اَجْرُهُ مَرَّتَيْنِ۔ رواہ مسلم، باب ثواب العبد......، رقم: ٤٣١٨

144. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो गुलाम अपने आक़ा के साथ ख़ैरख़्वाही और वफ़ादारी करे और अल्लाह तआला की इबादत भी अच्छी तरह करे, वह दोहरे सवाब का मुस्तहिक़ होगा। (मुस्लिम)

﴿145﴾ عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ كَانَ لَهُ عَلٰى رَجُلٍ حَقٌّ فَمَنْ اَخَّرَهُ كَانَ لَهُ بِكُلِّ يَوْمٍ صَدَقَةٌ۔ رواہ احمد ٤/٤٤٢

145. हज़रत इमरान बिन हुसैन ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स का किसी दूसरे शख़्स पर कोई हक़ (क़र्ज़ा वग़ैरह) हो और वह उस मक़रूज़ को अदा करने के लिए देर तक मोहलत दे दे, तो उसको हर दिन के बदले सदक़े का सवाब मिलेगा। (मुस्नद अहमद)

﴿146﴾ عَنْ اَبِيْ مُوْسَى الْاَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ مِنْ اِجْلَالِ اللهِ اِكْرَامَ ذِي الشَّيْبَةِ الْمُسْلِمِ، وَحَامِلِ الْقُرْآنِ غَيْرِ الْغَالِيْ فِيْهِ وَالْجَافِيْ عَنْهُ، وَاِكْرَامَ ذِي السُّلْطَانِ الْمُقْسِطِ۔ رواہ ابوداؤد، باب فی تنزیل الناس منازلھم، رقم: ٤٨٤٣

146. हज़रत अबू मूसा अशअरी ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तीन क़िस्म के लोगों का इकराम करना अल्लाह तआला की ताज़ीम करने में शामिल है। एक बूढ़ा मुसलमान, दूसरा वह हाफ़िज़े क़ुरआन, जो एतदाल पर रहे, तीसरा इंसाफ़ करने वाला हाकिम। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : एतदाल पर रहने का मतलब यह है कि क़ुरआन की तिलावत का एहतमाम भी करे और रियाकारों की तरह तज्वीद और हुरूफ़ की अदायगी में तजावुज़ न करे। (बज़्लुलमज्हूद)

﴿147﴾ عَنْ اَبِيْ بَكْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ اَكْرَمَ سُلْطَانَ اللهِ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى فِي الدُّنْيَا اَكْرَمَهُ اللهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَمَنْ اَهَانَ سُلْطَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ فِي الدُّنْيَا اَهَانَهُ اللهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ۔

رواہ احمد و الطبرانی باختصار ورجال احمد ثقات، مجمع الزوائد ٥/٣٨٨

147. हज़रत अबू बकरः ﷺ रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से दुनिया में मुक़र्रर किए हुए बादशाह का इकराम करता है, अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उसका इकराम फ़रमाएंगे और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से दुनिया में मुक़र्रर किए हुए बादशाह की बेइज़्ज़ती करता है अल्लाह तआ़ला उसे क़ियामत के दिन ज़लील करेंगे।

(मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾148﴿ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْبَرَكَةُ مَعَ اَكَابِرِكُمْ۔

رواه الحاكم وقال: صحيح على شرط البخاري ووافقه الذهبي ١/٦٢

148. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बरकत तुम्हारे बड़ों के साथ है। (मुस्तदरक हाकिम)

फ़ायदा : मतलब यह है कि जिनकी उम्र बड़ी है और इस वजह से नेकियां भी ज़्यादा हैं, उनमें ख़ैर व बरकत है। (हाशियः अत्तर्ग़ीब)

﴾149﴿ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَيْسَ مِنْ اُمَّتِيْ مَنْ لَّمْ يُجِلَّ كَبِيْرَنَا، وَيَرْحَمْ صَغِيْرَنَا، وَيَعْرِفْ لِعَالِمِنَا حَقَّهُ۔

رواه احمد والطبراني في الكبير واسناده حسن، مجمع الزوائد ١/٣٣٨

149. हज़रत उबादा बिन सामित ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स हमारे बड़ों की ताज़ीम न करे, हमारे बच्चों पर रहम न करे और हमारे आ़लिम का हक़ न पहचाने, वह मेरी उम्मत में से नहीं है।

(मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾150﴿ عَنْ اَبِيْ اُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اُوْصِي الْخَلِيْفَةَ مِنْ بَعْدِيْ بِتَقْوَى اللهِ، وَاُوْصِيْهِ بِجَمَاعَةِ الْمُسْلِمِيْنَ اَنْ يُعَظِّمَ كَبِيْرَهُمْ، وَيَرْحَمَ صَغِيْرَهُمْ، وَيُوَقِّرَ عَالِمَهُمْ، وَ اَنْ لَا يَضْرِبَهُمْ فَيُذِلَّهُمْ، وَلَا يُوْحِشَهُمْ فَيُكَفِّرَهُمْ، وَاَنْ لَا يُخْصِيَهُمْ فَيَقْطَعَ نَسْلَهُمْ، وَاَنْ لَا يُغْلِقَ بَابَهُ دُوْنَهُمْ فَيَاْكُلَ قَوِيُّهُمْ ضَعِيْفَهُمْ۔

رواه البيهقي في السنن الكبرى ٨/١٦١

150. हज़रत अबू उमामा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं अपने बाद वाले ख़लीफ़ा को अल्लाह तआ़ला से डरने की वसीयत करता हूं और उसे मुसलमानों की जमाअ़त के बारे में यह वसीयत करता हूं कि वह

मुसलमानों के बड़ों की ताज़ीम करे, उनके छोटों पर रहम करे, उनके उलमा की इज़्ज़त करे, उनको ऐसा न मारे कि उनको ज़लील कर दे, उनको ऐसा न डराए कि उनको काफ़िर बना दे, उनको ख़स्सी न करे कि उनकी नस्ल को ख़त्म कर दे और अपना दरवाज़ा उनकी फ़रयाद के लिए बन्द न करे कि उसकी वजह से क़वी लोग कमज़ोरों को खा जाएं यानी ज़ुल्म आम हो जाए। (बैहक़ी)

﴿151﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَقِيْلُوْا ذَوِى الْهَيْئَاتِ عَثَرَاتِهِمْ اِلَّا الْحُدُوْدَ.

رواه ابو داؤد، باب في الحد يشفع فيه، رقم: ٤٣٧٥

151. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : नेक लोगों की लग़ज़िशों को माफ़ कर दिया करो, अलबत्ता अगर वह कोई ऐसा गुनाह करें जिसकी वजह से उन पर हद जारी होती हो वह माफ़ नहीं की जाएगी। (अबूदाऊद)

﴿152﴾ عَنْ عَمْرِوبْنِ شُعَيْبٍ عَنْ اَبِيْهِ عَنْ جَدِّهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَهٰى عَنْ نَتْفِ الشَّيْبِ وَقَالَ: اِنَّهُ نُوْرُ الْمُسْلِمِ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن، باب ماجاء في النهي عن نتف الشيب، رقم: ٢٨٢١

152. हज़रत अम्र बिन शुऐब अपने बाप दादा के हवाले से रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने सफ़ेद बालों को नोचने से मना फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया कि यह बुढ़ापा मुसलमान का नूर है। (तिर्मिज़ी)

﴿153﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَا تَنْتِفُوا الشَّيْبَ، فَاِنَّهُ نُوْرٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَمَنْ شَابَ شَيْبَةً فِي الْاِسْلَامِ كُتِبَ لَهُ بِهَا حَسَنَةٌ، وَحُطَّ عَنْهُ بِهَا خَطِيْئَةٌ، وَرُفِعَ لَهُ بِهَا دَرَجَةٌ.

رواه ابن حبان، قال المحقق: إسناده حسن ٧/٢٥٣

153. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सफ़ेद बालों को न उखाड़ा करो, क्योंकि ये क़ियामत के दिन नूर का सबब होंगे। जो शख़्स इस्लाम की हालत में बूढ़ा होता है, यानी जबकि मुसलमान का एक बाल सफ़ेद होता है तो उसकी वजह से उसके लिए एक नेकी लिख दी जाती है, एक गुनाह माफ़ कर दिया जाता है और एक दर्जा बुलन्द कर दिया जाता है।

(इब्ने हब्बान)

﴿154﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: إِنَّ لِلّٰهِ تَعَالٰى أَقْوَامًا يَخْتَصُّهُمْ بِالنِّعَمِ لِمَنَافِعِ الْعِبَادِ وَيُقِرُّهَا فِيْهِمْ مَا بَذَلُوْهَا، فَإِذَا مَنَعُوْهَا نَزَعَهَا مِنْهُمْ فَحَوَّلَهَا إِلٰى غَيْرِهِمْ۔ رواه الطبراني في الكبير وابو نعيم في الحلية وهو حديث حسن، الجامع الصغير ١/٣٥٨

154. हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला कुछ लोगों को ख़ास तौर पर नेमतें इसलिए देते हैं, ताकि ये लोगों को नफ़ा पहुंचाएं। जब तक वे लोगों को नफ़ा पहुंचाते रहते हैं उनको उन नेमतों में ही रखते हैं और जब ये ऐसा करना छोड़ देते हैं, तो अल्लाह तआ़ला उनसे नेमतें लेकर दूसरों को दे देते हैं।

(तबरानी, हिलयतुल औलिया, जामेअ़ सग़ीर)

﴿155﴾ عَنْ أَبِيْ ذَرٍّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: تَبَسُّمُكَ فِيْ وَجْهِ أَخِيْكَ لَكَ صَدَقَةٌ، وَأَمْرُكَ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْيُكَ عَنِ الْمُنْكَرِ صَدَقَةٌ، وَإِرْشَادُكَ الرَّجُلَ فِيْ أَرْضِ الضَّلَالِ لَكَ صَدَقَةٌ، وَبَصَرُكَ لِلرَّجُلِ الرَّدِيْءِ الْبَصَرِ لَكَ صَدَقَةٌ، وَإِمَاطَتُكَ الْحَجَرَ وَالشَّوْكَ وَالْعَظْمَ عَنِ الطَّرِيْقِ لَكَ صَدَقَةٌ، وَإِفْرَاغُكَ مِنْ دَلْوِكَ فِيْ دَلْوِ أَخِيْكَ لَكَ صَدَقَةٌ۔

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب باب ماجاء في صنائع المعروف، رقم: ١٩٥٦

155. हज़रत अबूज़र ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम्हारा अपने (मुसलमान) भाई के लिए मुस्कराना सदक़ा है, तुम्हारा किसी को नेकी का हुक्म करना और बुराई से रोकना सदक़ा है, किसी भूले हुए को रास्ता बताना सदक़ा है, कमज़ोर निगाह वाले को रास्ता दिखाना सदक़ा है, पत्थर, कांटा, हड्डी (वग़ैरह) का रास्ते से हटा देना सदक़ा है और तुम्हारा अपने डोल से अपने भाई के डोल में पानी डाल देना सदक़ा है। (तिर्मिज़ी)

﴿156﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ مَشٰى فِيْ حَاجَةِ أَخِيْهِ كَانَ خَيْرًا لَهُ مِنِ اعْتِكَافِهِ عَشْرَ سِنِيْنَ، وَمَنِ اعْتَكَفَ يَوْمًا ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللّٰهِ جَعَلَ اللّٰهُ بَيْنَهُ وَبَيْنَ النَّارِ ثَلَاثَ خَنَادِقَ، كُلُّ خَنْدَقٍ أَبْعَدُ مَا بَيْنَ الْخَافِقَيْنِ۔

رواه الطبراني في الاوسط واسناده جيد، مجمع الزوائد ٨/٣٥١

156. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अपने किसी भाई के काम के लिए चलकर जाता है, तो उसका यह अ़मल दस साल के एतिकाफ़ से अफ़ज़ल है। जो शख़्स एक दिन का एतिकाफ़

तआ़ला की रिज़ा के लिए करता है अल्लाह तआ़ला उसके और जहन्नम के दर्मियान तीन ख़न्दक़ें आड़ फ़रमा देते हैं। हर ख़न्दक़ आसमान व ज़मीन की मुसाफ़त से ज़्यादा चौड़ी है। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾157﴿ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِاللهِ وَاَبِیْ طَلْحَةَ بْنِ سَهْلٍ الْاَنْصَارِیِّ رَضِیَ اللهُ عَنْهُمْ يَقُوْلَانِ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا مِنِ امْرِیءٍ يَخْذُلُ امْرَءًا مُسْلِمًا فِیْ مَوْضِعٍ يُنْتَهَكُ فِيْهِ حُرْمَتُهٗ وَيُنْتَقَصُ فِيْهِ مِنْ عِرْضِهٖ اِلَّا خَذَلَهُ اللهُ فِیْ مَوْطِنٍ يُحِبُّ فِيْهِ نُصْرَتَهٗ، وَمَا مِنِ امْرِیءٍ يَنْصُرُ مُسْلِمًا فِیْ مَوْضِعٍ يُنْتَقَصُ فِيْهِ مِنْ عِرْضِهٖ وَيُنْتَهَكُ فِيْهِ مِنْ حُرْمَتِهٖ اِلَّا نَصَرَهُ اللهُ فِیْ مَوْطِنٍ يُحِبُّ نُصْرَتَهٗ. رواه ابوداؤد، باب الرجل يذب عن عرض اخيه، رقم: ٤٨٨٤

157. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह और हज़रत अबू तलहा बिन सह्ल अन्सारी ﷺ रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी मुसलमान की मदद से ऐसे मौक़े पर हाथ खींच लेता है, जबकि उसकी इज़्ज़त पर हमला किया जा रहा हो और उसकी आबरू को नुक़सान पहुंचाया जा रहा हो, तो अल्लाह तआ़ला उसको ऐसे मौक़े पर अपनी मदद से महरूम रखेंगे, जब वह अल्लाह तआ़ला की मदद का ख़्वाहिशमन्द (और तलबगार) होगा और जो शख़्स किसी मुसलमान की ऐसे मौक़े पर मदद और हिमायत करता है, जबकि उसकी इज़्ज़त पर हमला किया जा रहा हो और आबरू को नुक़सान पहुंचाया जा रहा हो तो अल्लाह तआ़ला ऐसे मौक़े पर उसकी मदद फ़रमाएंगे, जब वह उसकी नुसरत का ख़्वाहिशमन्द (और तलबगार) होगा। (अबूदाऊद)

﴾158﴿ عَنْ حُذَيْفَةَ بْنِ الْيَمَانِ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ لَا يَهْتَمُّ بِاَمْرِ الْمُسْلِمِيْنَ فَلَيْسَ مِنْهُمْ، وَمَنْ لَمْ يُصْبِحْ وَيُمْسِ نَاصِحًا لِلّٰهِ، وَلِرَسُوْلِهٖ، وَلِكِتَابِهٖ، وَلِاِمَامِهٖ، وَلِعَامَّةِ الْمُسْلِمِيْنَ فَلَيْسَ مِنْهُمْ. رواه الطبرانی من رواية عبد الله بن جعفر، الترغيب ٢/٥٧٧، وعبد الله بن جعفر وثقة ابوحاتم وابوزرعة وابن حبان، الترغيب ٢/٥٧٣

158. हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स मुसलमानों के मसाइल व मामलात को अहमियत न दे और उनके लिए फ़िक्र न करे, वह मुसलमानों में से नहीं है। जो सुबह व शाम अल्लाह तआ़ला, उनके रसूल, उनकी किताब, उनके इमाम यानी वक़्त के ख़लीफ़ा और आम मुसलमानों का मुख़्लिस और वफ़ादार न हो, यानी जो शख़्स दिन रात में किसी वक़्त भी इस ख़ुलूस और ख़ैरख़्वाही से ख़ाली हो वह मुसलमानों में से नहीं है। (तबरानी, तर्ग़ीब)

﴿159﴾ عَنْ سَالِمٍ عَنْ اَبِيْهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: مَنْ كَانَ فِي حَاجَةِ اَخِيْهِ كَانَ اللهُ فِي حَاجَتِهِ.

(وهو جزء من الحديث) رواه ابو داؤد، باب المؤاخاة، رقم:٤٨٩٣

159. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो कोई अपने भाई की हाजत पूरी करता है अल्लाह तआ़ला उसकी हाजत पूरी फ़रमाते हैं। (अबूदाऊद)

﴿160﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اَلدَّالُّ عَلَى الْخَيْرِ كَفَاعِلِهِ وَاللهُ يُحِبُّ اِغَاثَةَ اللَّهْفَانِ.

رواه البزار من رواية زياد بن عبد الله النميري وقد وثق وله شواهد، الترغيب ١/ ١٢٠

160. हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो भलाई की तरफ़ रहनुमाई करता है, उसको भलाई करने वाले के बराबर सवाब मिलता है और अल्लाह तआ़ला परेशान हाल की मदद को पसन्द फ़रमाते हैं। (बज़्ज़ार, तर्ग़ीब)

﴿161﴾ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْمُؤْمِنُ يَاْلَفُ وَيُؤْلَفُ، وَلَا خَيْرَ فِيْ مَنْ لَا يَاْلَفُ وَلَا يُؤْلَفُ وَخَيْرُ النَّاسِ اَنْفَعُهُمْ لِلنَّاسِ.

رواه الدارقطني وهو حديث صحيح، الجامع الصغير ٢/ ٦٦١

161. हज़रत जाबिर ﷺ रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ईमान वाला मुहब्बत करता है और उससे मुहब्बत की जाती है। ऐसे शख़्स में कोई भलाई नहीं जो न मुहब्बत करे और न उससे मुहब्बत की जाए। और लोगों में बेहतरीन शख़्स वह है जो सबसे ज़्यादा लोगों को नफ़ा पहुंचाने वाला हो। (दारेक़ुत्नी, जामेअ़ सग़ीर)

﴿162﴾ عَنْ اَبِيْ مُوْسَى الْاَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ صَدَقَةٌ قَالُوْا: فَاِنْ لَّمْ يَجِدْ؟ قَالَ: فَيَعْمَلُ بِيَدَيْهِ فَيَنْفَعُ نَفْسَهُ وَيَتَصَدَّقُ قَالُوْا: فَاِنْ لَمْ يَسْتَطِعْ اَوْ لَمْ يَفْعَلْ؟ قَالَ: فَيُعِيْنُ ذَا الْحَاجَةِ الْمَلْهُوْفَ قَالُوْا: فَاِنْ لَمْ يَفْعَلْ؟ قَالَ: فَلْيَاْمُرْ بِالْخَيْرِ اَوْقَالَ: بِالْمَعْرُوْفِ قَالَ: فَاِنْ لَمْ يَفْعَلْ؟ قَالَ: فَلْيُمْسِكْ عَنِ الشَّرِّ فَاِنَّهُ لَهُ صَدَقَةٌ.

رواه البخاري، باب كل معروف صدقة، رقم: ٦٠٢٢

162. हज़रत अबू मूसा अशअ़री ﷺ फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हर मुसलमान को चाहिए कि सदक़ा दिया करे। लोगों ने दरयाफ़्त किया : अगर

उसके पास सदक़ा देने के लिए कुछ न हो तो क्या करे? इर्शाद फ़रमाया : अपने हाथों से मेहनत मज़दूरी करके अपने आप को भी फ़ायदा पहुंचाए और सदक़ा भी दे। लोगों ने अ़र्ज़ किया : अगर यह भी न कर सके या (कर सकता हो, फिर भी) न करे? इर्शाद फ़रमाया : किसी ग़मज़दा मुहताज की मदद कर दे। अ़र्ज़ किया : अगर यह भी न करे? इर्शाद फ़रमाया : तो किसी को भली बात बता दे। अ़र्ज़ किया : अगर यह भी न करे? इर्शाद फ़रमाया : तो (कम-से-कम) किसी को नुक़सान पहुंचाने से ही बाज़ रहे, क्योंकि यह भी उसके लिए सदक़ा है। (बुख़ारी)

﴿163﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ: الْمُؤْمِنُ مِرْآةُ الْمُؤْمِنِ، وَالْمُؤْمِنُ أَخُو الْمُؤْمِنِ يَكُفُّ عَلَيْهِ ضَيْعَتَهُ وَيَحُوْطُهُ مِنْ وَرَآئِهِ.

رواه ابوداؤد،باب في النصيحة والحياطة،رقم: ٤٩١٨

163. हज़रत अबू हुरैरह رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : एक मोमिन दूसरे मोमिन का आईना है और एक मोमिन दूसरे मोमिन का भाई है, उसके नुक़्सान को उससे रोकता है और उसकी हर तरफ़ से हिफ़ाज़त करता है। (अबूदाऊद)

﴿164﴾ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اُنْصُرْ أَخَاكَ ظَالِمًا أَوْ مَظْلُوْمًا، فَقَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! أَنْصُرُهُ إِذَا كَانَ مَظْلُوْمًا، أَفَرَأَيْتَ إِذَا كَانَ ظَالِمًا، كَيْفَ أَنْصُرُهُ؟ قَالَ: تَحْجُزُهُ أَوْ تَمْنَعُهُ مِنَ الظُّلْمِ، فَإِنَّ ذٰلِكَ نَصْرُهُ.

رواه البخاري، باب يمين الرجل لصاحبه انه اخوه...، رقم: ٦٩٥٢

164. हज़रत अनस رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अपने मुसलमान भाई की हर हालत में मदद किया करो, ख़्वाह वह ज़ालिम हो या मज़्लूम। एक शख़्स ने दरयाफ़्त किया : या रसूलुल्लाह! मज़्लूम होने की हालत में मैं उसकी मदद करूंगा यह बताइए कि ज़ालिम होने की सूरत में उसकी कैसे मदद करूं? अल्लाह के रसूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उसको ज़ुल्म करने से रोक दो, क्योंकि ज़ालिम को ज़ुल्म से रोकना ही उसकी मदद है। (बुख़ारी)

﴿165﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَبْلُغُ بِهِ النَّبِيَّ ﷺ: الرَّاحِمُوْنَ يَرْحَمُهُمُ الرَّحْمٰنُ، اِرْحَمُوْا أَهْلَ الْأَرْضِ يَرْحَمْكُمْ مَنْ فِي السَّمَاءِ.

رواه ابوداؤد،باب في الرحمة،رقم: ٤٩٤١

165. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رضی اللہ عنہ नबी करीम ﷺ का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं

करने वालों पर रहमान रहम करता है। तुम ज़मीन वालों पर रहम करो, आसमान वाला तुम पर रहम करेगा। (अबूदाऊद)

﴿166﴾ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْمَجَالِسُ بِالْاَمَانَةِ اِلَّا ثَلَاثَةَ مَجَالِسَ: سَفْكُ دَمٍ حَرَامٍ، اَوْ فَرْجٌ حَرَامٌ، اَوِاقْتِطَاعُ مَالٍ بِغَيْرِ حَقٍّ۔

رواه ابوداؤد، باب في نقل الحديث، رقم: ٤٨٦٩

166. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मज्लिसें अमानत हैं (उनमें की गई राज़ की बातें किसी को बताना जायज़ नहीं) सिवाए तीन मज्लिसों के (कि वे अमानत नहीं हैं बल्कि दूसरों तक उनका पहुंचा देना ज़रूरी है)। एक वह मज्लिस जिसका तअ़ल्लुक़ नाहक़ ख़ून बहाने की साज़िश से हो, दूसरी वह, जिसका तअ़ल्लुक़ ज़िनाकारी से हो, तीसरी वह जिसका तअ़ल्लुक़ नाहक़ किसी का माल छीनने से हो। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ में इन तीनों बातों का ज़िक्र बतौर मिसाल के है। मक़सद यह है कि अगर किसी मज्लिस में किसी मअ़सियत और ज़ुल्म के लिए कोई मशवरा किया जाए और तुमको भी उसमें शरीक किया जाए, तो फिर हरगिज़ उसको राज़ में न रखो। (मआ़रिफ़ुल हदीस)

﴿167﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْمُؤْمِنُ مَنْ اَمِنَهُ النَّاسُ، عَلٰى دِمَائِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ۔

رواه النسائي، باب صفة المؤمن، رقم ٤٩٩٨

167. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मोमिन वह है जिससे लोग अपनी जान और माल के बारे में अम्न में रहें। (नसाई)

﴿168﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اَلْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُوْنَ مِنْ لِسَانِهِ وَيَدِهِ، وَالْمُهَاجِرُ مَنْ هَجَرَ مَا نَهَى اللهُ عَنْهُ۔

رواه البخاري، باب المسلم من سلم المسلمون......رقم: ١٠

168. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्र ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुसलमान वह है जिसकी ज़बान और हाथ से मुसलमान महफ़ूज़ रहें और मुहाजिरीन यानी छोड़ने वाला वह है जो उन तमाम कामों को छोड़ दे, जिससे अल्लाह तआ़ला ने रोका है। (बुख़ारी)

﴿169﴾ عَنْ اَبِيْ مُوْسٰى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللهِ! اَيُّ الْاِسْلَامِ اَفْضَلُ؟

قَالَ: مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُوْنَ مِنْ لِسَانِهٖ وَيَدِهٖ۔ رواه البخاری،باب ای الاسلام افضل،رقم:١١

169. हज़रत अबू मूसा ﷺ रिवायत करते हैं कि सहाबा ﷺ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! कौन से मुसलमान का इस्लाम अफ़ज़ल है? इर्शाद फ़रमाया : जिस (मुसलमान) की ज़बान और हाथ से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ रहें। (बुख़ारी)

फ़ायदा : ज़बान से तकलीफ़ पहुंचाने में किसी का मज़ाक़ उड़ाना, तोहमत लगाना, बुरा-भला कहना और हाथ से तकलीफ़ पहुंचाने में किसी को नाहक़ मारना, किसी का माल ज़ुलमन लेना वग़ैरह उमूर शामिल हैं।(फ़त्हुलबारी)

﴿170﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ نَصَرَ قَوْمَهُ عَلٰى غَيْرِ الْحَقِّ فَهُوَ كَالْبَعِيْرِ الَّذِىْ رُدِّىَ فَهُوَ يُنْزَعُ بِذَنَبِهٖ۔

رواه ابوداؤد،باب فی العصبية، رقم: ٥١١٧

170. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो अपनी क़ौम की नाहक़ मदद करता है वह उस ऊंट की तरह है जो किसी कुएं में गिर गया हो और उसको दुम से पकड़ कर निकाला जा रहा हो। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : मतलब यह है कि जिस तरह कुएं में गिरे हुए ऊंट को दुम से पकड़ कर निकालने की कोशिश करना अपने आप को बेफ़ायदा मशक़्क़त में डालना है, क्योंकि इस तरीक़े से ऊंट को कुएं से नहीं निकाला जा सकता उसी तरह क़ौम की नाहक़ मदद करना भी बेफ़ायदा है, क्योंकि इस तरीक़े से क़ौम को सही रास्ते पर नहीं डाला जा सकता। (बज़्लुलमज्हूद)

﴿171﴾ عَنْ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَيْسَ مِنَّا مَنْ دَعَا اِلٰى عَصَبِيَّةٍ، وَلَيْسَ مِنَّا مَنْ قَاتَلَ عَلٰى عَصَبِيَّةٍ، وَلَيْسَ مِنَّا مَنْ مَاتَ عَلٰى عَصَبِيَّةٍ۔

رواه ابوداؤد، باب فی العصبية ،رقم: ٥١٢١

171. हज़रत ज़ुबैर बिन मुतइम ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो अ़सबीयत की दावत दे, वह हम में से नहीं, जो अ़सबीयत की बिना पर लड़े, वह हम में से नहीं और जो अ़सबीयत (के जज़्बे) पर मरे, वह हम में से नहीं। (अबूदाऊद)

﴿172﴾ عَنْ فُسَيْلَةَ رَحِمَهَا اللهُ اَنَّهَا سَمِعَتْ اَبَاهَا يَقُوْلُ: سَاَلْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ فَقُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! اَمِنَ الْعَصَبِيَّةِ اَنْ يُحِبَّ الرَّجُلُ قَوْمَهُ قَالَ: لَا، وَلٰكِنْ مِنَ الْعَصَبِيَّةِ اَنْ يَنْصُرَ

الرَّجُلُ قَوْمَهُ عَلَى الظُّلْمِ. رواه احمد ٤/١٠٧

172. हज़रत फ़ुसैला रहमतुल्लाहि अ़लैहा फ़रमाती हैं कि मैंने अपने वालिद को यह फ़रमाते हुए सुना कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ से दरयाफ़्त किया : क्या अपनी क़ौम से मुहब्बत करना भी अ़सबीयत में दाख़िल है? रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : (अपनी क़ौम से मुहब्बत करना) अ़सबीयत नहीं है, बल्कि अ़सबीयत यह है कि क़ौम के नाहक़ होने के बावजूद आदमी अपनी क़ौम की मदद करे। (मुस्नद अहमद)

﴿173﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قِيْلَ لِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ: اَيُّ النَّاسِ اَفْضَلُ؟ قَالَ: كُلُّ مَخْمُوْمِ الْقَلْبِ، صَدُوْقِ اللِّسَانِ قَالُوْا: صَدُوْقُ اللِّسَانِ، نَعْرِفُهُ فَمَا مَخْمُوْمُ الْقَلْبِ؟ قَالَ: هُوَ التَّقِيُّ النَّقِيُّ لَا اِثْمَ فِيْهِ وَلَا بَغْيَ وَلَا غِلَّ وَلَا حَسَدَ.

رواه ابن ماجه،باب الورع والتقوى،رقم: ٤٢١٦

173. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्र رضي الله عنهما से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ से दरयाफ़्त किया गया कि लोगों में कौन-सा शख़्स सबसे बेहतर है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हर वह शख़्स जो मख़मूम दिल और ज़बान का सच्चा हो। सहाबा رضي الله عنهم ने अ़र्ज़ किया : ज़बान का सच्चा तो हम समझते हैं, मख़मूम दिल से क्या मुराद है? इर्शाद फ़रमाया : मख़मूम दिल वह शख़्स है जो परहेज़गार हो, जिसका दिल साफ़ हो, जिसपर न तो गुनाहों का बोझ हो और न ज़ुल्म का, न उसके दिल में किसी के लिए कीना हो और न हसद। (इब्ने माजा)

फ़ायदा : "जिसका दिल साफ़ हो" से मुराद वह शख़्स है जिसका दिल अल्लाह तआ़ला के ग़ैर के ग़ुबार और ग़लत अफ़कार व ख़यालात से पाक हो। (मज़ाहिरे हक़)

﴿174﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا يُبَلِّغُنِيْ اَحَدٌ مِنْ اَصْحَابِيْ عَنْ اَحَدٍ شَيْئًا فَاِنِّيْ اُحِبُّ اَنْ اَخْرُجَ اِلَيْكُمْ وَاَنَا سَلِيْمُ الصَّدْرِ.

رواه ابوداؤد، باب في رفع الحديث من المجلس،رقم: ٤٨٦٠

174. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरे सहाबा में से कोई शख़्स मुझ तक किसी के बारे में कोई बात न पहुंचाया करे, क्योंकि मेरा दिल चाहता है कि जब मैं तुम्हारे पास आऊं तो मेरा

दिल तुम सब की तरफ़ से साफ़ हो। (अबूदाऊद)

﴿175﴾ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا جُلُوْسًا مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: يَطْلُعُ الْآنَ عَلَيْكُمْ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ فَطَلَعَ رَجُلٌ مِنَ الْأَنْصَارِ تَنْطِفُ لِحْيَتُهُ مِنْ وُضُوْئِهِ، وَقَدْ تَعَلَّقَ نَعْلَيْهِ بِيَدِهِ الشِّمَالِ، فَلَمَّا كَانَ الْغَدُ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ مِثْلَ ذٰلِكَ، فَطَلَعَ الرَّجُلُ مِثْلَ الْمَرَّةِ الْأُوْلٰى، فَلَمَّا كَانَ الْيَوْمُ الثَّالِثُ، قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِثْلَ مَقَالَتِهِ أَيْضًا، فَطَلَعَ ذٰلِكَ الرَّجُلُ مِثْلَ حَالِهِ الْأُوْلٰى، فَلَمَّا قَامَ النَّبِيُّ ﷺ تَبِعَهُ عَبْدُ اللهِ بْنُ عَمْرٍو فَقَالَ: إِنِّيْ لَاحَيْتُ أَبِيْ فَأَقْسَمْتُ أَنْ لَا أَدْخُلَ عَلَيْهِ ثَلَاثًا، فَإِنْ رَأَيْتَ أَنْ تُؤْوِيَنِيْ إِلَيْكَ حَتّٰى تَمْضِيَ فَعَلْتَ؟ قَالَ: نَعَمْ، قَالَ أَنَسٌ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: فَكَانَ عَبْدُ اللهِ يُحَدِّثُ أَنَّهُ بَاتَ مَعَهُ تِلْكَ الثَّلَاثَ اللَّيَالِيَ، فَلَمْ يَرَهُ يَقُوْمُ مِنَ اللَّيْلِ شَيْئًا، غَيْرَ أَنَّهُ إِذَا تَعَارَّ وَتَقَلَّبَ عَلٰى فِرَاشِهِ ذَكَرَ اللهَ عَزَّ وَجَلَّ، وَكَبَّرَ حَتّٰى يَقُوْمَ لِصَلَاةِ الْفَجْرِ، قَالَ عَبْدُ اللهِ: غَيْرَ أَنِّيْ لَمْ أَسْمَعْهُ يَقُوْلُ إِلَّا خَيْرًا، فَلَمَّا مَضَتِ الثَّلَاثُ اللَّيَالِيْ، وَكِدْتُ أَنْ أَحْتَقِرَ عَمَلَهُ، قُلْتُ: يَا عَبْدَ اللهِ! لَمْ يَكُنْ بَيْنِيْ وَبَيْنَ أَبِيْ غَضَبٌ وَلَا هَجْرٌ، وَلٰكِنِّيْ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ لَنَا ثَلَاثَ مِرَارٍ: يَطْلُعُ عَلَيْكُمُ الْآنَ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ، فَطَلَعْتَ أَنْتَ الثَّلَاثَ الْمِرَارِ، فَأَرَدْتُ أَنْ آوِيَ إِلَيْكَ فَأَنْظُرَ مَا عَمَلُكَ؟ فَأَقْتَدِيَ بِكَ، فَلَمْ أَرَكَ عَمِلْتَ كَثِيْرَ عَمَلٍ، فَمَا الَّذِيْ بَلَغَ بِكَ مَا قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ؟ قَالَ: مَا هُوَ إِلَّا مَا رَأَيْتَ، قَالَ: فَلَمَّا وَلَّيْتُ دَعَانِيْ فَقَالَ: مَا هُوَ إِلَّا مَا رَأَيْتَ غَيْرَ أَنِّيْ لَا أَجِدُ فِيْ نَفْسِيْ لِأَحَدٍ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ غِشًّا وَلَا أَحْسُدُ أَحَدًا عَلٰى خَيْرٍ أَعْطَاهُ اللهُ إِيَّاهُ فَقَالَ عَبْدُ اللهِ: هٰذِهِ الَّتِيْ بَلَغَتْ بِكَ وَهِيَ الَّتِيْ لَا نُطِيْقُ.

رواه احمد والبزار بنحوه و رجال احمد رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٨/ ١٥٠

175. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ फ़रमाते हैं कि हम लोग रसूलुल्लाह ﷺ के साथ बैठे हुए थे। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अभी तुम्हारे पास एक जन्नती आदमी आएगा। इतने में एक अन्सारी आए, जिनकी दाढ़ी से वुज़ू के पानी के क़तरे गिर रहे थे और उन्होंने जूते बाएं हाथ में थाम रखे थे। दूसरे दिन भी रसूलुल्लाह ﷺ ने वही बात फ़रमाई और फिर वही अन्सारी उसी हाल में आए जिस हाल में पहली मर्तबा आए थे। तीसरे दिन फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने वही बात फ़रमाई और वही अन्सारी उसी हाल में आए। जब रसूलुल्लाह ﷺ (मज्लिस से) उठे तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ अन्सारी के पीछे गए और उनसे कहा कि वालिद साहब से मेरा झगड़ा हो गया है, जिसकी वजह से मैंने क़सम खा ली है कि तीन दिन उनके पास न जाऊंगा। अगर आप मुनासिब समझें तो मुझे अपने हां तीन दिन ठहरा लें। उन्होंने

अच्छा। हज़रत अनस ؓ फ़रमाते हैं कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह ؓ बयान करते थे कि मैंने उनके पास तीन रातें गुज़ारीं। मैंने उनको रात में कोई इबादत करते हुए नहीं देखा। अलबत्ता जब रात को उनकी आंख खुल जाती और बिस्तर पर करवट बदलते तो अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करते और अल्लाहु अकबर कहते, यहां तक कि फ़ज्र की नमाज़ के लिए बिस्तर से उठते और एक बात यह भी थी कि मैंने उनसे ख़ैर के अलावा कुछ नहीं सुना। जब तीन रातें गुज़र गईं और मैं उनके अ़मल को मामूली ही समझ रहा था (और मैं हैरान था कि रसूलुल्लाह ﷺ ने उनके लिए बशारत तो इतनी बड़ी दी और उनका कोई ख़ास अ़मल तो है नहीं) तो मैंने उनसे कहा : अल्लाह के बन्दे! मेरे और मेरे बाप के दर्मियान न कोई नाराज़गी हुई और न जुदाई हुई, लेकिन (क़िस्सा यह हुआ कि) मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को (आपके बारे में) तीन मर्तबा यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अभी तुम्हारे पास एक जन्नती आदमी आने वाला है और तीनों मर्तबा आप ही आए। उस पर मैंने इरादा किया कि मैं आपके यहां रहकर आपका ख़ास अ़मल देखूं, ताकि (फिर उस अ़मल में) आपके नक़्शे क़दम पर चलूं। मैंने आप को ज़्यादा अ़मल करते हुए नहीं देखा (अब आप बताइए) कि आपका वह कौन-सा ख़ास अ़मल है जिसकी वजह से आप इस मर्तबे पर पहुंच गए जो रसूलुल्लाह ﷺ ने आपके लिए इर्शाद फ़रमाया? उन अन्सारी ने कहा : (मेरा कोई ख़ास अ़मल तो है नहीं) यही अ़मल है जो तुम ने देखे हैं। हज़रत अ़ब्दुल्लाह ؓ फ़रमाते हैं कि (मैं यह सुनकर चल पड़ा) जब मैंने पुश्त फेरी तो उन्होंने मुझे बुलाया और कहा : मेरे आमाल तो वही हैं जो तुमने देखे हैं अलबत्ता एक बात यह है कि मेरे दिल में किसी मुसलमान के बारे में खोट नहीं है और किसी को अल्लाह तआ़ला ने कोई ख़ास नेमत अ़ता फ़रमा रखी हो तो मैं उस पर उससे हसद नहीं करता। हज़रत अ़ब्दुल्लाह ؓ ने फ़रमाया : यही वह अ़मल है जिसकी वजह से तुम इस मर्तबे पर पहुंचे और यह ऐसा अ़मल है जिसको हम नहीं कर सकते। (मुस्नद अहमद, बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿176﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ وَسَّعَ عَلٰی مَكْرُوْبٍ كُرْبَةً فِی الدُّنْیَا وَسَّعَ اللّٰهُ عَلَیْهِ كُرْبَةً فِی الْاٰخِرَةِ، وَمَنْ سَتَرَ عَوْرَةَ مُسْلِمٍ فِی الدُّنْیَا سَتَرَ اللّٰهُ عَوْرَتَهٗ فِی الْاٰخِرَةِ. وَاللّٰهُ فِیْ عَوْنِ الْمَرْءِ مَا كَانَ فِیْ عَوْنِ اَخِیْهِ. رواه احمد ٢/٢٧٤

176. हज़रत अबू हुरैरह ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स दुनिया में किसी परेशान हाल की परेशानी को दूर करता है अल्लाह तआ़ला उसकी आख़िरत की कोई एक परेशानी दूर फ़रमाएगा और जो शख़्स दुनिया में किसी

मुसलमान के ऐबों पर पर्दा डालेगा, अल्लाह तआला आख़िरत में उसके ऐबों पर पर्दा डालेगा। जब तक आदमी अपने भाई की मदद करता रहता है अल्लाह तआला उसकी मदद फ़रमाता रहता है। (मुस्नद अहमद)

﴿177﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: كَانَ رَجُلَانِ فِي بَنِي إِسْرَائِيْلَ مُتَوَاخِيَيْنِ، فَكَانَ أَحَدُهُمَا يُذْنِبُ وَالْآخَرُ مُجْتَهِدٌ فِي الْعِبَادَةِ، فَكَانَ لَا يَزَالُ الْمُجْتَهِدُ يَرَى الْآخَرَ عَلَى الذَّنْبِ فَيَقُوْلُ: أَقْصِرْ، فَوَجَدَهُ يَوْمًا عَلَى ذَنْبٍ فَقَالَ لَهُ: أَقْصِرْ، فَقَالَ: خَلِّنِيْ وَرَبِّيْ أَبُعِثْتَ عَلَيَّ رَقِيْبًا؟ فَقَالَ: وَاللهِ! لَا يَغْفِرُ اللهُ لَكَ أَوْ لَا يُدْخِلُكَ اللهُ الْجَنَّةَ، فَقُبِضَ أَرْوَاحُهُمَا، فَاجْتَمَعَا عِنْدَ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، فَقَالَ لِهٰذَا الْمُجْتَهِدِ: أَكُنْتَ بِيْ عَالِمًا أَوْكُنْتَ عَلَى مَا فِي يَدِيْ قَادِرًا؟ وَقَالَ لِلْمُذْنِبِ: اِذْهَبْ فَادْخُلِ الْجَنَّةَ بِرَحْمَتِيْ، وَقَالَ لِلْآخَرِ: اِذْهَبُوْا بِهِ إِلَى النَّارِ. رواه ابو داؤد، باب في النهي عن البغي، رقم: ٤٩٠١

177. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : बनी इसराईल में दो दोस्त थे। एक उनमें गुनाह किया करता था और दूसरा ख़ूब इबादत किया करता था। आ़बिद जब भी गुनहगार को गुनाह करते हुए देखता तो उससे कहता कि गुनाह से रुक जा। एक दिन उसे गुनाह करते हुए देखा तो फिर कहा कि बाज़ आ जा। उसने कहा कि मुझे मेरे रब पर छोड़ दे (मैं जानूं, मेरा रब जाने) क्या तुझ को मुझ पर निगरां बनाकर भेजा गया है? आ़बिद ने (ग़ुस्से में आकर) कहा अल्लाह की क़सम! अल्लाह तआ़ला तेरी मग़्फ़िरत नहीं करेंगे या यह कहा कि अल्लाह तआ़ला तुझे जन्नत में दाख़िल नहीं करेंगे। फिर दोनों का इंतिक़ाल हो गया और (आ़लमे अरवाह) में दोनों अल्लाह तआ़ला के सामने जमा हो गए। अल्लाह तआ़ला ने आ़बिद से पूछा : क्या तुम मेरे बारे में जानते थे (कि मैं माफ़ नहीं करूंगा) या जो माफ़ करना मेरे कब्ज़े में है क्या तुम्हें उस पर क़ुदरत हासिल थी (कि तुम मुझे माफ़ करने से रोक दो कि जो दावा किया कि अल्लाह तआ़ला तेरी मग़्फ़िरत नहीं करेंगे) और गुनहगार से इर्शाद फ़रमाया : मेरी रहमत से जन्नत में चला जा (इसलिए कि वह रहमत का उम्मीदवार था और आ़बिद के बारे में (फ़रिश्तों से) फ़रमाया कि इसे दोख़ज़ में ले जाओ। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ का यह मतलब नहीं कि गुनाह पर जुर्अत की जाए इसलिए कि उस गुनहगार की माफ़ी अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल से हुई। ज़रूरी नहीं कि हर गुनहगार के साथ यही मामला हो क्योंकि उसूल तो यही है कि

गुनाह पर सज़ा हो और न यह मतलब है कि गुनाहों और नाजायज़ कामों से रोका न जाए। क़ुरआन व हदीस में सैकड़ों जगह गुनाहों से रोकने का हुक्म है और न रोकने पर वईद है।

﴿178﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يُبْصِرُ أَحَدُكُمُ الْقَذَاةَ فِي عَيْنِ أَخِيْهِ وَيَنْسَى الْجِذْعَ فِي عَيْنِهِ. رواه ابن حبان (ورجاله ثقات) ٧٣/١٣

178. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आदमी को अपने भाई की आंख का एक तिनका भी नज़र आ जाता है लेकिन अपनी आंख का शहतीर तक भी उसे नज़र नहीं आता। (इब्ने हब्बान)

फ़ायदा : मतलब यह है कि दूसरों के मामूली से मामूली ऐब नज़र आ जाते हैं और अपने बड़े-बड़े ऐबों पर नज़र नहीं जाती।

﴿179﴾ عَنْ أَبِي رَافِعٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ غَسَّلَ مَيِّتًا فَكَتَمَ عَلَيْهِ غَفَرَ اللهُ لَهُ أَرْبَعِيْنَ كَبِيْرَةً، وَمَنْ حَفَرَ لِأَخِيْهِ قَبْرًا حَتَّى يُجِنَّهُ فَكَأَنَّمَا أَسْكَنَهُ مَسْكَنًا حَتَّى يُبْعَثَ. رواه الطبراني في الكبير ورجاله رجال الصحيح مجمع الزوائد ٣/١١٤

179. हज़रत अबू राफ़ेअ् ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स मैय्यत को ग़ुस्ल देता है और उसके सतर को और अगर कोई ऐब पाए तो उसको छुपाता है, अल्लाह तआला उसके चालीस बड़े गुनाह माफ़ फ़रमा देते हैं और जो अपने भाई (की मैय्यत) के लिए क़ब्र खोदता है और उसको उसमें दफ़न करता है तो गोया उसने (क़ियामत के दिन) दोबारा ज़िन्दा उठाए जाने तक उसको एक मकान में ठहरा दिया, यानी उसको इस क़द्र अज्र मिलता है जितना कि उस शख़्स के लिए क़ियामत तक मकान देने का अज्र मिलता। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿180﴾ عَنْ أَبِي رَافِعٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ غَسَّلَ مَيِّتًا فَكَتَمَ عَلَيْهِ غُفِرَ لَهُ أَرْبَعِيْنَ مَرَّةً، وَمَنْ كَفَّنَ مَيِّتًا كَسَاهُ اللهُ مِنَ السُّنْدُسِ وَإِسْتَبْرَقِ الْجَنَّةِ.

(الحديث) رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح على شرط مسلم ووافقه الذهبي ١/٣٥٤

180. हज़रत अबू राफ़ेअ् ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी मैय्यत को ग़ुस्ल देता है, फिर उसके सतर को और कोई ऐब पाए तो उसको छुपाता है तो चालीस मर्तबा उसकी मग़्फ़िरत की जाती है और जो शख़्स मैय्यत को कफ़न देता है अल्लाह तआला उसको जन्नत के बारीक और मोटे रेशम

का लिबास पहनाएंगे। (मुस्तदरक हाकिम)

﴾181﴿ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّ رَجُلًا زَارَ أَخًا لَهُ فِي قَرْيَةٍ أُخْرَى، فَأَرْصَدَ اللهُ لَهُ عَلَى مَدْرَجَتِهِ مَلَكًا، فَلَمَّا أَتَى عَلَيْهِ قَالَ: أَيْنَ تُرِيدُ؟ قَالَ: أُرِيدُ أَخًا لِي فِي هٰذِهِ الْقَرْيَةِ، قَالَ: هَلْ لَكَ عَلَيْهِ مِنْ نِعْمَةٍ تَرُبُّهَا؟ قَالَ: لَا، غَيْرَ أَنِّي أَحْبَبْتُهُ فِي اللهِ عَزَّ وَجَلَّ، قَالَ: فَإِنِّي رَسُولُ اللهِ إِلَيْكَ، بِأَنَّ اللهَ قَدْ أَحَبَّكَ كَمَا أَحْبَبْتَهُ فِيهِ.

رواه مسلم باب فضل الحب في الله تعالى، رقم: ٦٥٤٩

181. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : एक शख़्स अपने (मुसलमान) भाई से दूसरी बस्ती में मुलाक़ात के लिए रवाना हुआ। अल्लाह तआला ने उस शख़्स के रास्ते पर एक फ़रिश्ते को बिठा दिया (जब वह शख़्स उस फ़रिश्ते के क़रीब पहुंचा तो) फ़रिश्ते ने उससे पूछा : तुम्हारा कहां जाने का इरादा है? उस शख़्स ने कहा : मैं उस बस्ती में रहने वाले अपने एक भाई से मिलने जा रहा हूं। फ़रिश्ते ने पूछा : क्या तुम्हारा उस पर कोई हक़ है जिसको लेने के लिए जा रहे हो? उस शख़्स ने कहा : नहीं मेरे जाने की वजह सिर्फ़ यह है कि मुझे उससे अल्लाह तआला के लिए मुहब्बत है। फ़रिश्ते ने कहा : मुझे अल्लाह तआला ने तुम्हारे पास यह बताने के लिए भेजा है कि जिस तरह तुम इस भाई से महज़ अल्लाह तआला की वजह से मुहब्बत करते हो अल्लाह तआला भी तुम से मुहब्बत करते हैं।
(मुस्लिम)

﴾182﴿ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: مَنْ سَرَّهُ أَنْ يَجِدَ طَعْمَ الْإِيمَانِ فَلْيُحِبَّ الْمَرْءَ لَا يُحِبُّهُ إِلَّا لِلهِ عَزَّ وَجَلَّ.

رواه احمد والبزار ورجاله ثقات مجمع الزوائد ٢٦٨/١

182. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स यह पसन्द करे कि उसे ईमान का ज़ायक़ा हासिल हो जाए तो उसे चाहिए कि महज़ अल्लाह तआला की रज़ा और ख़ुशनूदी के लिए दूसरे (मुसलमान) से मुहब्बत करे। (मुस्नद अहमद, बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾183﴿ عَنْ عَبْدِ اللهِ يَعْنِي ابْنَ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ مِنَ الْإِيْمَانِ أَنْ يُحِبَّ الرَّجُلُ رَجُلًا لَا يُحِبُّهُ إِلَّا لِلهِ مِنْ غَيْرِ مَالٍ أَعْطَاهُ فَذٰلِكَ الْإِيْمَانُ.

رواه الطبراني في الاوسط ورجاله ثقات مجمع الزوائد ٤٨٥/١٠